

# विश्व-प्रसिद्ध अनसुलझे रहस्य

## World Famous Mysteries

लेखक अभय कुमार दुबे



पुस्तक महल
खारी बावली, दिल्ली-110006

प्रकाशक
पस्तक महल, दिल्ली-110006
सहयोगी सस्थान
हिन्द पस्तक भण्डार दिल्ली-110006
बिक्री केन्द्र
1 - -- -- 6686 खारी बावली दिल्ली-110006 - - - - फोन 239314 2911979
2 - गली केदार नाथ चावडी बाजार दिल्ली-110006 - - -- -- फोन 265403
3 10-B नेता जी सभाष मार्ग नई दिल्ली-110002 - - फोन 268292 268293

प्रशासनिक कार्यालय
F-2/16 अन्सारी रोड दरियागज, नई दिल्ली-110002
फोन 276539 272783 272784



Vishva Prasiddha Ansulhe Rahasya—A K Dubey
Pustak Mahal Khari Baoli Delhi-110006

प्रथम सस्करण नवम्बर 1985
चौथा संस्करण जनवरी 1988

मूल्य 12/- रुपए
लाइब्रेरी सस्करण 24/

फोटो कम्पोजिंग विवेक फोटो कम्पोजिंग सर्विसेस F 2/16 अन्सारी रोड दरियागज नई दिल्ली 110002

Printed at Kay Kay Printers
150-D Kamla Nagar Delhi 110007

# प्रकाशकीय

पुस्तक महल की तो परपरा ही रही है एक से एक बढ़कर पुस्तके देने की और ऐसी-वैसी पुस्तकें नही—अछूते विषयो पर सारगर्भित प्रामाणिक पुस्तके और वे भी एकदम उचित दामों पर। पुस्तक महल हमेशा प्रकाशन के क्षेत्र मे प्रयोगवादी रहे हैं और कभी भी लकीर के फकीर नही बने हैं। लीक से हटकर चलने की इसी प्रवृत्ति के कारण हमने हिन्दी में हमशा इस तरह की पुस्तकें छापी हैं, जिनका अभी तक प्राय हिन्दी मे अभाव रहा है। हमारा दृढ़ विश्वास रहा है कि कठिन से कठिन विषय को सरल से सरल एव सुबोध भाषा मे लिखवाकर व्यर्थ की ओढ़ी हुई भाषागत बोझिलता से बचाया जा सकता है। यही कारण है कि हमारे पाठको को हमारी पुस्तको मे ज्ञान और रोचकता का सुरुचिपूर्ण सगम मिलता है।

'विश्व-प्रसिद्ध शृखला' में हमारी यह तीसरी पुस्तक 'विश्व-प्रसिद्ध अनसुलझ रहस्य' आपके हाथो मे है। इससे पूर्व इसी शृखला की 'विश्व-प्रसिद्ध खोजे' तथा 'विश्व-प्रसिद्ध रोमाचक कारनामे' आपके द्वारा पढ़ी और सराही जा चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक द्वारा हम आपका साक्षात्कार ऐसे अनसुलझे रहस्यो से करा रहे हैं, जो आप जैसे विज्ञ पाठक को भी सिर खुजलाने के लिए विवश कर देगे।

प्रकृति और मनुष्य से अधिक रहस्यमय कुछ नही है। कभी-कभी इन दोनो के सयोग से कुछ ऐसे रहस्यों की सृष्टि हो जाती है, जिन्हे समझ पाना स्वय मनुष्य के लिए असभव हो जाता है। कुछ ऐसी पहेलिया बन जाती हैं, जिन्हे सुलझाने मे बडे-बडे दिग्गजो के दात खट्टे हो जाते हैं। हालांकि मनुष्य आज अतरिक्ष को भेदकर ग्रह-नक्षत्रो की गलियो में खम ठोकता हुआ घूम रहा है लेकिन स्वय उसकी धरती पर ही कितने ही ऐसे अनसुलझे रहस्य हैं, जिन्हे सुलझाने में उस सभवत सदिया लग जाए और बहुत सभव है कि वे कभी सुलझे ही नही। भूतकाल को समझने की रेडियो कार्बन डेटिंग जैसी समुन्नत विधिया ज्ञात हो जाने के बावजूद भी मनुष्य आज तक भी अतीत की सभी कड़ियो को एक साथ जोड नही पाया है।

प्रस्तुत सकलन में 25 ऐसे ही दुरूहतम अनसुलझे रहस्यो की कथाए काफी चेष्टा और दौड-भाग करके हमने अपने पाठकों के लिए दुर्लभ चित्रो सहित जुटाई हैं, जो एक तरफ जहा उन्हे रोमांचित करेंगी, वही दूसरी ओर बुद्धि के घोडे दौडाने के लिए काफी मसाला भी प्रदान करेंगी। एक कथा दूसरी से बढ़कर है—प्रमाण चाहिए तो पन्ने पलटिए

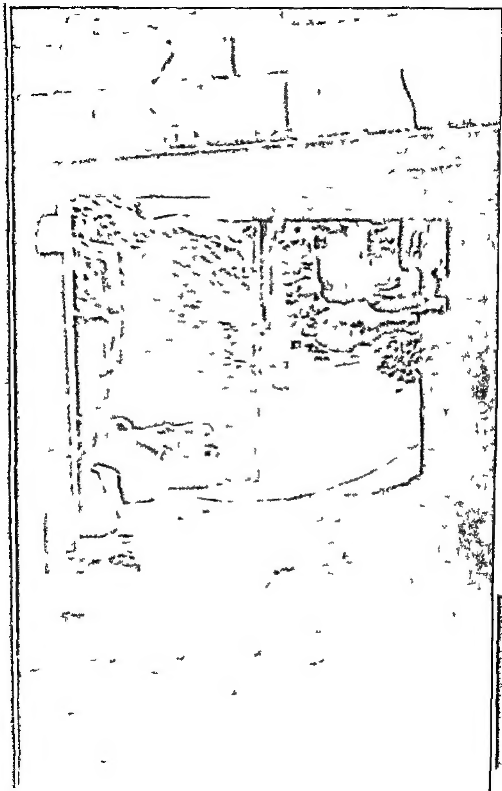
—प्रकाशक

# रहस्यक्रम









# अटलांटिस द्वीप का रहस्य

*क्या कभी अटलांटिक महासागर के मध्य में एक विशाल और विकसित सभ्यता फली-फूली थी? यूनानी दार्शनिक प्लेटो द्वारा किए गए वर्णन से ऐसा लगता है कि अटलांटिस की सभ्यता उस युग की एक सर्वश्रेष्ठ और शक्तिशाली व्यवस्था थी, जिसकी स्वर्ग से तुलना करना अतिशयोक्ति न होगी। तभी अचानक एक ज्वालामुखी फटा। ऐसा लगा कि जैसे आसमान से मौत की बारिश हुई हो और अटलांटिस द्वीप महासागर की गहराइयों में विलीन हो गया।*

*आखिरकार अटलांटिसवासियों को किस अपराध की सजा भुगतनी पड़ी थी? क्या यूनान में पुरातात्विक खुदाई में निकला शहर आक्रोतिरी ही अटलांटिस का खोया हुआ शहर है? क्या प्लेटो द्वारा किया गया वर्णन सिर्फ एक कहानी ही है?*

*इन्हीं रहस्यों के ताने-बाने में लिपटा है इस लुप्त सभ्यता का खोया हुआ अस्तित्व। दुनिया भर के भूगर्भशास्त्री ज्वालामुखी विशेषज्ञ तथा पुरातत्वशास्त्री निरंतर इस रहस्य पर से पर्दा उठाने के लिए प्रयत्नशील हैं।*

---

साढ़े तीन हजार साल पहले की एक शाम। अटलांटिस द्वीप पर बसा हुआ नगर हमेशा की तरह दिन भर का काम-काज समाप्त करके रात बिताने की तैयारियां कर रहा था। नगर की पतली गलियां हंसते और आपस में बातें करते नागरिकों से भरने लगी थीं। औरतें अपने घरों के दरवाजों पर बैठी गप्पें मार रही थीं। वातावरण शांत था और मौसम का मिजाज भी अनुकूल ही था। अचानक पूरे नगर को एक विचित्र तरह की गर्मी ने अपनी लपेट में ले लिया। द्वीप के आस-पास का समुद्र सीसे के रंग का हो गया और धरती की गहराइयों से थरथराहट की दबी-दबी आवाजें आने लगीं। पहले ये आवाजें रुक-रुक कर आईं फिर लगातार सुनाई देने लगीं। द्वीप निवासी घबरा गए। उन्हें डर था कि उनके द्वीप का 5000 फुट ऊंचा ज्वालामुखी फट पड़ने को है। उन्हें लगा कि धरती हिला देने वाली ताकतों का मालिक उनका देवता लम्बी निद्रा से जागने वाला है।

इतना समझने के बाद भी अटलांटिस द्वीप के वासी यह नहीं समझ पाए कि पृथ्वी के गर्भ से आने वाली ये आवाजें उनके द्वीप, उनके नगर और उनकी समूची सभ्यता के विनाश की आहटें हैं। यही हुआ। पहले दम घोंट देने वाला गहरा धुआं उठा, फिर सुलगते हुए पत्थरों की वर्षा हुई और इसके बाद चारों तरफ आग उड़ने लगी। ज्वालामुखी का गर्भ अचानक दबाव से फट गया। वह लाखों टन की ठोस-चट्टानों

यूनानी दार्शनिक प्लेटो जिनकी वार्ताओं में अटलांटिस का प्रामाणिक वृत्तांत मिलता है।



की वर्षा करता हुआ अपनी ही जगह पर धस गया, जिसकी वजह से एक 37 मील लम्बा-चौड़ा गड्ढा बन गया। इस गड्ढे को भरने के लिए समुद्र की लहरें चारों ओर से टूट पड़ीं

आज के वैज्ञानिकों व ज्वालामुखी विशेषज्ञों का अनुमान है कि 500 से 1000 परमाणु बमों की ताकत के बराबर विस्फोट क्षमता से वह ज्वालमुखी फटा होगा। काली राख की वर्षा के कारण उस समुद्र के आकाश पर कई सप्ताह तक रात जैसा अंधेरा बना रहा। उस राख के अवशेष आज भी बचे-खुचे द्वीप पर देखे जा सकते हैं। इस बचे हुए द्वीप को प्राचीन समय में यूनानियों ने केलिस्ट (Kelliste) का नाम दिया था।

अटलांटिस द्वीप के ऐतिहासिकता का केवल एक ही सर्वमान्य प्रमाण उपलब्ध है। यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने अपने शिष्यों के साथ बातचीत में इस द्वीप, उसकी सभ्यता व उसके विनाश के कारणों का विस्तृत उल्लेख किया है।

प्लेटो के अनुसार अटलांटिस का नगर तरह-तरह की कीमती वस्तुओं, विभिन्न प्रकार के जानवरों और सर्वाधिक ताँबे की मिश्र धातु व अन्य खनिज पदार्थों से भरा पूरा था। पूरा शहर 5 खण्डों में बंटा हुआ था, जो वृत्ताकार रूप से व्यवस्थित थे। इसके विभिन्न बंदरगाह नहरों द्वारा जुड़े हुए थे। शहर के बीच में एक विशाल महल व मंदिर था। इन दोनों के शीर्ष सोने व चांदी से मढ़े हुए थे। सोने के बने हुए सात परोंदार घोड़ों के रथ पर सवार इस शहर का देवता पोसीडान मंदिर में स्थापित था। भूकम्प के इस देवता की पूरे नगर में पूजा की जाती थी।

प्लेटो के वर्णन में आगे बताया गया है कि हर विकसित सभ्यता की तरह अटलांटिस के पतन के दिन भी आए और वहां के निवासी साम्राज्य, शक्ति और धन-धान्य की पूजा करने लगे। अटलांटिस की फौज आक्रमण और युद्ध के अभियान पर निकल पड़ी। उन्होंने भूमध्य सागर की तटवर्ती बस्तियों के निवासियों को अपना गुलाम बना लिया लेकिन एथेंसवासियों के सामने उनकी एक न चली। एथेंस की फौज ने

अटलांटिस की फोजो को हरा कर भगा दिया परतु अटलांटिस के नैतिक पतन का दण्ड अभी अधूरा था। इसके बाद भीषण भूकम्पो और बाढो ने एक ही रात मे अटलांटिस को अपने आगोश म लेकर तबाह कर दिया।

प्लेटो के अनुसार 12 हजार साल पहले जिब्राल्टर के जलडमरूमध्य के आस-पास अटलांटिस का अस्तित्व था। यही से शुरू होती ह अटलांटिस की लुप्त सभ्यता के रहस्य की कहानी। प्लेटो की बातचीत मे अटलांटिस की कहानी मुख्य रूप से उनके भतीजे क्रिटियास (Critias) द्वारा सुनाइ गइ थी, जिसके बारे मे स्वय प्लेटो के गुरू सुकरात ने कहा था ' यह एक तथ्य हे न कि केवल कहानी"। क्रिटियास का यह भी दावा था कि उसने यह कहानी अपने परबाबा ड्रोपिडस (Dropides) से सुनी थी और ड्रोपिडस ने इसे यूनानी इतिहास म अपनी इमानदारी के लिए प्रसिद्ध सोलन (Solan) से सुना था। सोलन को सबसे विख्यात विधि-निर्माता तथा यूनान के सात महान् सतो मे सबसे अधिक बुद्धिमान माना जाता था। सोलन 640 इसा पूर्व से लेकर 558 ईसा पूर्व तक जीवित रहा। इसके दो सो वर्ष बाद प्लेटो ने यह कहानी लिखी।

सोलन का कहना था कि उसने यह कहानी ईसा स 590 वर्ष पूर्व मिस्र के एक पुजारी से सुनी थी। सोलन ने इस महान् कहानी से प्रभावित होकर इसका अनुवाद यूनानी भाषा की कविता मे कर डाला। इससे लगता है कि यूनानियो से पहले मिस्रियो को भी अटलांटिस के अस्तित्व का ज्ञान था।

प्लेटो द्वारा किया गया वर्णन ऐतिहासिक कम दार्शनिक अधिक है। वह एथेस के वैभव और गरिमा से अधिक प्रभावित जान पडता है। अटलांटिस का अस्तित्व उस समय ओर भी रहस्यपूर्ण हो गया जब प्लेटो के शिष्य अरस्तु (Aristotle) ने इस मात्र काव्यात्मक कथा ही माना परतु इसा से 300 वर्ष पूर्व प्लेटो के प्रथम व्याख्याता क्रेण्टर (Crantor) ने अटलांटिस के वर्णन को तथ्यात्मक करार दिया। कहा जाता है कि क्रेण्टर के कुछ शताब्दी बाद दार्शनिक पासीडोनियस (Posidonius) (135–50 ईसा पूर्व) ने प्लेटो के वर्णन को केवल एक कथा मात्र मानने से इकार कर दिया। इस तरह पूरी 23 शताब्दियो से आज तक अटलांटिस का रहस्य इसी तरह के विवादो म घिरा रहा है। अटलांटिस के बार मे धामिक पुजारियो, काले जादू के विशेषज्ञो तथा अफवाहबाजो ने तरह-तरह की कहानिया गढ़ ली। किसी ने कहा कि अटलांटिस के पेडो मे सोने के फल लगते थे तो किसी ने कहा कि वहा की नहरो से दूध और शहद बहता था।

प्लेटो को विश्वास था अटलांटिस (Atlantis) द्वीप अटलांटिक (Atlantic) के बीच मे ही था। प्लेटो का समर्थन करने वाले आधुनिक विद्वानो का मत है कि अजोरस (Azores) केप वेर्डे आइलैण्ड (Cape Verde Islands) केनरीज (Canaries) तथा मेडीरा (Madeira) की चोटिया अटलांटिस द्वीप की ही थी, जो एशिया और अफ्रीका के सयुक्त क्षेत्रफल से भी बडा था।

15वी शताब्दी के यूरापीय अन्वेषकों ने कल्पना के आधार पर ही अटलांटिस को अपन नक्शा म शामिल कर लिया। हर नई खोज को अटलांटिस के रूप मे देखने की आदत बन गइ। अमरिका की खोज होते ही कुछ समय के लिए मान लिया गया कि अटलांटिम की खोज हा गइ है। अटलाटिस मे लोगो की दिलचस्पी इतनी बडी कि 19वी शताब्दी तक अटलाटोलोजी (Atlantology) नामक विज्ञान की शाखा की स्थापना क दाव किए जाने लगे। इस विज्ञान के सबसे प्रमुख अध्येता थे इग्नशियस डोनली (Ignatius Donnelly) नामक अमेरिकी राजनीतिज्ञ जो अमरिकी काग्रस के सदस्य भी थे। सन् 1882 मे डोनेली ने अटलाटिस द एण्टेडिल्यूवियन वल्ड (Atlantis The Antediluvian World) नामक पुस्तक लिखी जो रातो-रात 'बेस्ट-सैलर बन गई।

डानेली न अपना सिद्धात अमरिका की कोलम्बस पूर्व सभ्यता तथा प्राचीन मिस्र सस्कृति क बीच कुछ समानताआ के आधार पर गढ़ा। पिरामिडो के निर्माण, ममी बनाने क कला 365 दिन के कलेण्डर तथा बाढो की परम्परा को देखते हुए डोनेली न साबित किया कि उक्त दोना मभ्यताए अटलांटिस की ही देन थी। अटलांटिस के नष्ट हो जान के बाद उसके पूर्व और पश्चिम मे अलग-अलग सभ्यताओ ने जन्म-ल लिया। डानली न अपनी सामग्री पुरातत्व, मिथक, भाषा भूविज्ञान, जतु व जीव विज्ञान स प्राप्त की। अपने आप को प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए डोनेली ने इन विज्ञाना स तर्क लकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रयोग करके उक्त सिद्धात का ताना-बाना बुन दिया। आज भी डानेली के बहुत से समर्थक मौजूद हैं।

परतु डानेली क सिद्धात का यह केन्द्रीय विश्वास कि अटलांटिस अटलांटिक महासागर के बीच म था, ठुकरा दिया गया है। आधुनिक सामुद्रिक शास्त्र के ज्ञाताआ न जाच करक पता लगाया है कि 3 करोड 60 लाख वर्ग मील की अटलांटिक महासागर की सतह पर अटलांटिस मे आए वणित भूकम्प का कोई चिह्न नही मिलता। 12 500 मील लम्बी एक ज्वालामुखी पर्वत माला अवश्य महासागर म डूबी हुइ है लेकिन जहा यह पर्वत माला समुद्र से निकलती है, वहा अटलांटिस क डूबन की जगह बताई जाती है।

मन् 1912 म अमेरिका की एक सनसनीखेज पत्रकारिता ने अटलांटिस की कथा को पुन नया जीवन प्रदान किया। 20 अक्तूबर को विलियन रुडोल्फ हर्स्ट (Villian Rudolph Hearst) न 'न्यूयॉर्क अमेरिकन' नामक अपने पत्र मे एक मोटा शीर्षक प्रकाशित किया—'सभी सभ्यताआ के स्रोत अटलांटिस को मैंने कैसे खोजा?' (How I found the lost Atlantis the source of all civilizations)। इस खोज क लेखक का नाम था डा पाल श्लीमान (Dr Paul Schliemann) जिनक बारे म दावा किया गया था कि वे ट्रॉय के एक अन्वेषक के पात हैं। डा पाल का कहना था कि उनके बाबा ने ट्रॉय की खोज के दौरान ताबे का



बाइबिल की कहानी पर आधारित चित्र  हजरत मूसा को रास्ता देने वाले लाल सागर ने फराओ की सेना को नष्ट कर दिया।

एक विशाल घडा प्राप्त किया था, जिस पर खुदा था  'अटलाटिस के राजा क्रोनोस की ओर से उपहार'। इसके अलावा भी डा  पाल ने कई दावे किए लेकिन यह कहानी अतर्राष्ट्रीय स्तर पर मात्र एक सनसनी पैदा करके रह गई। सन् 1921 मे रसायन शास्त्र मे नोबल पुरस्कार जीतने वाले अग्रेज वैज्ञानिक फ्रेड्रिक सोडी (Fredrick Soddy) ने अटलांटिस के रहस्य को खोजने की असफल कोशिश की। एक जर्मन पुरातत्वीय पत्रकार सी  डब्ल्यू सेराम (C W Ceram) ने हाल ही मे इस विषय पर 20,000 ग्रथ लिखे जाने का आकडा पेश किया है।

एक अमेरिकन अतींद्रियदर्शी (Clairvoyant) तथा फोटोग्राफर एडगर सायके (Edgar Cayce) (1877-1945) ने 1923 से 1944 के बीच तमाम लोगो को हिप्नोटाइज करके अतींद्रिय दृष्टि से अटलांटिस सभ्यता के चित्र प्राप्त किए, जो प्लेटो के वर्णनों से मिलते-जुलते थे। यद्यपि सायके ने प्लेटो के वर्णन को नही पढ़ा था। सायके के अनुसार अटलांटिसवासियो ने अणुशक्ति को अपने वश में कर लिया था, जो ईसा से 10,000 वर्ष पूर्व विस्फोट का शिकार हो गई। सायके का इशारा था कि वर्तमान स रा  अमेरिका ही अटलांटिस है क्योंकि वह मैक्सिको की खाडी तथा जिब्राल्टर के जलडमरुमध्य के बीच स्थित था।

सन् 1968 मे बहामा मे डा  मेसन वेलेटाइन (Dr  Manson Valentine) ने बहामा के जल की गहराइयो मे गाता लगा कर कई मील तक फैली हुई विचित्र सरचनाए देखी। सन् 1968 मे उन्होने ही नार्थ बिमिनी (North Bimini) के छोटे से द्वीप के पानी मे कई सौ गज लम्बी देत्याकार दीवार देखी। 16 वर्ग फुट के पत्थरो

15वी शताब्दी के यूरोपीय अन्वेपकों ने कल्पना के आधार पर ही अटलांटिस को अपन नक्शो मे शामिल कर लिया। हर नई खोज को अटलांटिस के रूप मे देखने की आदत बन गई। अमेरिका की खोज होते ही कुछ समय के लिए मान लिया गया कि अटलाटिस की खोज हा गई है। अटलाटिस मे लोगो की दिलचस्पी इतनी बडी कि 19वी शताब्दी तक अटलाटोलोजी (Atlantology) नामक विज्ञान की शाखा की स्थापना के दावे किए जाने लगे। इस विज्ञान के सबसे प्रमुख अध्येता थे इग्नशियस डोनेली (Ignatius Donnelly) नामक अमेरिकी राजनीतिज्ञ जो अमरिकी काग्रेस के सदस्य भी थे। सन् 1882 मे डोनेली ने अटलाटिस द एण्टेडिल्यूवियन वर्ल्ड (Atlantis The Antediluvian World) नामक पुस्तक लिखी जो रातो-रात 'बेस्ट-सैलर बन गई।

डोनली ने अपना सिद्धात अमेरिका की कालम्बस पूर्व सभ्यता तथा प्राचीन मिस्र सस्कृति के बीच कुछ समानताआ के आधार पर गढ़ा। पिरामिडो के निर्माण, ममी बनाने के कला, 365 दिन के कलैण्डर तथा बाढ़ो की परम्परा को देखते हुए डोनेली ने साबित किया कि उक्त दोनो सभ्यताए अटलांटिस की ही देन थी। अटलांटिस के नष्ट हा जाने क बाद उसके पूर्व ओर पश्चिम मे अलग-अलग सभ्यताओ ने जन्म-ले लिया। डोनेली न अपनी सामग्री पुरातत्व, मिथक, भाषा भूविज्ञान, जतु व जीव विज्ञान से प्राप्त की। अपने आप को प्रामाणिक सिद्ध करने क लिए डोनेली ने इन विज्ञानो से तर्क लेकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रयोग करके उक्त सिद्धात का ताना-बाना बुन दिया। आज भी डोनेली के बहुत से समर्थक मौजूद हैं।

परतु डोनेली क सिद्धात का यह कन्द्रीय विश्वास कि अटलांटिस अटलांटिक महासागर के बीच म था, ठुकरा दिया गया है। आधुनिक सामुद्रिक शास्त्र के ज्ञाताओ न जाच करके पता लगाया है कि 3 करोड 60 लाख वर्ग मील की अटलाटिक महासागर की सतह पर अटलांटिस मे आए वर्णित भूकम्प का कोई चिह्न नही मिलता। 12,500 मील लम्बी एक ज्वालामुखी पर्वत माला अवश्य महासागर म डूबी हुई है लेकिन जहा यह पर्वत माला समुद्र से निकलती है, वहा अटलांटिस क डूबन की जगह बताई जाती है।

मन् 1912 म अमेरिका की एक सनसनीखेज पत्रकारिता ने अटलांटिस की कथा को पुन नया जीवन प्रदान किया। 20 अक्तूबर को विलियन रुडोल्फ हर्स्ट (Villian Rudolph Hearst) न 'न्यूर्योर्क अमेरिकन' नामक अपने पत्र मे एक मोटा शीर्षक प्रकाशित किया—'सभी सभ्यताओ के स्रोत अटलांटिस को मैंने कैसे खोजा?' (How I found the lost Atlantis the source of all civilizations)। इस खोज के लेखक का नाम था डा पाल श्लीमान (Dr Paul Schliemann) जिनके बारे म दावा किया गया था कि वे ट्रॉय के एक अन्वेषक के पोते हैं। डा पाल का कहना था कि उनके बाबा ने ट्रॉय की खोज के दौरान ताबे का



बाइबिल की कहानी पर आधारित चित्र  हजरत मूसा को रास्ता देने वाले लाल सागर ने फराओ की सेना को नष्ट कर दिया।

एक विशाल घडा प्राप्त किया था, जिस पर खुदा था 'अटलांटिस के राजा क्रोनोस की ओर से उपहार'। इसके अलावा भी डा पाल ने कई दावे किए लेकिन यह कहानी अतर्राष्ट्रीय स्तर पर मात्र एक सनसनी पैदा करके रह गई। सन् 1921 मे रसायन शास्त्र मे नोबल पुरस्कार जीतने वाले अग्रेज वैज्ञानिक फ्रेड्रिक सोडी (Fredrick Soddy) ने अटलांटिस के रहस्य को खोजने की असफल कोशिश की। एक जर्मन पुरातत्वीय पत्रकार सी डब्ल्यू सेराम (C W Ceram) ने हाल ही मे इस विषय पर 20,000 ग्रथ लिखे जाने का आकडा पेश किया है।

एक अमेरिकन अतींद्रियदर्शी (Clairvoyant) तथा फोटोग्राफर एडगर सायके (Edgar Cayce) (1877-1945) ने 1923 से 1944 के बीच तमाम लोगो को हिप्नोटाइज करके अतींद्रिय दृष्टि से अटलांटिस सभ्यता के चित्र प्राप्त किए, जो प्लेटो के वर्णनो से मिलते-जुलते थे। यद्यपि सायके ने प्लेटो के वर्णन को नही पढ़ा था। सायके के अनुसार अटलांटिसवासियो ने अणुशक्ति को अपने वश मे कर लिया था, जो ईसा से 10,000 वर्ष पूर्व विस्फोट का शिकार हो गई। सायके का इशारा था कि वर्तमान स रा अमेरिका ही अटलांटिस है क्योंकि वह मैक्सिको की खाडी तथा जिब्राल्टर के जलडमरुमध्य के बीच स्थित था।

सन् 1968 मे बहामा मे डा मेसन वेलेंटाइन (Dr Manson Valentine) ने बहामा के जल की गहराइयो मे गोता लगा कर कई मील तक फैली हुई विचित्र सरचनाए देखी। सन् 1968 मे उन्होने ही नार्थ बिमिनी (North Bimini) के छोटे से द्वीप के पानी मे कई सौ गज लम्बी दैत्याकार दीवार देखी। 16 वर्ग फुट के पत्थरो

स बनी यह दीवार एक तरफ समकाण पर सीधी रखा म दा शाखाओ के रूप मे बनी हुइ थी। इस दीवार का सबध सीधे-सीधे अटलाटिस स जाड दिया गया।

सन् 1967 म प्रमुख पुरातत्वशास्त्री स्पाईरिडान मैरिनाटोस (Spyridon Marinatos) ने कैलिस्टे द्वीप के नीचे दवे सातोरीनी (Santorini) नामक प्राचीन नगर की खुदाइ शुरु की। इसमे 2 साल पहले अमरिकी वैज्ञानिक द्रागास्लाव निन्कोविच (Dragoslav Ninkovich) तथा बी सी हीजेन (B C Heezen) न सातारीनी पर आए 3,500 वष पुरान भूकम्प की जानकारी दी और उसकी तलना सन् 1883 क अगस्त म जावा व सुमात्रा म फटन वाल क्राकाटाआ ज्वालामुखी स की।

सातोरीनी पर फट ज्वालामुखी न क्राकाटाआ से 4 गुना अधिक विनाश किया था। इस द्वीप की खुदाई म जल हुए दात तथा कुछ हड्डिया मिली हैं।

सातारीनी क अलावा समुद्रो के नीच दबी हुइ सभ्यताआ तथा भूखण्डो के नीच छिपे हुए नगरा का अस्तित्व भी पुरातत्वशास्त्र क विकास के साथ उभरता जा रहा है। इनक साथ अटलाटिस की कहानी मे जरा भी समानता हाने पर तुरत दानो का सबध जोड दिया जाता है। भारत क दा महान् महाकाव्या 'रामायण' तथा महाभारत म भी इस तरह क वणन हैं जा अटलाटिस से मिलते-जुलते हैं।

लगता है कि वैज्ञानिक सभवत सातारीनी क खण्डहरा का ही अटलाटिस के साथ अतिम रूप से जाड दग। फिलहाल अटलाटिस की खोज जारी है। वह आज भी विश्व क अंतिम अनसुलझ रहस्यो म स एक बना हुआ है।

● ●

# क्या भूत.प्रेत व आत्माओ का अस्तित्व है?

*हैरी प्राइस नामक व्यक्ति ने पहली बार 40 वर्ष लगातार कोशिश करके भूतो और आत्माओ को गिरफ्तार करने की चेष्टा की थी। स्पिरिट फोटोग्राफरो ने आत्माओ के चित्र खींचकर भूतो के अस्तित्व को सिद्ध करने का अनथक प्रयास किया है। कनाडा के एक दल ने तो फिलिप्स नामक एक नकली भूत का ही निर्माण कर डाला।*

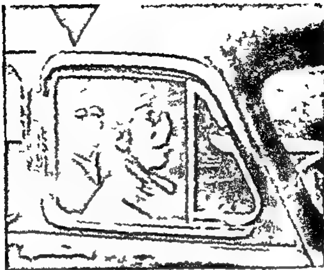
*इन सब प्रयासो के बाद भी आज तक भूतो-प्रेतो के अस्तित्व को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सका है। जब भी भूतो पर विश्वास करने वालो के कथनो की जाच की गई तो उसके पीछे या तो धोखाधडी निकली या कोई मानसिक रोग।*

*विज्ञान ने बार-बार इस तरह की धारणाओ का खण्डन किया है। फिर भी हर बार आम जनता के बीच इस तरह की घटनाए घटती रहती है, जो घुमा-फिराकर भूतो के अस्तित्व को सिद्ध करती हैं। ऐसा क्यो होता है?*

विश्व क प्रत्येक दश मे भूत और आत्माओ के देखे जाने अथवा उनसे मुलाकात की घटनाओ का सबध उस देश की मस्कृति तथा धार्मिक मिथको मे पाया गया है। भूत-प्रेत आर आत्माआ का अस्तित्व अधिकाशत दृष्टाता पर टिका हुआ हे। मस्तिष्क, शरीर, जीवन आर मृत्यु क सबध म विज्ञान द्वारा अनुत्तरित कइ प्रश्नो म से एक प्रश्न यह भी ह कि क्या वास्तव मे जीवित मनुष्य मृतको क भूत देखते हैं? क्या यह यथाथ मे सभव हे? क्या इस प्रश्न का तथ्यात्मक उत्तर खोजा जा सकता है?

मनोरोग विज्ञान (Psychiatry) विज्ञान की ऐसी शाखा है, जिसने इस समस्या के समाधान की चेष्टा की है। इसक अनुसार भूत-प्रेत और आत्माए विविध अचतन इच्छाओं, अपराध बोध तथा कल्पनाशक्ति की उपज होते हैं। दरअसल हम अपने अचेतन मस्तिष्क द्वारा सचेतन मस्तिष्क पर डाले जाने वाले प्रभाव से इतने प्रभावित होते है कि किसी अकेलेपन की शिकार विधवा को अपने मृत पति की छवि खिडकी मे दिखाई पड सकती है या परेशान व्यक्ति को सकटकाल मे अपने प्यारे मा-बाप का दुलार करता भूत दिखाई पड सकता है।

मनोराग विज्ञान की यह परिभाषा उस समय काम नही देती, जब ऐसे व्यक्तियो की ऐस भूता से मुलाकात होने की खबरे मिलती हैं, जिनका उनसे न पहले से परिचय होता है और न ही जिनका उनके जीवन मे कोई महत्व होता है। चर्च ऑफ इग्लैण्ड

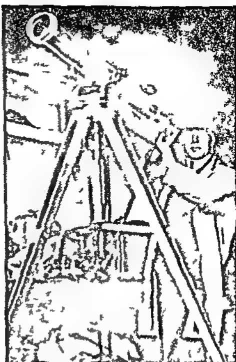


*इस चित्र को फोटोग्राफर ने अपनी मा की कब्र के पास खींचा था। चित्र में कार की पिछली सीट पर मा की आत्मा दिखाई पड रही है।*

के पादरी ज बी फिलिप्स (J B Phillips) ने सन् 1963 मे स्वर्गीय सी एस लेविस (C S Lewis) का भूत दो बार देखा तथा दोनो बार इस भूत ने उन्हे एक ऐसा सदेश दिया, जो उन्हे तत्कालीन सकट से उबार सकता था। लेविस से फिलिप्स की केवल एक बार भेट हुई थी। वे दोनो केवल पत्र-व्यवहार से ही परिचित थे। अमेरिकी लेखक नथेनिअल हौथोर्न (Nathaniel Hawthorne) के घर मे पादरी डा हैरिस (Dr Harris) का भूत आता था, जबकि दोनो एक दूसरे से ठीक से परिचित भी नही थे। हौथोर्न ने डा हैरिस के भूत को पुस्तकालय मे बैठकर शातिपूर्वक अध्ययनरत भी देखा लेकिन वे उससे बात करने का साहस नही जुटा पाए क्योकि उन्हे डर था कि आस-पास बैठे लोग उन्हे खाली कुर्सी से बात करते हुए देख कर हसेगे। जाहिर था कि भूत केवल उन्ही को दिखाई दे रहा था। इग्लैंड के अत्यत प्राचीन भवनो मे भूतो के रहने की खबरे अक्सर मिलती रहती हैं। सन् 1969 मे टाम कारबेट (Tom Corbett) के ब्रेडे स्थित पुराने घर की जाच करके यह सिद्ध करने की कोशिश की थी कि उस मकान मे दो पुरुषो व एक स्त्री के भूत रहते हैं। इन्ही दिनो 3 वर्षीय मार्गरेट शेरिडान (Margarate Sheridan) ने अपने पिता के फ्रेम्पटन (Frampton) नामक घर मे नाविक के कपडे पहने हुए एक बालक का भूत देखा था। इस तरह के भूत देखने या आत्माओ से मुकाबला होने की विश्वसनीय-सी प्रतीत होने वाली कहानिया समाचारपत्रो एव पुस्तको के पृष्ठो मे बिखरी पडी हैं।

सन् 1948 मे अपनी मृत्यु से पूर्व विख्यात 'गॉस्ट हण्टर (Ghost Hunter) हैरी प्राइस (Harry Price) ने भूतो का अस्तित्व तकनीकी और वैज्ञानिक तरीको से

भूतों के शिकारी हैरी प्राइस अपने आधुनिक यंत्रों के साथ।



साबित करने की चेष्टा की थी। सन् 1863 मे बने एक बोर्ले रेक्टरी (Borley Rectory) नामक पुराने ब्रिटिश घर मे रहने वाली एक नन, एक सिर कटे व्यक्ति, एक बग्घी तथा घोडे व पादरी रिवरेण्डबुल के भूतो को पकडने के लिए हेरी प्राइस ने स्टील का नपना टेप (जिससे दीवालो की मोटाई तथा गुप्त कमरो का रहस्य जाना जा सके), स्टिल फाटोग्राफी का एक कैमरा (जिससे इनडोर तथा आउटडोर फोटोग्राफी की जा सके), एक रिमोट कंट्रोल से चलने वाला मूवी कैमरा, उगलियो की छाप लेने वाला उपकरण तथा अन्य जाचकर्त्ताओ से तुरत सम्पर्क किए जाने के लिए एक पार्टेबिल टेलीफोन का प्रयाग किया। हेरी प्राइस ने 48 साथिया के साथ बार्ले रेक्टरी नामक इस घर मे भूता-प्रेतो के अस्तित्व को सिद्ध करन क लिए प्रयोगशाला बना डाली। प्राइस ने सन् 1940 मे अपनी पुस्तक 'द मास्ट हॉटिड हाउस इन इग्लैण्ड (इग्लैण्ड का सर्वाधिक भूत-ग्रस्त मकान) मे अपने प्रयोगा का निष्कर्ष प्रकाशित किया। प्राइस को आज भी उनकी 40 वर्षीय भूत साधना के लिए जाना जाता है। उनके आलोचको ने उनके ऊपर आरोप लगाया कि उन्होने मनगढत तथ्यो को सामने रखा है। उक्त मकान मे रहने वाले पादरी युगल स्मिथ द्वारा उनके मकान मे भूत होने की सूचना पर हैरी प्राइस ने उस मकान मे पहली बार डेरा जमाया था। स्मिथ की पत्नी ने प्राइस की मृत्यु के बाद कहा कि उन्हे या उनके पति को इस बात का कभी विश्वास नही था कि उनका घर भुतहा हो चुका है। सन् 1956 म तीन खोजकर्त्ताओ ने प्राइस के प्रयोगो की जाच करके तथा भुतहे घर से सबंधित व्यक्तियो से साक्षात्कार लेकर साबित कर दिया कि





कृत्रिम भूत फिलिप का रेखा चित्र और उसे प्लेनचेट पर बनाते उसके निर्माता।

प्राइस ने भूतों के सबूत यानी कई प्रकरण कृत्रिम तरीकों से जुटाए थे। बहरहाल हैरी प्राइस का प्रयास भूतों को आधुनिक तकनीक द्वारा सिद्ध करने का सबसे प्रसिद्ध प्रयास माना जाता है।

इस विषय से संबंधित दूसरी विवादास्पद परिघटना है स्पिरिट फोटोग्राफी (Spirit Photography) कैमरे से खींची गई किसी फिल्म में यदि धोने के बाद एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उभर आए जिसकी तस्वीर नहीं खींची गई थी उसे स्पिरिट फोटोग्राफी का नाम दिया जाता है। भूतों के पहले से ही विवादग्रस्त विषय में इस परिघटना ने और भी अधिक विवाद जोड़ दिए हैं। सन् 1860 में स्पिरिट फोटोग्राफी का जन्म हुआ। इस फोटोग्राफी के अधिकांश उदाहरण जालसाजी के परिणाम साबित हुए हैं। कई बार यह सिद्ध हो चुका है कि स्पिरिट फोटोग्राफर गुप्त लेंसों का डबलएक्सपोजर करके मृत मित्रों या संबंधियों की मुखाकृति से मिलते-जुलते चित्र बना देते हैं। इस संबंध में सबसे प्रामाणिक उदाहरण अब्राहम लिंकन की पत्नी मेरी टॉड लिंकन (Mary Tod Lincoln) का माना जाता है। विलियम मम्लर (Mumler) नामक स्पिरिट फोटोग्राफर ने जब उनकी तस्वीर

घुड़सवारों, समुद्र में डूब चुके जहाजों को फिर से दिखाई देने से संबंधित विचित्र घटनाओं की कहानियों पर आज तक काफी कुछ लिखा जा चुका है लेकिन भूतों का अस्तित्व अभी तक तथ्यात्मक रूप से प्रमाणित नहीं हो पाया है।

भूतों के अस्तित्व में विश्वास करने वालों का सबसे मजबूत तर्क यह है कि जिस तरह आग का अस्तित्व है उसी तरह भूतों का अस्तित्व भी है। आग न तो कोई तत्व है, न गति का नियम है न जीवित प्राणी है और न ही कोई बीमारी है फिर भी वह संक्रामक है। इसी तरह भूत भी है। यदि हम आग पर विश्वास कर सकते हैं तो भूत पर क्यों नहीं कर सकते?

● ●

# सोने की धरती की खोज

*हजारों साल से मानव सोने के पीछे पागल रहा है। इस पागलपन में 'एलडोराडो' अर्थात् 'सोने के राजा की धरती' की कथाओ मे और भी वृद्धि की है।*

*दक्षिणी अमेरिका के दुर्गम पहाडो व घने जगलो के बीच ही कहीं छिपी हुई है यह धरती जिस पर, दतकथाओ के अनुसार, सोना ककडों पत्थरों की तरह बिखरा पडा है। शताब्दियो से सोने की तलाश मे निकलने वाले दुस्साहसियो की एक ही तमन्ना रही है कि वे सोने की धरती को खोज सके।*

*सघन जगल के ऊपर चमकता हुआ सूर्य आज भी अन्वेषकों को बुला रहा है कि आओ, यहीं कहीं मेरी सुनहरी रोशनी की तरह ही सोने की धरती छिपी हुई है! आओ, उसे खोजो और अमर हो जाओ!*

*एलडोराडो के अस्तित्व का सबसे बडा प्रमाण है ठोस सोने का बना हुआ वह बजरा (नाव) जिस पर खडा हुआ सोने का राजा अपने शरीर पर सोने का बुरादा छिडक कर सूर्य को अर्घ्य देने के लिए पवित्र पहाडी झील में उतरने ही वाला है।*

---

सन् 1969 मे बोगोटा (दक्षिणी अमेरिका) क निकट एक गुफा मे फार्म पर काम करने वाले दो कर्मचारियो को सोने के एक बजरे (नाव) का एक मॉडल मिला। इस मॉडल पर एक राजा अपने सामतो सहित खडा हुआ है। पुरातत्वशास्त्रियो ने जैसे ही इस ठेस सोने से बने हुए बेडे को देखा, उनके मुह से निकल पडा—'एलडोराडो।' एलडाराडो अर्थात् सोने का आदमी। इसी सोने के आदमी के साथ जुडी हुई है सोने की उस धरती की खोज की कहानी, जहा पर अनुमान लगाया जाता है कि ककडो-पत्थरो की तरह ठोस और शुद्ध सोना मिलता है। बजरे पर खडा हुआ राजा स्नान करने की मुद्रा म है। उसके शरीर पर सोने का बुरादा छिडका जा चुका है। वह पवित्र पहाडी झील मे स्नान करके सूय देव को भेट चढ़ाएगा। यह है उस बजरे का वर्णन। ठीक ऐसा ही बजरा 19वी शताब्दी मे दक्षिणी अमेरिका की सीका झील की तली मे ब्रिटेन तथा स्पेन के उन दुस्साहसी यात्रियो ने प्राप्त किया था, जो पुराण कथाओ की तरह अवास्तविक लगने वाली सोने की धरती 'एलडोराडो' की खोज मे निकले थे। सोने की धरती तो न मिल सकी लेकिन 20वी शताब्दी के उत्तरार्ध मे बोगोटा की गुफा से मिला यह सोने का बजरा एक बार फिर पुकार-पुकार कर कह रहा था कि एलडोराडो केवल कपोल-कल्पना ही नही है, वरन् वह उसी धरती के गर्भ मे छिपा है, जिसे मात्र अभी तक दुनिया के सामने नही लाया जा सका है।



सोने के बेड़े पर सवार एल डोराडो अर्थात सोने का राजा। यह बगोटा के म्यूज़ियम में आज भी अच्छी तरह से रखा गया है।

शरीर पर सोने का बुरादा छिड़क कर झील में स्नान करने वाले राजा की कहानी पहली बार इन्का सभ्यता का विनाश करने वाले सेनापति तथा इक्वडोर की राजधानी क्विटो के संस्थापक बेनालकाज़ार (Sebastian de Belalcazar) को एक 'इण्डियन' आदिवासी ने सन् 1535 में सुनाई थी। इस कहानी को सुन कर बेनालकाज़ार ने उस रहस्यमय राजा का नाम 'एल डोराडो' रख दिया। बाद में यही 'एल डोराडो' सिमट कर एक शब्द 'एलडोराडो' में बदल गया। एलडोराडो की कहानी सोने की नगरी की खोज में अपनी जान गंवा देने वाले हजारों खोजकर्ताओं की जिद और असफलता की कहानी है।

सन् 1536 में 900 लोगों का दल लेकर सांता मार्ता (कोलम्बिया का उत्तरी तट) के अपने गवर्नर के आदेश से क्वेसेडा (Gonzalo Jimenez de Quesada) नामक खोजकर्ता ने दक्षिणी अमरीका का अनुसंधान प्रारम्भ किया। इसी के साथ साथ बेनालकाज़ार तथा निकोलस फीडरमन (Nicolaus Federmann) के दल भी इस तथ्य की खोज में निकले।

क्वेसेडा को सघन और भयानक जंगलों व मच्छरों से भरे हुए दलदलों का सामना करना पड़ा। मलेरिया के प्रकोप से तथा रास्ते की तकलीफों से क्वेसेडा के दल में केवल 2 सौ व्यक्ति रह गए लेकिन ठीक उस समय जब उसने लौटने की तैयारी कर

ली थी उसे लगा कि वह अपनी मंजिल के करीब आ पहुचा है। क्वसेडा के सामने थी उपजाऊ जमीन वाली चिब्का (Chibcha) की धरती जिसके एक गाव में सूर्य देवता का भव्य मंदिर दिखाई पड रहा था। उस धरती पर इन यात्रियों का नमक मिला जिसकी कीमत चिब्का के आदिवासियों की नजरों में सोने से भी अधिक थी। इण्डियनों की फौज को हराने के बाद स्पेनियों को पता चला कि वहा से कुछ दिन की दूरी पर गुआटाविटा झील (Guatavita Lake) है जिसमें सोने का राजा अपने शरीर पर सोने का बुरादा छिडक कर उतरा था। आदिवासियों ने अपने विजेताओं को यह अद्भुत कहानी विस्तार से सुनाई कि किस तरह एलडोराडो सोने के जेवर से लद कर तथा पूरे शरीर पर सोने का पाउडर छिडक कर गलमहदी के बने बजरे में बैठकर झील में उतरा। जैसे ही राजा ने पानी में डुबकी मारी सोने की धूल उसके शरीर से छूट कर पानी में घुल गई। उसी समय पुजारी तथा राजा के दरबारियों ने कीमती जेवरों को नदी में फेंका ताकि सूर्य देव को भेंट मिल सके।

एक आदिवासी गाइड को लेकर जब स्पेनी यात्री इस झील पर पहुचे तो उन्होंने देखा कि समुद्र तल से 9 हजार फुट ऊपर एक बुझे हुए ज्वालामुखी के गड्ढे की 9000 फुट चौड़ाई में बनी इस झील के आस-पास सोने के आदमी का नामो-निशान भी नहीं है। उन्होंने सोचा कि जरूर इस झील की तली में सोना है। इसी जगह क्वसेडा ने सांता फी डि बोगोटा की स्थापना की जो आजकल कोलम्बिया की राजधानी है।

9815



सोने के राजा द्वारा पवित्र झील में डुबकी लगाने से पहले की तैयारी का चित्र।

सन् 1539 तक साने की तलाश म भटकने के बाद क्वेसडा की मुलाकात बेलालजाकार तथा फीडरमन क दला स हुइ। य दाना दल भी तमाम कठिनाइया स जूझन क बाद असफल हा चुक थ। तीना न वागाटा म मुलाकात की आर क्वसडा न फीडरमन का 40 पोण्ड साना भट किया। फीडरमेन तथा बलालजाकार पुन इस प्रयास का दाहरान के लिए जीवित नही रह लकिन क्वसडा का अभी अपनी भूमिका का निवाह करना था।

सन् 1541 म फिलिप वॉन हटन (Phillip Von Hutten) नामक जर्मन क नतत्व मे एक और अभियान दल न माकाटाआ (Macatoa) नामक छाट स नगर तक पहुचने म सफलता प्राप्त की। इस नगर म आमगस (Omagues) नामक एक धनी कवीला रहता था। इस कवीले न हटन का अपने शहर म घुमने ही नही दिया और उस पर तीरा की भयकर वर्षा कर दी। फलस्वरूप मन म पुन आन की आशा सजोए हटन को लौटना पडा। परतु अपनी इन आशाआ का पूरा करन क लिए हटन जीवित नही बचा क्योकि एक राजकीय झगडे म उसका सिर काट लिया गया।

सन् 1541 म महान दुस्साहसिक फ्रांसिस्को पिजारो (Francisco Pizarro) क भाई गोजालो (Gonzalo) ने क्विटे से पुन अभियान शुरू किया। गाजाला क साथ 350 याद्धा तथा 4000 इण्डियन थे। उसका लक्ष्य था—साना ओर दालचीनी। थोडी दूर चल कर पिजारो के साथ फ्रांसिस्का डि आरिलाना (Francisco de Orellana) का दल भी आ मिला। धीरे-धीर दोना दला की रसद खत्म होने लगी। गर्म पानी की बरसात, भूख आर बुखार से अपने तीन-चौथाई दल को मत छोडकर गोजालो को क्विटो लौट आना पडा। उसका साथी ओरिलाना केवल कैरेबियन द्वीप समूह तक पानी के रास्त पहुच सका। दाना को ही न साने की धरती मिली और न ही दालचीनी। ओरिलाना को अपनी महान् यात्रा मे अमेजन नदी का क्षेत्र तलाश करने का श्रेय मिला। उसने लम्ब बाला वाली अमेजन औरते देखी जो पुरुषो से भी ज्यादा कुशलता से तीर चलाती थी।

सन् 1561 मे आरिलाना के रास्ते पर ही पेरु क वायसराय पेड्रा दि उर्सुआ (Pendro de Ursua) का दल रवाना हुआ। दुर्भाग्य स इस दल म आपस म ही झगडा हा गया। इस आपसी खूनखराबे मे 80 लोग मारे गए ओर यह दल ओरनिको नदी से होता हुआ वेनेजुएला तक ही पहुच सका।

उधर कोलम्बिया मे क्वेसाडा के दिमाग मे उस रहस्यमय झील का दश्य तेर रहा था। उसने एक बार फिर 2800 आदमियो के विशाल दल के साथ उसी झील की तरफ बढ़ना प्रारम्भ कर दिया। तीन साल तक झील की तलाश मे भटकने के बाद क्वेसडा वापिस लौट आया। लेकिन उसने अपनी असफलता की भारी कीमत चुकाई। 1300 योद्धाआ मे से केवल 64 1500 इण्डियन कुलिया म स केवल 4 1100 घोडो मे स केवल 18 घाडे ही बच पाए थे। 200 000 सोने के सिक्के इस वाले अभियान की भेट चढ़ गए।

इसके बाद आगामी 40 वर्षों तक कई अभियान दल दक्षिण अमेरिका की पहाडियो और जगलो की खाक छानते रहे। उन्होने सोने की धरती के लिए धन व्यय किया लेकिन उन्हे बदले मे मिली केवल असफलता और रास्ते की खाक।

सन् 1584 मे बेरियो (Antonio de Berio) नामक स्पेनी गवर्नर के नेतृत्व मे एलडोराडो खोजने के लिए तीन बार कोशिश की गई। बेरियो ने दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी इलाके की छानबीन की। तीसरे अभियान के दौरान सन् 1595 मे त्रिनिदाद मे बेरियो के दल को शराब के नशे मे डुबा कर सर वाल्टर रैले (Sir Walter Ralegh) नामक अग्रेज दुस्साहसिक यात्री ने सारी सूचनाए प्राप्त कर ली। रैले ने बाद म एक किताब लिखी, जिसमे उसने पारिमा झील का वर्णन किया है, जो बेरियो से मिली जानकारी पर आधारित थी। रेले ने स्वय अपनी आखो से पारिमा झील नही देखी थी। रैले को महारानी एलिजाबेथ की मृत्यु के बाद जेम्स प्रथम के क्रोध का निशाना बन कर प्राण त्यागने पडे।

इस बीच स्पेनी कवियो ने एलडोराडो की काल्पनिक भव्यता की तारीफ मे कविताए लिखना प्रारभ कर दी थी। एक ओर लोगो की कल्पनाओ मे सोने की धरती जगमगा रही थी, दूसरी ओर एलडोराडो तक पहुचने के सभी सभावित रास्ता पर यात्रियों, योद्धाओ, सेनापतियो व इण्डियनो का रक्त, मास और असफलता बिखरी पडी थी। ठोस और शुद्ध सोने की तलाश मे निकले लोगो को अभी तक केवल कुछ एक जवाहरात तथा थोडी-सी दालचीनी के साथ आदिवासियो से लूटे गए सोने की थोडी-सी मात्रा नसीब हुई थी।

एलडाराडा के लिए अतिम स्पेनी अभियान 18वी शताब्दी के अत मे हुआ। फूण्टे (Diez de la Fuente) के नेतृत्व मे यह अभियान दल तीन दिशाओ से एक साथ खोज के लिए निकला। तीन दलो मे से एक की कमान रोडालो के कब्जे मे थी। रोडाला को लगा कि यदि 20 दिन तक पानी मे या दो दिन तक पेदल चला जाए तो पारिमा झील तक पहुचा जा मकता ह। लेकिन तभी इण्डियनो की फोज ने उसके दल पर भयानक हमला कर दिया।

इस पूरे दोर मे एलडोराडो के साथ-साथ गुआटाविटा झील की तले मे अडे के बराबर पन्नो के माजूद होने की अफवाहे भी उडती रही। बोगोटा के इस रईस स्पैनी व्यापारी ने सन् 1580 मे सरकार से इजाजत लेकर इस झील की दीवार मे दरार बना दी और झील के पानी का स्तर 15 फुट नीचे गिर गया। एक अडे के आकार का पन्ना व कई स्वण वस्तुए उस स्पैनी व्यापारी को मिली। तभी वह दरार भर गई और झील का पानी नीचे गिरना बद हो गया।

19 वी शताब्दी मे हुम्बोल्ट (Humboldt) तथा बोपलाण्ड (Boupland) ने, जो अपनी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के कारण पिछले खोजकर्त्ताओ से भिन्न थे, अपनी यात्रा द्वारा साबित किया कि पारिमा झील का रैले द्वारा किया गया वर्णन नितात काल्पनिक है। सन् 1912 मे 'कान्ट्रेक्टर्स' नामक अग्रेज कम्पनी ने 150,000 डालर

की लागत म आधुनिक पम्पा की मदद स उक्त झील का खाली करना शुरू किय लेकिन झील क तल म उनक हाथ बहुत थाडा माना लगा, जिसम झील खाली करन क व्यय का सावा अश भी नही वसूल हा सकता था।

इस तरह खत्म हइ एलडाराडा की अनवरत खाज, जिसका आर-छार रहस्य की वादिया म ही गम बना रहा। आधुनिक यग की जरूरता न मनष्य की निगाह तल प्लेटिनम हीग ब्राक्साइट व मगनीज जसी धातआ व खनिजा का खाजन की तरफ फर दी। सग्रहालय म रखा हआ वह सान का बडा अब भी आवाज दकर खाजकर्त्ताआ का बला रहा है। बड पर खडा हुआ सान का राजा पवित्र पहाडी झील म डुबकी लगान क लिए तयार खडा ह। दख अब कान-सा माहसी अन्वषक एलडाराडा क रहम्य म डुबकी लगान क लिए तयार हाता ह।

● ●

# ओल्मेक   अमेरिकी सभ्यता के प्रवर्तक

*विश्व के अनसुलझे अंतिम रहस्यो मे से एक रहस्य [illegible] है। ओल्मेक लोग कौन थे? वे अचानक कहा गायब [illegible]*

*ओल्मेको को अमेरिकी सभ्यता का प्रथम प्रवर्तक [illegible] उनका अक्षरलेखन तथा कैलेण्डर बनाने की उनकी [illegible] को आश्चर्य म डाल देती है। ओल्मेको के [illegible] पर उनका प्रभाव पड़ा। विद्वानो ने 'माया' [illegible] बारे मे जानकारी एकत्रित करने की काफी [illegible] प्रश्नो के सतोषजनक उत्तर नहीं मिल सके है।*

केवल एक शताब्दी पहले ही यह पता [illegible] ओल्मेक (Olmecs) लोगो की सभ्यता [illegible] उन्होने अक लेखन तथा कैलेण्डर [illegible] दिया था। ओल्मेक लोगो के बारे [illegible] पुरातत्वशास्त्र ने हमे अच्छी [illegible] ओल्मेक सभ्यता म सर्वा [illegible] पता चल जाए कि ओल्मेक [illegible] परिस्थितिया क्या थी तो [illegible] [illegible]



ओल्मेकों का एक रहस्यमय बुत यह किसी खगोलशास्त्री का चित्र है या किसी बंदर का।

अनुमान लगाया जाता है कि ईसा स 800 वर्ष पूर्व तथा 500 वर्ष तक ला वण्टा मेक्सिको म ओल्मेक सभ्यता का सबसे वडा धार्मिक वन्द्र रहा होगा। इनके अवशष वतात हैं कि कोलम्वस स पूर्व की अवधि म मैक्सिका म नगर निर्माण की क्ला का विकास हो रहा था। यहा पर छोटा सीढीदार पिरामिड पाया गया है। जिसक सामन एक चार बासल्ट के खम्भा पर एक चोकार छत्र बना हुआ हे। पास ही म दा समानातर टीलो की सीमा स घिरा हुआ अमरिका का सबस पहला गद खलन का पवित्र कोट निमित किया गया हे। यह पूरा स्मारक दखने म मनुष्य निमित ज्वालामुखी जेसा लगता हे। सम्भवत इस इलाके का मतका की कब्र बनाने क लिए प्रयाग किया जाता रहा होगा।

इन स्मारका क अदर नक्काशीदार चट्टाने अलकृत वदिया तथा बासाल्ट के विशालकाय चहर मिल हैं। इन चहरो की आकृतिया व भाव देखकर मानवविज्ञानी चक्कर खा गए हे। व इन चेहरा का किसी भी जानी-पहचानी नस्ल से जोडने म सफल नही हुए हैं।

एक मेक्सिकी ग्राम के चर्च के निकट हर पत्थर की एक एसी मूर्ति बरामद हुई है, जिसम एक कुआरी स्त्री एक वच्च को गाद मे लिए हुए लगती थी। वास्तव म यह 8वी शताब्दी ईसा पूर्व का एक आल्मेक शिल्प था, जिसम एक पुरुष वर्षा के दवता का हाथा म उठाए हुए है। इसी तरह की एक रहस्यमय मूर्ति बासाल्ट के एक खम्भ क रूप म पाई गई जिसम बदर की शक्ल का एक आदमी आकाश की ओर ताक रहा है। लाग आज भी अदाजा लगाते हैं कि यह व्यक्ति क्या तारा की पूजा करन वाला व्यक्ति था या यह काई ओल्मक खगालशास्त्री था? कुछ विशेषज्ञा का विचार हे कि वह मूर्ति किसी व्यक्ति की न हाकर एक बदर की ही मूर्ति है। ला वण्टा मे धरती के नीचे दबी हुई 8-8 इच लम्बी मूर्तियो का एक समूह मिल जाने मे आल्मेका के कर्मकाण्डो की थोडी-बहुत जानकारी होती है। अभी तक यह



ओल्मेकों का एक अन्य शिल्प। अन्य ओल्मेक बुतो की तरह इस बत का चेहरा सपाचट नहीं है। इस बत को आज पहलवान के नाम से जाना जाता है।

तय नही हो पाया है कि लाल पत्थर से बनी हुई व्यक्ति की मूर्ति क्या दशा रही हे। क्या वह व्यक्ति कोई पुजारी हे, जो सामन खडे भक्तो को उपदेश दे रहा है या वह कोइ अपराधी ह, जो मृत्युदण्ड की प्रतीक्षा कर रहा है। इतना तय है कि जिस अदाज से ये मूर्तिया खडी हुइ है, उससे साफ लगता है कि वे किसी नाटकीय दश्य का प्रतिनिधित्व करती हैं।

एक वासाल्ट की वेदी मे मुकुट पहने हुए व्यक्ति की मूर्ति बनी हुइ है जो अपन हाथ मे पकडी हुई रस्सी से एक केदी की कलाई बाधे हुए हे जिसे सभवत बलि दन क लिए ले जाया जा रहा है। देवताओ को बलि देने की यह प्रथा अज्टक (Aztecs) सभ्यता के युग तक जारी रही। यह वेदी भी ला वेण्टा के खण्डहरो की ही देन है।

5 इच बडे एक जेड पत्थर से बनी मूति 'रोता हुआ बच्चा' से ओल्मेक लागो की शिल्पगत प्रतिभा का अनुमान आसानी स लगाया जा सकता है।

ओल्मेक मूतिया अधिकाशत जेगुअर (Jaguar) देवता की मुखाकति से मल खाती हैं। 9 फुट ऊची राजा के शरीर की आकृति वाली एक नक्काशी को देखन से लगता है कि वह ओलमेको का कोई लडाकू राजा रहा होगा। उसके सामन हाथ जोडे हुए खडी हुई आकृतिया भी हैं। बासाल्ट के एक 18 टन भारी टुकड स बनाया गया दैत्याकार चेहरा इस बात का सबूत ह कि उस जैसी 14 अन्य मूर्तिया के लिए पत्थर 'पटरा-बेडो' द्वारा खानो मे नदियो के रास्ते लाए गए होगे। इससे पता चलता है कि ओल्मेक समाज एक शक्तिशाली, सक्षम तथा सगठित समाज होगा। इन विशालकाय चेहरों के बारे में अनुमान लगाया जाता है कि ये राजाओ के चहरे होगे लेकिन कुछ अन्य विद्वानो का विचार है कि ये चेहरे साढ़े तीन पौण्ड भारी की गेद से खेल जाने वाले खतरनाक खेल के पराजित खिलाडियो के चेहरे चेहरा के सिर पर बने हुए शिरस्त्राणो से एक हद तक इन अनुमाना की होती है।

मरध पत्थर क एक वृत का आज पहलवान (Wrestler) क नाम म जाना जाता ह। इस वत की विशेषता यह ह कि अन्य आलमक वृता की तरह यह विना दाढी मछ का व माट नाक-नक्श वाला नही हे। इसकी मुखाकृति तीखी ह तथा इसक चहर पर दाढी भी ह। यह चहरा बताता हे कि आलमक सभ्यता म मल्ल विद्या भी मौजद थी तथा मखाकृतिया म एकरसता न हाकर विभिन्नता भी ह।

इन मर्तिया म आल्मका क आध्यात्मिक ससार उनक रीति-रिवाजा तथा उनकी दर्निया का साराश ही पता लग पाया ह। बाद म 'मात्र सभ्यता की जानकारी म लागा न आल्मका क बार म लगाए जान वाल अनुमान म कछ आर वद्धि की लकिन अभी तक अमरिकी सभ्यता क इन प्रवतका की प्राचीन दुनिया विश्व क अनमलय अनिम रहस्या म स एक बनी हुइ ह।

• •

# शीवा की रानी कौन थी?

---

*बाइबिल के अनुसार शीबा की रानी इजराइल के राजा सालोमन की बुद्धिमानी और वैभव की खबरें सुन कर सोने जवाहरात तथा दुलभ मसालों के उपहार लेकर उसके पास आई थी।*

*इजराइल से वापिस जाने के बाद शीबा की रानी का इतिहास में कोई नामो निशान भी नहीं मिलता। क्या बाईबिल की कहानी को सत्य माना जा सकता है? शीबा की रानी कौन थी और उसका राज्य कहा था? क्या वह सोलोमन से विवाह करने की नीयत से आई थी? क्या इथियोपिया का हेले सिलासी नामक सम्राट सालोमन शीबा के पुत्र से चले वंश का था? क्या वह एक महिला न होकर कोई चुड़ैल थी?*

*पिछली 30 शताब्दियों से यह रहस्य लोगों के दिमाग को मथ रहा है। यदि उसका अस्तित्व था तो निश्चित रूप से उसका आगमन दक्षिण अरेबिया से हुआ होगा जहा के विस्तृत मैदानों में आज भी शीबा की प्राचीन राजधानी के अवशेष मिलते हैं।*

---

बाइबिल म राजाओ म प्रथम पुस्तक (First Book of Kings) के अंतगत 10वें अध्याय में शीबा की रानी की कहानी का इस प्रकार वणन है– ' और जब शीबा की रानी ने ईश्वर के नाम के साथ जुड़ी हुई सालामन की प्रसिद्धि के बारे में सुना तो वह अपने कठिन प्रश्नो द्वारा उसकी परीक्षा लेने यरुशलम आई। रानी के साथ उसका बहुत बड़ा काफिला था, जिसके ऊंटो पर दुलभ मसाले सोना तथा बहुमूल्य रत्न-जवाहरात लदे हुए थे।

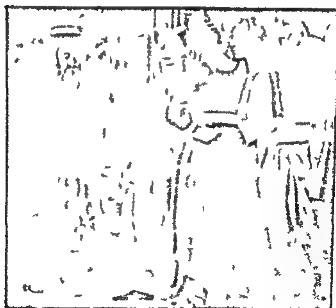
बादशाह सोलामन ने शीबा की रानी के प्रश्नो का तब तक उत्तर दिया जब तक वह पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो गई। शीबा ने उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की और उसे मसाले, सोना और रत्न भेटस्वरूप दिए। और वह अपने नौकरो के साथ अपने देश वापस चली गई।"

इसी कहानी को बाइबिल के सेकण्ड बुक ऑफ क्रॉनिकल्स (Second Book of Chronicles) मे थोडे से परिवर्तनो के साथ दोहराया गया है लेकिन बाइबिल में शीबा की रानी का नाम, शक्ल-सूरत, जाति व देश इत्यादि के बारे मे कुछ भी नही बताया गया है। सेण्टमैथ्यू के गॉस्पल (Gospel of St Mathew) में जीसस ने दक्षिण की रानी का हवाला देते हुए कहा कि वह, "पृथ्वी के सबसे दूरस्थ से सोलोमन की बुद्धिमानी को परखने के लिए आई"। बस, बाइबिल अपने

द्वारा शीबा की रानी के बारे में इतना ही अता-पता देती है और यहीं से जन्म लेती है 30 शताब्दियों से रहस्यमय बनी हुई उस औरत की कहानी, जिसे शीबा की रानी (Queen of Shiba) के नाम से जाना जाता है।

क्या बाईबिल को आधार मान कर किसी घटना की ऐतिहासिक सत्यता को प्रामाणिक माना जा सकता है? दरअसल राजाओं की प्रथम पुस्तक में ईसा से दसवीं शताब्दी पूर्व की 40 वर्षीय अवधि के स्वर्णकाल की कहानी है। इसी में सोलोमन के शासन की कथा भी शामिल है। अतः इस बात की पूरी संभावना है कि सोलोमन की मृत्यु के कुछ समय बाद ही यह कहानी लिखी गई हो। यह इसकी ऐतिहासिक सत्यता का निकटतम प्रमाण है।

बाईबिल के अनुसार जब शीबा की रानी इजराइल के राजा सोलोमन से मिलने आई तो वह परम प्रतापी राजा हो चुका था। उसकी फौजें इयुफ्रेट्स (Euphrates) से सिनाइ (Sinai) रेगिस्तान तक तथा लाल सागर से पामयारा (Palmyara) तक के मार्गों का नियंत्रण करती थीं। उस समय तक यरूशलम शहर तथा उसके मंदिर का निर्माण पूरा हो चुका था। रानी ने सोलोमन को जो उपहार दिए उनसे लगता है कि वह व्यापार के उद्देश्य से भूमध्यसागर के लिए इजराइल के बंदरगाहों का प्रयोग करना चाहती थी ताकि उसके देश से सोलोमन का वाणिज्यिक संबंध जुड़ सके। लेकिन यह सिर्फ अनुमान ही है।



मध्य युग का एक चित्र जिसमें सोलोमन व शीबा की रानी की भेंट होते हुए चित्रित है।

सालोमन डेविड के सबसे बड पुत्र तथा अपने मातेल भाइ एडोनीजाह (Adonijah) का वध करके इजराइल की गद्दी पर बैठा था। सोलोमन ने एशिया आर अफ्रीका क बीच म स्थित अपन दश की स्थिति का भरपूर फायदा उठाया। उसन 12,000 घुडसवारा तथा 1,400 लडाकू रथा म लम अपनी सना द्वारा पहले शाति स्थापित की ओर इजराइल क सभी कबीला पर अपना प्रभुत्व कायम किया तथा बाद म पडासी राज्या से मित्रता करनी शुरू की। सालामन न पडासी राज्या के राजाओ की पुत्रियों से विवाह किए। उसकी पहली पत्नी मिस्र क फराआ की बटी थी

फोनशियन (Phonenician) लागो की विकसित तकनीक की मदद लेकर सोलोमन ने विशाल नावो की मदद से व्यापार किया। लबनान की पहाडियों मे 10,000 दासा की मदद से लकडी कटवा कर तथा पत्थर उठवा कर यरुशलम के मदिर व शहर के निर्माण क लिए भेजे। उसक व्यापारिक पात सोना, चादी, सगमरमर व कीमती पशु-धन कमा कर लाए। अरब व पूव स आए काफिला पर कर लगा कर बहुत-सा धन वसूला गया। इस तरह प्रति वष कई-कइ टन की दर से सोना सोलोमन ने एकत्रित कर लिया। यह तमाम सोना यरुशलम मे जिहोवा (Jehovah) क महान् मदिर की दीवारो पर चढवा दिया गया। सोलोमन स्वय सोने से जडे हुए हाथीदात के बने सिहासन पर आसीन हाता था तथा उसक सभी बतन तथा पीन के पात्र भी साने के ही थे।

सोलामन के इस राजसी वभव की खबर उडते-उडते शीबा की रानी क पास भी पहुची। शीबा की रानी के चित्र ईसाई मध्ययुगीन तथा यारापीय पुनर्जागरण काल की चित्रकला म दिखाइ पडते ह। कभी रानी क रूप मे तो कभी जादूगरनी के रूप म इस रहस्यमय ओरत को दिखाया जाता हे।

13वी शताब्दी मे डामिनिसियन पादरी जोकोबस दि वोरागिन (Jacobus de voragine) द्वारा लिखित पुस्तक 'लीजेण्डा आरिया (Legenda Aurea) म भी शीबा की रानी की सोलोमन से मुलाकात का वणन मिलता है। 19वी शताब्दी म फ्रासीसी लेखक गुस्ताव फ्लाबर्ट (Gustave Flaubert) की रचना 'टम्परशन आँफ सेण्ट एथोनी' (Temptation of Saint Anthony) मे शीबा की रानी सत एथोनी को रेगिस्तान म वासना की देवी के रूप मे लुभाने के लिए आती ह। यह रचना सन् 1874 मे लिख कर तयार हा गइ थी। एक अन्य फ्रासीसी लखक जेरार्ड दि नर्वल (Gerard de Nerval) न इसी रानी को बाल्किस (Balkis) का नाम दिया ओर मध्य-पूर्व की यात्रा करन के बाद सन् 1851 मे 'वॉयज एन आरिएट (Voyage en Orient) मे 'सवह की रानी' के रूप म वर्णित किया।

मुसलमानो के धार्मिक ग्रथ पवित्र कुरान मे बताया गया ह कि सोलोमन के राजदरबार म शीबा की रानी को पत्रो के आदान-प्रदान के बाद बुलाया गया था। 'बुक ऑफ ईस्थर' (Book of Esther) जैसी यहूदी पुस्तक के एक 'तारगुम

द्वारा शीबा की रानी के बारे में इतना ही अता-पता देती है और यहीं से जन्म लेती है 30 शताब्दियों से रहस्यमय बनी हुई उस औरत की कहानी, जिसे शीबा की रानी (Queen of Shiba) के नाम से जाना जाता है।

क्या बाईबल को आधार मान कर किसी घटना की ऐतिहासिक सत्यता को प्रामाणिक माना जा सकता है? दरअसल राजाओं की प्रथम पुस्तक में ईसा से दसवीं शताब्दी पूर्व की 40 वर्षीय अवधि के स्वर्णकाल की कहानी है। इसी में सोलामन के शासन की कथा भी शामिल है। अतः इस बात की पूरी संभावना है कि सोलामन की मृत्यु से कुछ समय बाद ही यह कहानी लिखी गई हो। यह इसकी ऐतिहासिक सत्यता का निकटतम प्रमाण है।

बाईबल के अनुसार जब शीबा की रानी इजराइल के राजा सोलामन से मिलने आई तो वह परम प्रतापी राजा हो चुका था। उसकी फौजें इयुफ्रेट्स (Euphrates) से सिनाई (Sinai) रेगिस्तान तक तथा लाल सागर से पामयारा (Palmyara) तक के मार्गों का नियंत्रण करती थीं। उस समय तक यरुशलम शहर तथा उसके मंदिर का निर्माण पूरा हो चुका था। रानी ने सोलामन को जो उपहार दिए उनसे लगता है कि वह व्यापार के उद्देश्य से भूमध्यसागर के लिए इजराइल के बंदरगाहों का प्रयोग करना चाहती थी ताकि उसके देश से सोलामन का वाणिज्यिक संबंध जुड़ सकें लेकिन यह सिर्फ अनुमान ही है।



मध्य युग का एक चित्र जिसमें सोलामन व शीबा की रानी की भेंट होते हुए चित्रित है।

सालोमन डविड क सबसे वड पुत्र तथा अपने सातल भाइ एडानीजाह (Adonijah) का वध करक इजराइल की गद्दी पर वठा था। सोलामन न एशिया आर अफ्रीका के वीच मे स्थित अपन दश की स्थिति का भरपूर फायदा उठाया। उसने 12 000 घुडसवारो तथा 1 400 लडाकू रथो स लस अपनी सेना द्वारा पहले शाति स्थापित की आर इजराइल क सभी कबीला पर अपना प्रभुत्व कायम किया तथा वाद म पडोसी राज्या स मित्रता करनी शुरू की। सोलामन न पडोसी राज्यो क राजाओ की पुत्रिया स विवाह किए। उसकी पहली पत्नी मिस्र क फराओ की बेटी थी

फोनशियन (Phonenician) लोगो की विकसित तकनीक की मदद लेकर सालामन न विशाल नावा की मदद से व्यापार किया। लेवनान की पहाडिया मे 10,000 दासा की मदद से लकडी कटवा कर तथा पत्थर उठवा कर यरुशलम के मदिर व शहर के निर्माण क लिए भेजे। उसके व्यापारिक पोत सोना, चादी, सगमरमर व कीमती पशु-धन कमा कर लाए। अरव व पूव से आए काफिला पर कर लगा कर बहुत-सा धन वसूला गया। इस तरह प्रति वष कइ-कइ टन की दर स साना सोलोमन न एकत्रित कर लिया। यह तमाम सोना यरुशलम मे जिहावा (Jehovah) के महान् मदिर की दीवारो पर चढवा दिया गया। सोलोमन स्वय सान स जडे हुए हाथीदात के बने सिहासन पर आसीन होता था तथा उसके सभी बर्तन तथा पीने के पात्र भी सोने के ही थे।

सोलोमन के इस राजसी वेभव की खबर उडते-उडते शीबा की रानी के पास भी पहुची। शीबा की रानी के चित्र इसाई मध्ययुगीन तथा यारोपीय पुनजागरण काल की चित्रकला मे दिखाई पडते हे। कभी रानी क रूप मे तो कभी जादूगरनी के रूप म इस रहस्यमय औरत को दिखाया जाता हे।

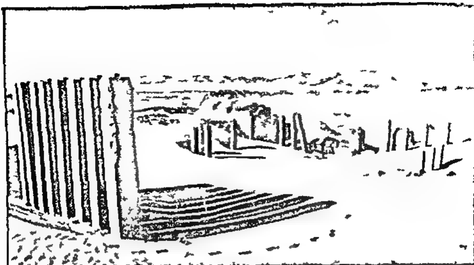
13वी शताब्दी मे डोर्मिनिसियन पादरी जोकोवस दि वोरागिन (Jacobus de voragine) द्वारा लिखित पुस्तक 'लीजेण्डा आरिया' (Legenda Aurea) म भी शीबा की रानी की सोलामन से मुलाकात का वर्णन मिलता हे। 19वी शताब्दी मे फ्रासीसी लेखक गुस्ताव फ्लोवट (Gustave Flaubert) की रचना 'टम्परशन ऑफ सेण्ट एथोनी' (Temptation of Saint Anthony) मे शीबा की रानी सत एथोनी को रेगिस्तान म वासना की दवी क रूप म लुभाने क लिए आती हे। यह रचना सन् 1874 मे लिख कर तयार हो गइ थी। एक अन्य फ्रासीसी लखक जरार्ड दि नर्वल (Gerard de Nerval) न इसी रानी को वाल्किस (Balkis) का नाम दिया और मध्य-पूर्व की यात्रा करन के वाद सन् 1851 म 'वॉयज एन आरिएट' (Voyage en Orient) मे सुवह की रानी के रूप मे वर्णित किया।

मुसलमानो के धार्मिक ग्रथ पवित्र कुरान मे वताया गया ह कि सोलोमन क राजदरवार मे शीबा की रानी को पत्रो के आदान-प्रदान के वाद वुलाया गया था। 'बुक ऑफ इस्थर' (Book of Esther) जैसी यहूदी पुस्तक के एक 'तारगुम

शनी (Targum Sheni) नामक अनवाद म बताया गया है कि शीवा की रानी सालामन स एस कमर म मिनी जिसका फश काच का था। रानी न समझा कि वहा पानी भरा हआ ह इसलिए उसन अपनी स्कट थाडी उपर उठा ली। जिसक कारण उसक पर दिखाइ पड गए जिन पर बाल उग हए थ। शीवा की रानी का असीरियायी (Assyrian) तथा बबीलानियन (Babylonian) किवदतिया म लागा का लभा नन वाली चडल क रूप म भी चित्रित किया जा चुका ह। इस तरह देखा जाए ता पता चलगा कि हजारा साल क मिथका लाककथाआ व साहित्यिक इतिहास म शीवा की रानी का रहस्यमय अस्तित्व कहीं न कहीं माजूद ही ह। मसलमाना की दतकथा क अनसार सालामन न शीवा की रानी स भी विवाह किया था। उसन रानी क रामयक्त शरीर म बाला का साफ करन की दवा का आविष्कार करवाया आर रानी का मसलमान बनाकर उसक साथ शादी कर ली। आधुनिक यग म यमन (Yaman) जान वाल पयटक मारिब की प्राचीन राजधानी शीबन (Ancient Sheban Capital of Marib) व चद्रमा क मदिर (Temple of the Moon) क खण्डहर जरूर दखत हैं। कहा जाता ह कि यही मदिर कभी बिल्कीस का महल था। बिल्कीस क नाम का प्रयाग शीवा की रानी क लिए ही किया जाता ह। 20वी शताब्दी पूव का रहस्य लागा का लभाता रहा ह। डब्ल्यू बी यीटस (W B Yeats) की कविताआ म शीवा की रानी क धर्म निरपक्ष (क्याकि उसका काइ धम नहीं था) तथा यान विषयक चरित्र का कन्द्र बनाया गया ह। अग्रजी क उपन्यासकार रूडयाड किपलिंग (Rudyard Kipling) की कहानी द बटरफ्लाइ दैट स्टम्प्ड (The Butterfly that stamped) म तथा जॉन डॉस पासास (John Dos Passos) क सन 1921 म प्रकाशित उपन्यास थ्री साल्जस (Three soldiers) म शीवा की रानी का वणन ह। सन् 1934 म युवा फ्रासीसी पत्रकार आद्र मालराक्स (Andre Malraux) न अपन परिस स्थित अखबार क कायालय म केबिल भजा कि दक्षिण अरबिया क रगिस्तान क उपर उडान भरत हुए उन्हा 20 मीनारा अथवा मदिरा का खड हुए दखा। मालराक्स न यह दश्य रूबल खाली (Rubal Khali) की उत्तरी सीमा पर दखा था लकिन उनके इस दाव की बाद मे पुष्टि नहीं हुई।

कुछ प्राचीन रचनाआ से पता चलता हे कि शीबा की राजधानी लाल सागर क किनार स्थित एक अरबी नगर म थी। जाहिर हे कि सालामन के बाद आने वाले पेगम्बर शीबा की राजधानी क बार म जानते रह हाग। 'बुक ऑफ इजीकील' (Book of Ezekiel) क अनुसार शीबा की राजधानी से मसाला, कीमती जवाहराता तथा सोने का व्यापार हाता था।

'शीबा' नाम का स्रात समिटिस (Semites) क पिता तथा नोह (Noeh) के पुत्र शेम (Shem) से मिलता हे। शीबा के 12 भाई थे। जिस तरह शीबा के दो भाइयो



मारिब के मंदिरों के खण्डहर जिनका संबंध शीबा की रानी से माना जाता है।

न आफिर (Ophir) तथा हाविला (Havila) की सभ्यताओं को अपने नाम दिए, उसी तरह शीबा ने भी अपनी राजधानी का नाम शीबा रख दिया। यह व्यक्ति और नगर के नाम के आपस में मिल जाने का मामला है। शीबा के भाइयों के नाम की सभ्यताएं भी रहस्य के अंधेरों में गुम हैं। उन्हें भी अभी नहीं खोजा जा सका है। शीबा के अन्य भाइयों के नाम भी अरब के लोगों ने अपना लिए। कई भूखण्डों का नाम उनके नाम पर रखा गया। शीबा के नगर व माइन (Ma'in) व कत्ताबान (Qataban) का नगर छटवीं ईस्वी तक आपस में मिला हुआ था।

इन चारों में शीबा का नगर सबसे बड़ा था, जिसे कुरान में 'दो बागों' के नाम से पुकारा गया है। इन बागों का एक बड़े बांध द्वारा पानी मिलता था। व्यापार शीबा के नगर की सम्पत्ति का मुख्य स्रोत था। ईसा से 1 शताब्दी पूर्व के इतिहासकार डियोडोरस सिकुलस (Diodorus Siculus) ने इस राजधानी के धन-धान्य का वर्णन किया है। शीबा के अरबवासियों को फरवरी से अगस्त तक चलने वाली मानसूनों का रहस्य ज्ञात था, जिससे उनके व्यापारिक जहाजों को प्राकृतिक मार्गदर्शन मिल जाया करता था। बाद में यूनानियों ने भी पहली ईस्वी में इस रहस्य का पता लगा लिया। शीबा ने पानी व जमीन के रास्ते अफ्रीका व रोमन साम्राज्य से भी व्यापार किया। शीबा के माल की चारों ओर मांग थी क्योंकि मसाला को औषधि व सौंदर्य प्रसाधन बनाने में प्रयोग किया जाता था।

शीबा के वासी सूर्य, चंद्रमा व शुक्र की पूजा करते थे। शुक्र को वे अश्तर (Ashtar) के नाम से पुकारते थे, जो सिडोन (Sidon) त्येर (Tyre) व बेबीलोन (Babylon) में शुक्र के लिए प्रयुक्त नाम से मिलता-जुलता था। उनकी शासन

व्यवस्था सुमेरियायी (Sumerian) व्यवस्था से मिलती-जुलती थी अर्थात वहाँ से प्रमुख पुजारी व राजा एक ही व्यक्ति हुआ करता था।

शीबा के निवासी चारों ओर से रेगिस्तान से घिरे होने के कारण सुरक्षित थे। ईसा से 24 25 शताब्दी पूर्व रोमन सेनापति एलियस गालस (Aelius Gallus) के नेतृत्व में हमला करने आई फौज रेगिस्तान की गर्मी और प्यास से ही पराजित हो गई। इसके 4 सौ साल बाद ही शीबा पर कोई विदेशी ताकत अपना हमला कर पाई।

शीबा का उल्लेख सभी शास्त्रीय इतिहासकारों ने किया है। हेरोडोटस (Herodotus) स्ट्राबो (Strabo) प्लिनी (Pliny) व एल्डर (Elder) द्वारा किया गया वर्णन तथा मारिब के खण्डहर व शिलालेख जो यमन में पाए गए पुरातात्त्विक सामग्री उसके अस्तित्व का प्रमाण है।

शीबा की रानी ने ईसा से 10वीं शताब्दी में यरूशलम की यात्रा की। 543 ईस्वी में शीबा का दैत्याकार बाँध ढह गया। कुरान में इस बाँध के ढहने को ईश्वर के प्रकोप की संज्ञा दी गई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि सिंचाई की व्यवस्था नष्ट हो जाने के कारण शीबा की अर्थव्यवस्था का पतन हो गया तथा उसके निवासी घुमक्कड़ कबीलों में बँट गए। इथियोपिया के अंतिम सम्राट हेल सिलासी (Haile Selassie) का दावा था कि वे सोलोमन और शीबा के पुत्र मेनेलिक (Menolik) के वंशज हैं।

यमन के लोग हजरत मुहम्मद द्वारा शीबा के नगर को अग्निपूजकों का नगर कह कर निंदा करने के कारण घृणा की दृष्टि से देखते रहे हैं। इसलिए उन्होंने 1843 में फ्रांस के थॉमस जोसफ आर्नाॅड (Thomas Joseph Arnaud) पर जादूगर होने का आरोप लगाया क्योंकि वे प्राचीन शिलालेखों को एकत्रित करने मारिब गए थे। मिस्री पुरातत्वशास्त्री अहमद फाखरी (Ahmad Fakhri) को सन 1947 में ऐसी ही कोशिशों के बदले काफी अपमान का सामना करना पड़ा। सन 1934 में रेगिस्तान पर उड़ान भरने वाले मालरो के विमान पर गोली चलाई गई। सन 1952-53 में वेण्डल फिलिप्स (Wendell Phillips) तथा डब्ल्यू पी अल्ब्राइट (W P Albright) के नेतृत्व में अमेरिकी अभियान दल को यमन से अपने यंत्रों को छोड़कर भागना पड़ा।

आज पुरातत्वशास्त्रियों के प्रयत्नों से ही शीबा की रानी की कहानी के प्रमाण के रूप में मारिब के प्राचीन खण्डहर खड़े हुए हैं लेकिन शीबा की रानी की धरती के बारे में अभी भी पूरे रहस्यों का ज्ञान नहीं हो पाया है।

••

# प्रोजेक्ट यू एफ ओ

*उडन तश्तरियो या 'अनआइडेटीफाइड फ्लाइग ऑब्जेक्ट्स' का रहस्य इस परमाणु युग का महानतम रहस्य है। मानव दिन रात अतरिक्ष मे जाने के सपने देखता रहता है। क्या अतरिक्षवासी भी इसी भाति पथ्वी पर आते है? इसी प्रश्न के साथ जुडी है उडन तश्तरियो को देखे जाने की अनगिनत घटनाए।*

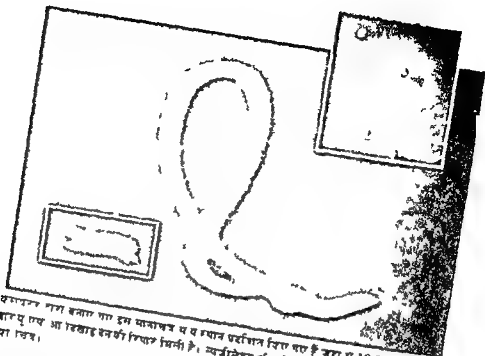
*अमेरिकी वैज्ञानिको की कडन कमेटी ने काफी जाच-पडताल करके उडन तश्तरियो की धारणा को एकदम तर्कहीन और निराधार बताया है। वैज्ञानिको का कहना है कि जब हमारे सौरमडल मे अपार्थिव जीवन के चिह्न ही मौजूद नहीं है तब कोई अपार्थिव शक्ति अपने यान मे बैठकर पथ्वी पर कैसे आ सकती है?*

*परतु दूसरे पक्ष का कहना है कि अतरिक्ष मे कई आकाशगगाए है और कई सौर-मण्डल है। क्या गारण्टी है कि यू एफ ओ का आगमन किसी दूसरे सौर-मडल से नहीं हो सकता?*

---

विश्व के 133 देशो मे 70 000 एेसी रपट मिल चुकी है जिनमे दावा किया गया है कि वहा अनआइडेटीफाइड फ्लाइग ऑब्जेक्टस (U F O ) देखे गए है। इन 70 000 रिपार्टो मे से 95 प्रतिशत घटनाए जाच-पडताल करने पर विमानो मौसम के गुब्बारो बिजली चमकने रॉकेटो पक्षियो और कीटो से सबधित निकली लेकिन अभी भी 5 प्रतिशत रिपार्टे रहस्यमय बनी हुई है। इन्ही 5 प्रतिशत घटनाओ के रहस्य पर पडा पर्दा उठने मे ही सारा विश्व उडन-तश्तरियो या यू एफ ओ के रहस्य से परिचित हो सकेगा।

सन 1978 के अंतिम दिन आधी रात के बाद इसी रहस्य से सबधित एक एेसी घटना घटी जिसे राडारो, कमरो और टेपरिकाडरो जैसे वैज्ञानिक यत्रो द्वारा रिकाड किया जा सका। इसी सबूत के कारण यू एफ ओ आज अफ्वाहबाजो व अधविश्वासियो या उत्सुकता से भरे सामान्य नागरिको का ही नही वरन वैज्ञानिक चेतना से सम्पन्न लोगो की चिता का विषय बन हुए है। न्यजीलण्ड के दक्षिणी द्वीप के पवू मे एक आर्गोसी कार्गो विमान मे मेलबोर्न टलीविजन दल के 3 सदस्यो ने वेलिगटन (Wellington) और क्राइस्टचच (Christchurch) के बीच हवाइ माग पर उडते हुए आधी रात के ठीक बाद कुछ विचित्र रोशनियो को देखा। ये रोशनिया चमकदार थी और जल-बुझ रही थी। ठीक इसी समय वेलिगटन के राडार ने कुछ अनजानी छवियो को अपनी स्क्रीन पर दिखाया। इन रोशनियो मे से



... बनाए गए इस मानचित्र में वे स्थान प्रदर्शित किए गए हैं जहां से 19 000 से अधिक बार पृथ्वी और आकाश इनकी रिपोर्ट मिली है। न्यूजीलैंड की प्रसिद्ध घटना में लिया गया यह एक फोटो चित्र।

रोशनी ने तो कुछ मिनटों तक विमान का पीछा भी किया। जब यही वायुयान वापिस जा रहा था तो 10 मील की दूरी में एक अन्य रोशनी उसकी तरफ बढ़ने लगी। यान में बैठे हुए एक टी वी के क्रयूमन (Crewman) के अनुसार यह प्रकाश आधार में चमकदार तथा शीर्ष पर पारदर्शक गोले की तरह का था।

न्यूजीलैंड इन रोशनियों को न केवल टी वी दल ने और विमान के दो चालकों ने देखा वरन विमान के हवाई राडार ने भी पकड़ा। इन सबसे अधिक उत्तेजित करने वाला तथ्य यह था कि इन रोशनियों और उनमें छिपी हुई रहस्यमय वस्तु की रंगीन फिल्म उतार ली गई थी। 16 मिमी के 23 हजार फ्रेमों से युक्त यह फिल्म उसी टी वी दल ने उतारी। अमरीकी नेवी के ऑप्टीकल फिजिसिस्ट डा ब्रूस मैक्काबी (Dr Bruce Maccabee) ने जब इस फिल्म को देखा तो उन्हें उड़ती हुई रहस्यमय वस्तुओं की एक लघु श्रृंखला दिखाई पड़ी। इन फिल्मों ने आधार में चमकदार तथा शीर्ष में पारदर्शक गोले वाले वक्तव्य को सही साबित किया। इनसे यह भी पता चला कि इन रहस्यमय वस्तुओं से 100 000 वॉट का शक्तिशाली प्रकाश छूट रहा था तथा इनका उड़न-मार्ग छल्ले बनाते हुए आगे बढ़ने का था। फिल्मों से अनुमान लगाया गया कि इनमें से एक वस्तु 60 से 100 फुट के दायरे जितनी विशाल थी। एक ऐसी वस्तु भी देखी गई जो उड़ते समय पहले पीले-सफेद चमकदार रंग का गोलाकार बनाती तथा फिर पीले और लाल रंग का तिकोना



लस क आकार क बादलो म लोगो को उडन तश्तरियो का भ्रम हो जाता है।

आकार बनाती थी। यदि य वस्तुए अग्रजी क आठ क आकार म छल्ल बनात हुए उड रही थी ता इनकी गति का अनमान 3000 मील प्रति घटा लगाया गया ह। इन वस्तुओ से निकलन वाली ध्वनियो का भी राडार क माध्यम स रिकार्ड किया गया था।

उडन वाली अजनबी वस्तुओ को दख जान का इतिहास बहुत पुराना ह। बताया जाता ह कि कोलम्बस न अपन जहाज माता मारिया पर खड होकर नई दुनिया क क्षितिज पर 20वी शताब्दी की शुरुआत म सयुक्त राज्य अमरिका क मध्य पश्चिम आकाश पर दखा था। फरिश्त इजकील (Ezekiel) द्वारा भी इस तरह की वस्तुओ का दख जान का वणन बाइबिल म मिलता ह।

सन् 1968 म इन विश्वासो-अधविश्वासो का सबस ज्यादा बल प्रदान किया एरिक वान डनिकेन (Erich Von Daniken) की पुस्तक चेरियटस ऑफ गॉड न। डेनिकेन ने अपनी पुस्तक म इन वस्तुओ का अतरिक्ष स आए हुए अपार्थिव लकिन अधिक योग्य व्यक्तियो क यान क रूप म परिभाषित किया तथा दावा किया कि मिस्र क पिरामिड तथा सुमेरी सभ्यता जसी महान रचनाए बिना अपार्थिव लोगो की मदद से नही हो सकती थी।

आधुनिक युग मे पहली बार सन् 1947 मे कैनथ आर्नोल्ड (Kenneth Arnold) नामक व्यापारी और अनुभवी पायलट ने यू एफ ओ को देखा था। आर्नोल्ड उस समय अपन व्यक्तिगत विमान म उडान भर रहा था कि उसने 9 ... था। त

चमकती हुइ तश्तरियां जैसी वस्तुओं को तीर की तेजी से आसमान में उडते हुए देखा। अखबारों ने आर्नोल्ड के इस अनुभव को सुर्खियों में छापा और अगले दिन सभी जगह उडन तश्तरियों की धूम मच गई। इसके बाद विश्व के विभिन्न भागों से किए जाने वाले ऐसे दावों का तांता लग गया। कुछ लोगों ने तो अन्तरिक्ष से आया हुआ पारदर्शी सूट पहने 7 फुट लम्बा जीव भी देखा और कुछ ने 3-3 फुट के अंतरिक्षीय यानों को देखने का दावा तक पेश किया। राष्ट्रपति आइजनहावर के काल में तो यह दावा भी किया जाता था कि अमेरिकी सरकार ने तीन अन्तरिक्षवासियों को गिरफ्तार कर लिया है और स्वयं राष्ट्रपति उनसे मिले भी। कुछ लोग इस दावे पर आज भी विश्वास करते हैं।

यू एफ ओ से सम्बंधित सबसे लम्बी और विश्वसनीय प्रतीत होने वाली शोध अमेरिकी वायुसेना ने आयोजित की। इसे ऑपरेशन ब्ल्यू बुक या प्रोजेक्ट ब्ल्यू के नाम से जाना जाता है। यह शोध 20 वर्ष तक चली और इसके सलाहकार थे—खगोल भौतिकी के प्रोफेसर डा. जे. एलन हाइनेक। डा. हाइनेक ने पहले तो लम्बे अरसे तक यू एफ ओ के अस्तित्व पर विश्वास नहीं किया पर सन 1960 में उन्होंने कहा कि यू एफ ओ की घटनाओं की वैज्ञानिक जांच-पडताल होनी चाहिए। इस मांग में अन्य वैज्ञानिकों ने भी हाइनेक का साथ दिया।

आज इन वैज्ञानिकों के प्रयासों से इवान्स्टन, इलिनोइ (Evaston Illinois) में यू एफ ओ के अध्ययन के लिए एक केन्द्र खुल गया है, जिसके डायरेक्टर डा. हाइनेक ही हैं। डा. हाइनेक ने लम्बे अध्ययन के उपरांत यू एफ ओ दर्शन की घटनाओं को तीन भागों में बांटा है। ये तीन भाग हैं— क्लोज एनकाउण्टर्स आफ फर्स्ट काइंड, सैकण्ड काइंड तथा थर्ड काइंड। पहले प्रकार के एनकाउण्टर (भिडन्त) उन्हें कहा गया जिनमें यू एफ ओ को निकट से देखा भर गया तथा कोई शारीरिक सम्पर्क न होने पर भी दर्शक पर उस घटना का भावात्मक प्रभाव पडा। इस प्रकार का एक उल्लेखनीय एनकाउण्टर 17 अप्रैल सन 1966 को ओहिओ की पोर्टेज काउण्टी के डिप्टी शेरिफ डेल स्पार के साथ हुआ। उन्होंने एक मकान जितनी बडी, शीर्ष पर गुम्बदाकार तथा बैंगनी-सफेद प्रकाश छोडने वाली उडन-तश्तरी का अपनी कार से 70 मील तक 105 मील प्रति घंटा की रफ्तार से पीछा किया। इसमें स्पार की मदद अन्य पुलिस जनों ने भी की तथा इसे रेडियो द्वारा मॉनीटर भी किया गया।

7 अगस्त सन 1970 को 11.30 प्रातः इथियोपिया के एक ग्राम सालाडेयर (Saladare) पर से एक लाल चमकती हुई गेंद नीचे उडते हुए विमान जितनी भयानक आवाज करते हुए गुजरी, जिससे ग्राम के घर, पत्थर के पुल, वृक्ष ध्वस्त हो गए। आस्फाल्ट तथा धातु के बर्तन पिघल गए परंतु कोई आग नहीं लगी। इसे दूसरे प्रकार का क्लोज एनकाउण्टर कहा गया। इस तरह के कई एनकाउण्टरों की रपट मिल चुकी है, जिनमें यू एफ ओ द्वारा व्यक्तियों तथा उनकी चीजों पर,

विध्वंसात्मक प्रभाव डालन क बार म बताया गया ह। एक-दा ऐसी रपटे भी मिली ह जिनम दशकां की बीमारिया व घावा पर यू एफ आ न ठीक करन वाला प्रभाव डाला।

तीसर तरह क एनकाउण्टर इन दाना स भी विचित्र प्रतीत हात ह। इस श्रणी म क्वल व ही घटनाए आती ह जिनम अतरिक्ष म आए हर-नील रग क ह्यूमनाइड (Humanoids) का दखन तथा स्वय भी उडन-तश्तरिया म अतरिक्ष यात्रा करन क लिए जान का दावा किया गया हा। अतरिक्ष यात्रा की शखी बघारन वाल महाशया स जब पूछा गया कि व वापसी म अपन साथ कोइ निशानी छुपा कर क्या नही लाए ता व बहान बनान लग कि उन्ह ता ह्यूमनाइडा न अपहरित कर लिया था।

मज की बात यह ह कि जिस दश म स तीसर तरह क एनकाउण्टर की रपट मिली ह उन पर उस दश क मिथका आर सास्कृतिक विशिष्टता की छाप अवश्य अकित ह। फ्रासीसी दशक अतरिक्षवासिया का दखकर उत्सुकता स उनकी आर लपकत ह अमरिकी डर क मार उन पर गाली चला बठत ह ता पापुआ न्यूगिनी का पादरी उन्ह हाथ हिला कर विदाइ दता ह। कुछ वज्ञानिका न यू एफ आ का ब्लकहाल क अनसुलझ रहस्य स जाडन की चष्टा भी की ह।

सन 1978 म फ्रासीसी सरकार द्वारा गठित 4 सदस्यीय टीम ने जिनमे एक मनावज्ञानिक भी शामिल था 11 यू एफ आ घटनाआ की जाच की और पाया कि 11 म स 10 दशका का वास्तव म कोइ एसी चीज दिखाइ दी थी जा मानव क ज्ञान क पर थी आर हवा म उडती थी।

सन् 1960 म अमरिका क वज्ञानिका क एक दल ने 50 लाख डालर की लागत स यू एफ आ क रहस्य की जाच करनी प्रारम्भ की। इस दल क नता डा एडवर्ड यू काडन (Edward U Condon) थ। काडन कमटी की रिपाट न साफ तार स कहा ह कि यू एफ आ क अस्तित्व क बार म कोइ ठास वज्ञानिक तथ्य नही मिल सका ह। डा हाइनक न इस रिपाट को सही नही माना आर आराप लगाया कि इस कमेटी न अपार्थिव परिकल्पना (Extraterrestrial hypothesis) की जाच करन क बजाय यू एफ आ के वास्तविक हान या न हान की जाच शुरू कर दी। फ्रासीसी शाधकर्त्ता जक वली (Jacques Velle) न एक कम्प्यूटर विशषज्ञ तथा खगाल विज्ञान क अध्यता क रूप म लिखी अपनी पुस्तक 'पासपाट टु मगानिया (Passport to Magonia) में तीसर तरह के क्लाज एनकाउण्टरा तथा प्रत्यक सस्कृति क मिथका के अतरसबधा की विवचना करक कहा है कि ' प्राचीन काल म हम दवताआ की कल्पना किया करते थे और आज अतरग्रहीय कल्पना करत हैं तथा अत्याधिक सामाजिक दबाव के काल मे लिए लागा क मानस से इस तरह की कल्पनाआ का उद्भव से होता ह?

अधिकाश वैज्ञानिकों की धारणा है कि य एफ ओ न तो अतरग्रहीय अतरिक्ष यान हैं और न ही हमारी धरती की कोई परामामान्य विशेषता है। वे तो सामान्य वस्तुओं को देखकर भ्रम हो जाने मनोवैज्ञानिक विभ्रम होने सामूहिक विक्षिप्तता तथा जानबूझकर मारी गई गप का दूसरा नाम है। कोंडन कमेटी के अध्यक्ष डा कोंडन के अनुसार उड़न-तश्तरियों के बारे में प्रकाशित कथन वाले प्रकाशकों तथा पढ़ाने वाले अध्यापकों को कोड़े लगाकर उन व्यवसायों से बाहर कर दिया जाना चाहिए।

लेकिन इस सब कड़े खण्डन के बाद आज भी यू एफ ओ देखे जाने की खबरें लगातार आ रही हैं। इन पर निरंतर उपन्यासों कहानियों व बनाई गई फिल्मों की लोकप्रियता बढ़ती चली जा रही है। विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि हमारे सौरमंडल में कोई अपार्थिव जीवन उपस्थित नहीं है परन्तु फिर भी कुछ वैज्ञानिकों का दावा है कि उड़न तश्तरियां हमारे सौरमंडल से नहीं तो किसी और सौरमंडल से आती हैं इस दावे से यू एफ ओ का रहस्य और भी गहरा हो जाता है।

• •

# महरौली का लौह-स्तम्भ

*महरौली (नई दिल्ली) मे बने लौह-स्तम्भ मे कभी जग नहीं लगता, जबकि उसका लोहा वैज्ञानिक दृष्टि से कई अशुद्धियो से भरा हुआ है।*

*यह स्तम्भ अतरिक्ष से आई कुछ अपार्थिव शक्तियो की मदद से बनवाया गया था या यह प्राचीन काल के मानव की विलक्षण बुद्धि और ज्ञान की ही उपज है?*

भारत की राजधानी नई दिल्ली के महरौली नामक स्थान पर एक ऐसा लोह-स्तम्भ है जिसका रहस्य आज तक वैज्ञानिकों की समझ मे नही आ सका है। यह स्तम्भ चद्रा नामक राजा की स्मृति मे बनवाया गया था।

22 फुट ऊचे इस स्तम्भ का औसत व्यास 4½ फुट है। इस लोह स्तम्भ को देखने से ही पता चलता है कि इसे बनाने वाले कितने कुशल धातुकर्मी होगे। ठोस पिटवा लोह से बना यह स्तम्भ अपने अलकृत शीर्ष के कारण अत्यत विशिष्ट लगता है। इस आकार का स्तम्भ बनाना आधुनिक युग मे भी एक कठिनाई भरा काम साबित होगा। विद्वानो का मत है कि इसका निर्माण 5वी शताब्दी के आस-पास हुआ होगा।

इस स्तम्भ के प्रसिद्ध होने तथा उसके रहस्यमय होने की वजह दूसरी है। शताब्दियो मे इस स्तम्भ को वर्षा और वायु का मुकाबला करना पडा है लेकिन आज तक इसमे जग नही लगा है।

इस स्तम्भ मे जग न लगने के लिए कई तर्क जुटाए जाते रहे है। इनमे सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं वे तर्क जो एरिक वॉन डेनिकेन (Erich Von Daniken) की प्रसिद्ध पुस्तक चेरियट्स ऑफ गाड्स (Chariots of Gods) के आधार पर दिए गए हैं। वॉन डेनिकेन के अनुसार अतरिक्ष के 'सुपर इटेलीजेट' वासियो की मदद के बिना न मिस्र के पिरामिड बन सकते थे और न ही पाषाण युग की व उसके बाद की सुमेरी सभ्यता विकसित हो सकती थी। डेनिकेन के सिद्धात पर विश्वास करने वाले लोगो का कहना है कि यह स्तम्भ भी अतरिक्षवासियो के योगदान से ही निर्मित हो पाना सभव हुआ है।

जब विज्ञान किसी रहस्य को नही खोल पाता, तो इस तरह के तीर और तुक्केनुमा सिद्धात प्रकाश मे आते ही हैं। महरौली के लौह स्तम्भ की धातु का वैज्ञानिक अध्ययन यह बताता है कि उस लोहे मे बहुत-सी अशुद्धिया हैं, जिसके कारण

जग न मगन वाम चम-रार्गी मोर
या रहस्यमय स्तम्भ।



उसम आर भी अधिक जग नगना चाहिए लकिन स्तम्भ म आज तक जग नही लगा ह। धात-विज्ञानिया का यह नही समझ म आ रहा ह कि उस स्तम्भ की धातु क्या इस कदर परिरक्षित आर प्रकृति क प्रभाव स मक्त ह।

महरानी क स्थानीय निवासी इस स्तम्भ का बड भक्ति-भाव स दखत ह। अब ता उनक काना म भी इसम लगी अदभुत धात की खबर पहच चुकी ह। अत इस स्तम्भ क आस पास अधविश्वासा क ताना-बाना की बुनावट प्रारम्भ हा जाना स्वाभाविक ह।

पथ्वी पर अपार्थिव शक्तिया क आगमन क सिद्धात म जिसक प्रवतक वान डनिकन थ उनक सिद्धात म सकडा कमिया खाज निकाली गइ ह परतु किसी भी रहस्य का आर भी रहस्यमय कर दन की मानव प्रकृति अभी भी उस पर भरासा कर लती ह। यह सही हे कि महरोली क लोह स्तम्भ की धातु की विशिष्टता का अभी तक पता नही चल पाया है लकिन इसका मतलब यह नही हे कि वैज्ञानिक विधिया आर पुरातात्विक अध्ययन पर स विश्वास हटा कर कपाल-कल्पित सिद्धाता ओर व्याख्याआ को अपना लिया जाए। महरोली क लोह स्तम्भ क रहस्य क बार म भी इसी तरह की धारणा बनन का गम्भीर खतरा मोजूद है। बहरहाल हम आशा रखनी चाहिए कि एक न एक दिन धातु-वैज्ञानिक इस रहस्य पर पडा आवरण अवश्य हटाएग।

# तूतेनखामेन के मकबरे का रहस्य

---

*अमेरिकी पुरातत्व शास्त्रियो ने तूतेनखामेन की ममी व उसका खजाना तो खोज निकाला लेकिन उनकी विद्या दो रहस्यो पर से पर्दा नहीं उठा सकी।*

*तूतेनखामेन की ममी मे निकले 150 तावीजो का क्या रहस्य है और तूतेनखामेन की ममी समय से पहले खराब होनी क्यो शुरू हो गई थी?*

*150 मे से केवल 3 तावीजो के बारे मे पता लग पाया है कि उनका क्या अर्थ है तथा ममी के खराब होने के बारे मे जो तर्क दिए जाते है, वे खासे अविश्वसनीय हैं।*

---

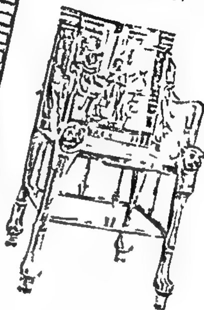
मिस्र जितना प्रसिद्ध अपनी प्राचीन सभ्यता के लिए है उतना ही अपने रहस्यो के लिए भी प्रसिद्ध है। विशालकाय पिरामिडो के रहस्य से आज भी विश्व भर के पुरातत्वशास्त्री, वास्तुकार और वैज्ञानिक जूझ रहे है लेकिन अभी तक वे उनके निर्माण का वास्तविक उद्देश्य नही खोज पाए है। महान मिस्री फराओ राजा चिआप्स (Cheops) के शासन की समाप्ति की 12 शताब्दियो के बाद मिस्र पर तूतनखामन (Tutenkhaman) नामक राजा का शासन हुआ, जिसके मकबरे का रहस्य भी पिरामिडो के रहस्य से कम गम्भीर नही है।

अमरिकन पुरातत्ववेत्ता कार्टर (Cartar) तथा कार्नाखान (Karnakhan) ने पहली बार तूतेनखामेन के मकबर मे घुसने का अवसर प्राप्त किया। इस मकबर मे चार कब्र थी, जिनमे से एक पर सोने की अतिकलात्मक नक्काशी थी तो दूसरी पर मृतक की रक्षा के लिए देवी-देवताओ के चित्र बनाए गए थे। तीसरी कब्र भी इसी तरह की थी। चौथी कब्र मे तूतनखामेन का शव रखा था। इस कब्र मे पत्थर के ताबूत मे रखे सोने के एक चमचमाते आदमकद आवरण मे तीन कफनो के अंदर लिपटी तूतनखामन की साढे तीन हजार वर्ष पुरानी ममी निकली। यह शव भव्य रूप से सजाया गया था। शव का मुखौटा तथा उसके सिर के नीचे रखा गया लोहे का तकिया उस जमाने के कलाशिल्पियो की कला के उत्कृष्ट नमूने थे। राजा के शव के सिर पर रखे आकर्षक मुकुट पर सर्प बूटी तथा गिद्ध की आकृतिया अंकित थी, जो उस समय का राज-चिह्न था।

तूतनखामेन के ताबूत मे अन्य बेशकीमती आभूषण थे, जिनमे सबसे अधिक विशिष्ट था हरे काच, नीलम तथा कार्नेलियन से बना मिस्र की दक्षिणी देवी के प्रतीक के रूप मे बना नेकलेस। शव के दाए और बाए हाथ मे पाच और आठ



ततेखामन की ममी का बाह्य मखौटा।



मक्बर से प्राप्त कर्सी जिस पर हआ काम देखत ही बनता है।

जगठिया थी। पट आर कमर म सान की करधनिया कमर वाली करधनी म एक तलवार वधी थी जिस पर वहमल्य पत्थरा की कारीगरी थी। म्यान और मूठ साने की थी। इसक अलावा छरा कटार तथा अनक वहुमूल्य रत्न भी आस-पास विसर पड थ। ततनखामन क पूर शरीर पर 143 वहुमूल्य वस्तुए थी।

तूतनखामन क मकवर म मर्वाधत दो रहस्य आज तक नही सुलझ पाए हैं—पहला तो यह कि उसकी ममी म मिल 150 तावीजा का क्या रहस्य हे तथा दूसरा यह कि ततनखामन की ममी खराव क्या हो गई क्योंकि निकालने पर पाया गया था कि ममी की त्वचा फटने लगी हे।

ममी म पाए गए तावीज जहा एक ओर उत्कष्ट कलाकतियो के बजोड नमूने हें वही दूसरी आर मिस्रवासिया की रहस्यमय परम्पराआ की आर भी इशारा करत ह। इन तावीजा म आई ऑफ हारुस (Eye of Horus) तथा वक्ल ऑफ इसिस (Buckle of Isis) वहुत प्रसिद्ध हे। सबस ज्यादा प्रसिद्ध हे स्केरब (Scarab) नामक तावीज जा जीवन का प्रतीक हे और जा सूर्य देव 'रा' (Ra) को समर्पित किया गया है। शवा को दफनान क सस्कार के समय स्केरब को जो भवर की शक्ल क आधार पर वनाया जाता था हृदय की जगह रखा जाता था। इस तावीज की पीठ पर एक जादुई मन्त्र खुदा रहता था, जिसमे देवताओ से अमरता देने की

प्राथना की जाती थी। धीरे-धीरे भवरा ही स्करव की शक्ति का प्रतीक माना जाने लगा। बाझ आरत इस कीट का सुखा कर उमका चूरा वना लेती थी तथा इस आशा म उस पाउडर का पेय बना कर पी लती थी कि उसस उन्ह वच्चा पदा करने की सामथ्य मिल जाएगी। इस तावीज पर एक आख तथा एक क्रास, एक छल्लदार शीप क साथ वना हुआ ह। ये तीनो चीज भी जीवन आर अमरता की प्रतीक ह।

तूतनखामन क सीन पर पाए गए 150 तावीजो मे से केवल इन्ही तीन ताबीजा का अथ समझा जा सका ह। होरुस व 'इसिस भी देवता ही ह। 'हारूस एक एसा देवता माना जाता था, जा मृतक के हृदय का अतिम फसला दते समय तालता था। इस धारणा स सबधित कलाकृतिया आर मिस्री चित्र मिस्रविद्याविदो का काफी सख्या म मिल ह।

शव की गहराइ स जाच करने पर दूसरा रहस्य सामने आया। शरीर की त्वचा जगह-जगह स फट चुकी थी तथा शव भगुर स्थिति म था। प्रश्न यह उठा कि जव मिस्र की अन्य ममिया हजारो वष स सुरक्षित हे ता फिर तूतेनखामन की ममी ही क्या खराब हुई?

इसक उत्तर मे एक तर्क दिया जाता हे कि तूतेनखामन को मिस्री लाग मृत्यु का दवता आसिरिस का प्रतिनिधि मानते थे इसलिए उन्होन अपना अतिरिक्त सम्मान प्रदशित करने क लिए उसके शव की ममी बनाने से पहले तेल आर विभिन्न लेपो स मालिश की। लबी अवधि म यही तेल ओर आलेपन शरीर की त्वचा मे पहुच गया आर इसने त्वचा का खराब कर दिया लेकिन अभी तक इस बात के वेज्ञानिक प्रमाण नही मिल पाए ह कि शव वास्तव मे इसी कारण खराव हुआ होगा।

तूतनखामेन के शव के साथ अमेरिकी पुरातत्वविदो ने जो खजाना प्राप्त किया वह आखे चाधिया देने वाला था। रत्न-जडित शास्त्रास्त्र, वहुमूल्य परिधान, हीर-मातियो जडित सिहासन सजावटी वस्तुए, लकडी की कलात्मक चटख बहुरगी कुर्सिया, सिहासन, रथ तथा इन सबस ऊपर स्वय तूतेनखामेन की सिहासनारूढ मूर्ति तथा उसके पास खडी हुई उसकी रानी आखेसामन की मूर्ति इस खजाने की उल्लेखनीय वस्तुए थी।

दतकथा हे कि अमेरिकी पुरातत्वविदो को सफलता मिलने से पूर्व 20 अन्य व्यक्तियो ने भी तूतेनखामेन के सिहासन के लालच मे उसके मकबरे मे घुसने का प्रयास किया था लेकिन वे रहस्यमय परिस्थितियो मे अपनी जान से हाथ धो बेठे। इस कथा के वारे मे प्रामाणिक तोर से कुछ नही कहा जा सकता क्योंकि अमेरिकी पुरातत्वविदो ने मकवरे म ऐसी कोई जानलेवा खतरनाक वस्तु नही देखी ना ही माहाल म ऐसी किसी चीज को महसूस किया।

यदि तूतेनखामन की ममी खराव होने का रहस्य तथा उसके बचे हुए 147 तावीजो का रहस्य खुल जाता हे तो दो महत्वपूर्ण वातो से विश्व भर के उत्सुक लोगों का परिचय हा जाएगा कि ममियो को बनाने की ठीक-ठीक विधि उस तथा तावीजो पर बनी आकृतिया तत्कालीन मिस्री समाज की किन प्रतिनिधित्व करती हें।

# जगलो मे छिपा वैभव अकोरवाट

*पूरे 100 वर्ष तक दक्षिण पूर्व एशिया के गहन जगल मनुष्य की आंखो से एक ऐसा रहस्य छिपाए रहे जिसे आज अकोरवाट के नाम से जाना जाता है। कम्बोडिया के मध्यवर्ती मैदानो म अकोर की सभ्यता के खण्डहर खड़े हुए हैं जो एक ऐसी सभ्यता के प्रतीक हैं जो हिंदू संस्कृति से बेहद प्रभावित थी।*

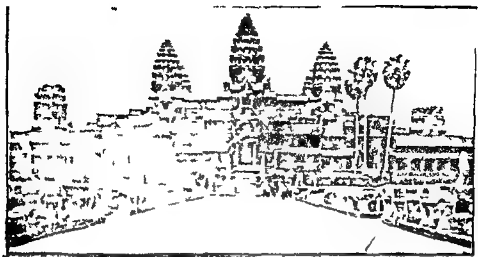
*अपने देवता रूपी राजाओ के नेतृत्व मे कई शताब्दियों तक अकोरवासियो ने प्रकृति का मुकाबला किया और उसे नियंत्रित करना सीखा। उन्होने जल व्यवस्था पर आधारित एक राज्य को जन्म दिया जिसकी तात्कालिक उन्नति और वैभव का अनुमान आज भी आंखे चौंधिया देने के लिए पर्याप्त है।*

*पर इस खोज के साथ एक प्रश्न भी जुड़ा हुआ है कि इस सभ्यता के निवासी इस क्यो छोड़ गए और कहा चले गए?*

सन 1860 म फ्रासीसी प्रकृति विज्ञानी हनरी माहात (Henri Mouhot) न पहली बार कम्बोडिया क मध्यवर्ती मदाना म घन जगला की आड म छिप अकार (Angkor) सभ्यता क खण्डहरा का खाज निकाला। पुरातत्वशास्त्रिया द्वारा किए गए अध्ययन म यह सिद्ध हा गया है कि जल व्यवस्था (Water system) पर आधारित इस सभ्यता म अदभुत कला कौशल तथा तकनीकी निपुणता का विकास हुआ था। अकार क जगला की यह सभ्यता कैस नष्ट हुइ तथा अकार क शहर म रहन वाल 10 लाख स अधिक ख्मर (Khmer) लाग 15वी शताब्दी म एकाएक कहा चल गए यह अभी तक ज्ञात नही हा पाया है। अकार सभ्यता क इतिहास का पूरा-पूरा ज्ञान हो जान पर भी यह रहस्य अभी भी अनसुलझा रह गया है।

माहात न अपनी डायरी म लिखा था कि अकार क मंदिर, नहर तथा सडक यूनान और रोम की सभ्यता क अवशेषो स भी सुदर है। मौहात अपनी इस खोज को आगे बढान क लिए जीवित नही रह और उष्णकटिबधीय ज्वर न उनक प्राण ल लिए।

सन् 1866 म हिंद-चीन क क्षेत्र म अपना प्रभुत्व जमान के बाद फ्रासीसी सरकार ने अकारवाट क शानदार खण्डहरा का क्रमबद्ध अध्ययन प्रारम्भ किया। एक अनुसधान आयोग न सन् 1855 तक अकार के आश्चयजनक रूप स विकसित सभ्यता द्वारा बनाए गए इस शहर के इतिहास को खोज निकाला। सन् 1898 मे पुरातत्वशास्त्रियो व श्रमिको ने कठोर परिश्रम करके अकोरवाट के खण्डहरा को जगला से मुक्त किया ओर 400 वर्ष पश्चात् एक बार फिर सूर्य की रोशनी उन



सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा 12वीं शताब्दी में बनवाया गया अंकोरवाट का मंदिर मकबरा।

भव्य महलों, मंदिरों व सामुदायिक भवनो के खंडहरों पर पड़ी, जो आज मानवीय प्रयासों की कलात्मक पराकाष्ठा के रूप में देखे जाते हैं।

अब यह पता चल गया है कि अंकोर का निर्माण दक्षिण पूर्व एशिया की ख्मेर जाति द्वारा 500 वर्षों की लम्बी अवधि में किया था। ईसाई सभ्यता के उषाकाल के समय में ही भारत व दक्षिण पूर्व एशिया में व्यापारिक व अन्य सम्पर्क स्थापित होने प्रारम्भ हुए। दक्षिण-पूर्व एशिया के वासियों ने भारतीय आध्यात्म से प्रेरणा ग्रहण की। नाम (Phnom) नामक राज्य की स्थापना की गई। एक दंतकथा के अनुसार देवताओं के आदेश से एक कौंडिन्या (Kaundinya) नामक ब्राह्मण कम्बोडिया के तट पर उतरा और उसने उस देश की रानी को जादुई बाण चला कर अपने वश में कर लिया। दोनों के विवाह से जो संतानें उत्पन्न हुई व शासकों के फुनान (Funan) वंश की पूर्वज थीं। ख्मेरों के भी यही पूर्वज थे। 5 शताब्दियों तक फुनानों का राज्य चलता रहा। उन्होंने सिंचाई और यातायात के लिए नहरों का निर्माण करके मेकांग (Mekong) नदी की घाटी को बहुत उपजाऊ बना दिया। 550 इस्वी में फुनान राजधानी को कम्बूजा (Kambujas) लोगों ने हमला करके जीत लिया। कम्बूजा राजा भी हिंदू देवी देवताओं, ब्रह्मा, विष्णु व महेश की पूजा करता था। 18वीं शताब्दी में जावा के राजा ने हमला करके कम्बूजा को पराजित करके उसका सिर काट लिया। जावा के सैनिक लूट-मार करके वापिस चले गए। 802 इस्वी में पहला महान् कम्बोडियायी राजा जयवर्मन-द्वितीय गद्दी पर बैठा, जिसके वंश ने 6 सौ वर्ष तक राज्य किया। जयवर्मन कुशल प्रशासक व सेनापति था। उसने अपने 48 वर्षीय शासन में अपनी जनता को एकताबद्ध किया तथा उसे बाहरी हमलावरों से बचाने की व्यवस्था की। जावा के प्रभुत्व से आजादी घोषित करने के बाद जयवर्मन ने अंकोर के मैदानों के ऊपर कुलेन (Kulen) पहाड़ी पर



अब तो केवल प्राचीन वैभव के खण्डहर शेष हैं।

सुरक्षा की दृष्टि में अपनी राजधानी बनाई। जयवर्मन की छवि अपनी जनता के बीच शिव के अवतार के रूप में थी। इसी छवि ने बाद में अंकोरवाट के भव्य मंदिरों के निर्माण की वैचारिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की।

बाद में कुलेन पहाड़ी पर अपनी राजधानी को अनुपयुक्त समझ कर जयवर्मन ने अपनी राजधानी अंकोर के मैदानों में ही स्थापित कर डाली, जहां नदियों और झीलों की बहुतायत थी। इस क्षेत्र में ख्मेरों के प्रिय भोजन मछली और चावल का उत्पादन आसानी से किया जा सकता था। जयवर्मन ने ही पुजारियों का वंशानुक्रम के अनुसार एक संगठन बनाया, जो राजा को प्रशासन में तो मदद करते ही थे, साथ ही साथ राष्ट्रीय जीवन के धार्मिक सहित प्रत्येक पक्ष की देख-भाल भी करते थे। जयवर्मन ने लिंगम (शिव का प्रतीक) मंदिर बनवाने प्रारम्भ किए।

जयवर्मन के भतीजे इंद्रवर्मन-प्रथम ने 877 ईस्वी में अंकोर के 15 मील दक्षिण पूर्व में हरिहरालय नामक शहर का निर्माण कराया, जिसे अंकोर थोम (Angkor thom) के महान शहर के नाम से जाना गया। इंद्रवर्मन ने अपने 11 वर्षीय शासनकाल में राष्ट्रीय संसाधनों का सर्वेक्षण कराया, झीलों व बांधों का निर्माण कराया। इन कार्यों के लिए इंद्रवर्मन ने दासों से काम लिया। इंद्रवर्मन के प्रयासों से ख्मेर किसान मई से अक्तूबर तक की अवधि तथा शरद के शुष्क मौसम में भी चावल की फसल उगाने में सफल हुए। उन्होंने साल में तीन फसलें काटनी प्रारम्भ कर दी।

जयवर्मन तथा उसके बाद के 30 राजाओं ने धीरे-धीरे करके भव्य पिरामिड जैसे शिखर वाले मंदिर बनवाए। 12वीं शताब्दी और 13वीं शताब्दी में

यशोवर्मन-प्रथम के प्रयासो के पश्चात् सूयवर्मन-द्वितीय (1113-50) तथा जयवमन-सप्तम (1181-1219) युग म अकोर की राजधानी अपन स्वण युग म पहुची। सूर्यवमन ने चीन सागर से हिंद महासागर तक अपना साम्राज्य फलाया। उसी के जमाने म ख्मेर कलाकारो न मंदिरो के शानदार गुम्बद बनाए। ये मंदिर एक तरह के मकबरे थे, जिनमे राजा तथा अन्य सामतो की अस्थिया तथा राख रखी जाती थी। मंदिरो और समाधिया क इन मिले-जुल स्मारका का प्रवेश-द्वार परम्परागत रूप से पूर्व की ओर होने की बजाय पश्चिम की ओर है। वैज्ञानिको का मत है कि सभवत यशोवमन ने यह परम्परा इसलिए तोडी होगी क्योंकि वह सूय की वर्ष भर होने वाली गति, कलैण्डर, ज्योतिष तथा धार्मिक मिथकशास्त्र का समन्वय बनाना चाहता होगा।

यशोवर्मन-द्वितीय की मृत्यु के बाद निकटवर्ती चाम्स (Chams) कबीलो के आक्रमण तथा नागरिक विद्रोह के कारण अकोर का पतन प्रारम्भ हो गया। ख्मेर सेनाओं ने चाम्स कबीलो को हरा अवश्य दिया लेकिन जनता का राजा, धर्म व शासन पर से विश्वास उठ गया। स्वेच्छिक वनवास काट रहे मत राजा के भाई जयवर्मन-सप्तम ने वापिस आकर सिंहासन सम्हाला और विद्रोह को कुचलकर चाम्स कबीलो को सबक सिखाया। इस नए राजा की अधीनता मे ख्मेर कला-कौशल ने नया जीवन प्राप्त किया। जयवर्मन-सप्तम ने अकोर शहर का पुनर्निर्माण कराया तथा शहर की दीवारो की लम्बाई 10 मील तक बढ़ा दी। अपने माता-पिता की स्मृति मे जयवर्मन ने तो प्रोहम (To Prohm) तथा प्रियाह खान (Preah Khan) के भव्य मंदिर बनवाए। शहर के पहले से बने मंदिरो का भी जयवर्मन ने विस्तार कराया। बाद मे बौद्ध प्रभाव के अतर्गत बने मंदिरो, 102 अस्पतालो व 121 हास्टलो के निर्माण का श्रेय भी इसी महान् राजा को जाता है। इनम सबसे विशिष्ट स्मारक है बेयन (Bayon) का मंदिर। इस मंदिर की वास्तुकला इतनी विचित्र है कि वह विद्वानो को भी भ्रमित कर देती है। जयवर्मन-सप्तम का विशालकाय मुस्कराता हुआ चेहरा इस मंदिर के प्रत्येक स्तम्भ के चारो कोनो पर बना हुआ है। यह मंदिर जयवर्मन ने स्वय अपने लिए बनवाया था।

सन् 1226 मे चीनी यात्री और वाणिज्य दूत चाऊ ता कुआन (Chou Ta Kuan) ने इस शहर की यात्रा की। चाऊ ने अपनी पुस्तक 'नोट्स आन द कस्टम्स ऑफ कम्बोडिया' मे 700 वर्ष पहले के ख्मेर जीवन के विविध पहलुओ को प्रस्तुत किया है। चाऊ ने देखा कि शहर म घुसने से केवल कुत्ता व अपराधियो को रोका जाता है। नाकर नीचे की मंजिल पर काम करते हैं तथा उनके मालिक ऊपर बैठ कर [illegible] हैं। चाऊ ने बयन मंदिर को भी देखा। उसने इस [illegible] के [illegible] टावर तथा उस पर हुए 20 छोटे टावरा का [illegible] है। चाऊ ने पवित्र [illegible] हाथ मे लकर [illegible] क चौखट वाली खिडकी म खडे होकर जनता को दशन देने वाले ख्मेर राजा का भी वणन किया ह।

चाउ न ख्मर समाज की दास प्रथा, लोगा क आर्थिक स्तर, मकाना की बनावट स झलकन वाली उनकी सामाजिक हैसियत इत्यादि के बार म विस्तार स लिखा है जिसस उस समय क वभव पर अच्छा-खासा प्रकाश पडता है।

सन 1431 म सियामी (Siamese) आक्रमणकारिया ने अकार की फौजो को पराजित कर दिया। 7 महीन चल इस युद्ध न अकार की जनता का निराश कर दिया। जब सियामी अगल वर्ष पुन लूट-पाट करन क लिए लौट तो उन्हाने पूरा शहर खाली पाया। 10 लाख स भी अधिक अकारवासी अपन पौराणिक शहर को छोड कर जा चुक थ।

ख्मर जनता कहा चली गइ? वह अपनी महान् परम्परा का पालन करन क लिए सियामिया स पुन क्यो नही लडी? उनका विश्वास कैस खण्डित हो गया? इन प्रश्नो का उत्तर अभी भी रहस्य के अधेरो मे छिपा हुआ है।

• •

# पी एस आई मानसिक शक्ति के चमत्कार

*पी एस आई का अर्थ होता है मानसिक शक्तियो द्वारा भौतिक शक्तियो का नियत्रण। टेलीपैथी, अती द्रीय दृष्टि, पूर्वज्ञान तथा साइकोकाइनेसिस का यह मिश्रण आजकल आधुनिक विज्ञान को चुनौती देने मे लगा हुआ है।*

*पहले पी एस आई का अस्तित्व केवल कुछ व्यक्तियो के निजी अनुभवो तक ही सीमित था। बाद मे परामनोवैज्ञानिको ने उसे प्रयोगशाला मे परम्परागत वैज्ञानिक परीक्षणो से भी सिद्ध करने की कोशिश की यद्यपि उन्हे कुछ सीमा तक ही सफलता मिली लेकिन आज भी उनका यह दावा बरकरार है कि वे पी एस आई की प्रामाणिकता को सही सिद्ध करके दिखा देगे।*

यनानी वणमाला क 23व अक्षर से प्राप्त किए गए पी एस आइ (psı) का अथ होता ह—अज्ञात मात्रा। वज्ञानिक समीकरणा म इस अक्षर का प्रयाग इसी रूप मे हाता ह लकिन मनोविज्ञान क प्रोफसर जे बी राइन (J B Rhine) ने इस शब्द का टलीपथी (Telepathy) अतीन्द्रीय दृष्टि (clairvoyance) पवज्ञान (precognition) तथा साइकाकाइनेसिस (psychokinesis) अथात पी के (PK) की मिली जुली अभिव्यक्ति क रूप म प्रयाग किया।

वज्ञानिक पी एस आई क इन चार तत्वा को मान्यता देन क लिए तयार नही ह। टलीपेथी का अथ हाता ह दूसर के मस्तिष्क के विचार पढना अथवा दा व्यक्तिया क बीच सीधा मानसिक सपक अतीन्द्रीय दृष्टि का अथ होता ह किसी घटना या वस्त के बारे म किसी प्रत्यक्ष माध्यम क बिना जान लना पवज्ञान का अथ हाता ह मौजूदा ज्ञान की बिना मदद लिए हुए भविष्य की घटनाआ का जान लना तथा पी क का अथ होता है बाह्य पदाथ मे मस्तिष्क की शक्ति द्वारा परिवतन कर पान की क्षमता रखना।

राइने की काशिश थी कि इन गैर सामान्य परिघटनाआ की ज्ञात आर सामान्य वैज्ञानिक प्रयोगो द्वारा कैस व्याख्या की जाए? राइन का विश्वास था कि जिस तरह 18वी शताब्दी की न्यूटन की भौतिकी निरतर शाध करने पर 20वी शताब्दी की आइस्टीन वाली भौतिकी मे विकसित हो गई, उसी तरह पी एस आई क सबध म शोध करत रहने से एक न एक दिन विज्ञान का भी इस दिशा मे विकास सभव हे। राइने के सामने प्रमुख समस्या यह थी कि पी एस आई का अस्तित्व कवल व्यक्तियो के अनुभवो तक ही सीमित था। कुछ व्यक्तिया को विश्व के किसी कोने

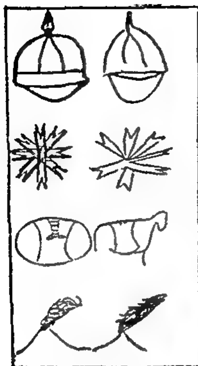


जे. बी. राइन तथा उनकी पत्नी लुइसा ड्यूक विश्वविद्यालय की परामनोविज्ञान प्रयोगशाला में ताश के पत्तों से परीक्षण करते हुए।

म पा ता न आट म आर न जा म अनभव अवश्य हान थ ताकन व अनभव अपन [illegible] गा म गा जीवा म जैसी रा गम्भीरता [illegible] जान थ। इसीलिए गा न न आत्मा और [illegible] क मन्य म पी [illegible] आट क रूप म रायन रहस्यमय गा [illegible] गा [illegible] गा।

राइन न जी [illegible] करन पारम्भ म [illegible] (Charls Richet) स्टनफोड विश्वविद्यालय म जान स्कर (John Cover) हारवड विश्वविद्यालय म जाज [illegible] (George Estabrooks) तथा विलियम मकडूगाल (William McDougall) न प्रयोगशाला की नियत्रित पारस्थितिया म पी [illegible] आइ की जाच की। सन 1920 म अपटान सिनक्लयर (Upton Sinclair) न अपनी पत्नी मरी क साथ [illegible] बनान म सफलता प्राप्त की जिसक अनसार मरी न अपन पति क बनाए गए 100 सा ग्रधिक चित्रा का बिना उनक चित्र भी दख हए लगभग समान रूप स बना लिया था। आइन्स्टीन न सिनक्लयर क प्रयोगा की इमानदारी पर सन्दह न करन की सलाह दी थी। स्वय फ्रायड न सन 1921 म कहा था कि यदि उन्ह पन जीवन जीन क लिए फिर स [illegible] मनोविश्लेषण पर शाध करन क बजाए पी एस आइ जैसी चीजो पर शाध करना पसन्द करगा।

राइन न अपन प्रयोगा क लिए जनता क [illegible] म स व्यक्तियो को छाटा। उन्होंन इयक परिवारा क सदस्या तथा उन छात्रो को लिया जिन्होंन किसी परोक्षशक्ति (Extra sensory power) का दावा नहीं किया था। टलीपथी क लिए राइन न सदेश भेजन वाल व्यक्ति स ताश पर बन चिह्न पर ध्यान कन्द्रित करन क लिए कहा। किसी दूसर भवन म बैठा एक अन्य व्यक्ति उस सन्देश का







अपटोन सिनक्लेयर व उनकी पत्नी पर किए गए टलीपैथी के प्रयोग

प्राप्त करक परिणाम कागज पर उतार दता था। अतीन्द्रीय दृष्टि क प्रयागा म व्यक्ति से ताशों का सीधे-सीधे पता लगाने तथा पूर्वज्ञान के प्रयोगा म गड्डी का फटने से पहल ही यह पता लगान क लिए कहा कि फटन के बाद ताश का पत्ता किस जगह होगा। राइन न पाया कि जिन व्यक्तिया पर उन्हान प्रयाग किया था उनम स प्रत्यक न 25 ताशा की गड्डी म स 5 सही अनमान लगाने म सफलता प्राप्त की ह। बाद म राइन न एस 8 व्यक्ति खाज निकाल जिन्हान इस सीमा से अधिक अथात 85 724 परीक्षणा म 24 364 सफलताए प्राप्त की। य लाग 5 क औसत स निकाल गए। सयाग से ये 7 219 बार अधिक सफल हुए थ। इन आठ लागा म स भी सबस अधिक सफल व्यक्ति था ह्यूबट पियस (Hubert Pearce) जा ड्यूक स्कल ऑफ रिलीजन मे धम का विद्यार्थी था। सन् 1933 व 1934 म अलग-अलग आर दूर-दूर स्थित भवना म बठकर पियर्स तथा मनोवैज्ञानिक जे गाइथर प्रेट (J Gaither Pratt) ने अतीन्द्रीय दृष्टि के कई प्रयाग किए आर 1 850 परीक्षणा म इतनी अधिक सफलता प्राप्त की कि पी एस आइ के आलाचका का भी यह मानना पडा कि सयाग क अलावा आर भी कोइ शक्ति इन परीक्षणा म काम कर रही थी।

सन् 1934 मे राइन ने 'एक्स्ट्रा सेन्सरी परसेप्शन' (Extra sensory perception) (ESP) नामक पुस्तक लिख कर अपनी खाजा को प्रकाशित किया, जिसकी विश्व भर क वैज्ञानिका न आलाचना की। वैज्ञानिका का मत था कि

इ एस पी क अस्तित्व पर विश्वास करन क बाद नही बरन् उस पर अविश्वास करक ही सुस्थापित प्रक्रियाओ द्वारा इसकी व्याख्या करन की कोशिश करनी चाहिए। राइन क तरीका म वैज्ञानिका न कइ अनियमितताए खाज निकाली। जब सन 1936 म राइन द्वारा प्रयुक्त किए जान वाल जनर ताशा की गड्डी बाजार म बिकन क लिए आई ता पता चला कि खास तरह क प्रकाश म जेनर ताशा क चिह्न उनकी पीठ तथा उनकी बगला स भी दख जा सकत है। ब्रिटिश मनोवज्ञानिक सी इ एम हामल (C E M Hansel) न एक पुस्तक लिख कर पी एस आइ क प्रयागा का हाथ की सफाइ की सज्ञा दी।

विज्ञान इन्ही आरापा स बचन क लिए एक ही प्रयाग का दाहरान पर समान परिणाम लान की आवश्यकता पर बल दता ह। जब राइन न स्वय अपन प्रयाग दाहराए ता उन्ह मिश्रित परिणाम प्राप्त हुए न कि पहल जैस परिणाम। इस तरह पी एस आइ आर विज्ञान म युद्ध छिड गया। सन् 1935 म ड्यूक (Duke) न परामनोविज्ञान की एक प्रयागशाला स्थापित की जिसका डायरेक्टर राइने का बनाया गया। इस प्रयागशाला म राइन न परामनोविज्ञान को मनोविज्ञान तथा अन्य परम्परागत विज्ञाना स काट कर अलग कर दिया।

विज्ञान न परामनोविज्ञान का जिस मुख्य आधार पर स्वीकार करन स इकार कर दिया ह वह ह समय आर अतरिक्ष की ज्ञात धारणाओ क बदलन वाली धारणाओ का प्रस्तुत करन म उसकी असफलता। विज्ञान कवल तथ्या क आधार पर ही नही बरन उनकी' व्याख्या क आधार पर भी निमित हाता है। आधुनिक परामनोवज्ञानिका का दावा ह कि व पी एस आइ का अस्तित्व सदह स पर सिद्ध कर क दिखा दग। विद्वाना की चुनौती यह ह कि जब तक पी एस आई क शाधकत्ता किसी भी समय माग किए जान पर पी एस आइ का प्रदशन नही कर दत या पी एस आइ की क्रियाओ का एक तकसगत सिद्धात नही पश कर दत तब तक इस विज्ञान की सज्ञा नही दी जा सकती।

पी एस आइ क शाधकत्ताओ न तमाम क्षत्रा म अपने हाथ आजमाए है। उनका दावा ह कि यह शक्ति मनुष्या म ही नही पशुओ म भी हाती ह। पशु खतर का आर मोसमा क परिवतना का समक्ष लत हे तथा अपनी विशिष्ट टलीपैथी शक्ति से काफी दूर हात हुए भी अपन मालिक का खाज निकालने की क्षमता रखत है। इसक अलावा परामनोवज्ञानिका न मानव मस्तिष्क की अपनी व्याख्या की ह। उन्हान पार्टीकल फिजिक्स (Particle physics) तथा बायोफीडबैक (Biofeedback) तथा मस्तिष्क शाध (Brain research) का सहारा लेकर मस्तिष्क का दाए और बाए भाग म बाट कर दखना प्रारम्भ कर दिया है। उनका कहना है कि यदि सभ्यता का कायम रखना ह आर आज स 10 या 20 वर्ष बाद भी विज्ञान का विकासशील रहना है ता उसे अपना मूलभूत शोध कार्यक्रम मनोवज्ञानिक उर्जा तथा मस्तिष्क व पूर विश्व क सबध म उसकी भूमिका की खाज पर लगाना चाहिए।

म्र्थात यह ह कि अधिक मे अधिक हम यह कह सकते ह कि वतमान युग मनाविज्ञान का यग ह। हम यह दावे के साथ नही कह मकते कि वर्तमान युग परामनाविज्ञान का युग भी ह। इसकें लिए जिन वज्ञानिक प्रमाणा की आवश्यकता हाती ह व अभी तक माजूद नही ह। इर्मालए म्वाभाविक ह कि पी एस आइ को एक रहस्यमय विद्या का दजा द दिया जाए, जो विश्व की गति मानव विकाम की प्रक्रिया तथा सामाजिक विकाम पर कोइ प्रत्यक्ष प्रभाव नही डालती।

परामनावज्ञानिका का तक ह कि अन्य क्षेत्रा म हान वाली अजीव-अजीव घटनाओ का विज्ञान शाध क याग्य मान लता ह ता परामनोविज्ञान की घटनाआ का भी विज्ञान द्वारा एक शोधनीय विपय क्या नही माना जा सकता। विज्ञान उन घटनाओ का यथाथ मानन स इकार करता ह जो प्रयोगा द्वारा आम सिद्धात के रूप म प्रतिपादित नही हा पाती।

वहरहाल पी एस आइ अपने चाग तत्वा का लिए हुए एक रहम्यमय चुनाती की तरह परामनावज्ञानिका क मामन माजूद ह। यह अभी भी कुछ व्यक्तियो क अनभवा तक ही मीमित ह। यही इमका रहम्य ह। जव तक कि परामनोवज्ञानिक एक मावजनिक मिद्धात की शक्ल म इन अनुभवा का विस्तार नही करत तव तक यह रहम्य वना ही रहेगा।

• •

# माया लोगो का आश्चर्यजनक ससार

*आज भी मध्य अमेरिका के उष्णकटिबधीय जगलों मे मानव जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितिया नहीं है लेकिन इन्हीं जगलो मे कभी पाषाण युग के मानवो ने एक ऐसी सभ्यता की रचना की थी जिसे आज 'माया सभ्यता' के नाम से जाना जाता है।*

*माया लोगो को धातु और पहिए का ज्ञान नहीं था लेकिन इसके बाद भी उन्होने महान शहरो का निर्माण किया शानदार कलात्मक सस्कृति का विकास किया और विश्व की किसी भी सभ्यता के मुकाबले गणित की पद्धतिया खोज निकाली।*

*कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज के पहले ही यह क्लासीकल सभ्यता धूल धूसरित हो चुकी थी। इन्हीं माया लोगो के बारे मे जानने के लिए आज पूरा विश्व बेचैन है लेकिन पुरातत्वशास्त्री उनके प्रश्नो के उत्तर नहीं दे पा रहे है।*

---

मध्य अर्मरिका क उष्णकटिबधीय जगला म छिप हुए माया (Maya) सभ्यता के रहस्य का खाजन की शुरूआत 19वी शताब्दी म हुइ। टीला तथा जगला की हरियाली क नीच पापाण यग की माया जाति द्वारा वनाए गए भव्य नगर दव हए अपन जीर्णोद्धार की प्रतीक्षा कर रह थ। इन नगरा म यूराप क किसी भी विशालतम महल की वगवरी करन म समथ अधिक्तम 230 फुट ऊचे पिरामिड माजद थ। यह विश्वास करना कठिन था कि इन जगला म रहन वाल आदिवासी इण्डियना न ही य नगर वसाए हाग। माया लागा तथा इन इण्डियना क सास्कतिक अतराल की व्याख्या करन क लिए ही विद्वाना न कुछ इस तरह क तक दन शुरू कर दिए थ कि माया सभ्यता की स्थापना प्राचीन मिस्रवामिया इजरायल क एक खाए हुए कबील न यूनानी उपनिवशवादिया न सीथियना चीनिया अथवा दक्षिण पूव एशिया क उत्प्रवासिया न की हागी। इन अनुमाना ओर कुलावा क जाडन स भी माया सभ्यता क रहस्यमय स्रात पर स पदा नही उठ सका।

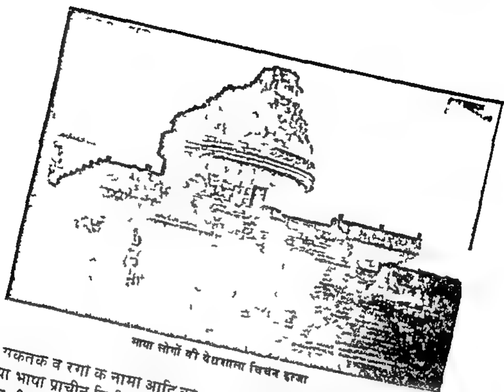
माया लागा क आधुनिक लगन वाल विस्तत भवन दख कर पुरातत्वशास्त्रिया की आख चौंधिया उठी थी। लगभग फ्रास क आकार का माया दश गुआटेमाला (Guatemala) वलाइज (Belize) तथा मेक्सिका (Mexico) क भागा मे फैला हुआ है। इस सभ्यता का उद्भव इसा स 2500 वष पूव हुआ तथा 3400 वर्ष तक इसका विकास हाता रहा। माया सभ्यता क लागा ने इस लम्बी अवधि म आग



इस मायाकालीन प्रतिमा म गद खेलता हआ एक खिलाडी दिखाया गया है।

बढत हुए जगल का राके रखा। वे जगला को जला कर जमीन का खती याग्य बना लते तथा अपन प्रमख खाद्य मक्का (Maize) क साथ-साथ अन्य वनस्पतिया भी एक साथ उगाते ताकि मिट्टी की उपजाऊ शक्ति का ह्रास जल्दी न हा सके। इसके बाद भी उष्णकटिबधीय धरती कुछ फसला तक ही उपजाऊ रह पाती थी जिसस माया किसाना को नइ जमीन तयार करनी पडती थी। इस कठिन काम क बावजूद उनक पास अपनी महान् सभ्यता क निमाण क लिए शक्ति ऊजा आर समय शष बच पाता था—इस पर आज भी पुरातत्वशास्त्री आश्चय करत है। माया वास्तुकारा न बलुआ पत्थरो व ज्वालामुखीय चट्टानो का भवन निमाण क लिए तथा कठोर पत्थरा का आजार बनान के लिए प्रयाग किया था।

मिस्रवासिया की ही तरह माया लाग भी जीवन की अमरता म विश्वास करत थ इसीलिए उन्ही क पिरामिडा क समान उन्हान भी पिरामिडनुमा कइ मदिर बनवाए जिनके पुजारी समय आर ऋतुआ का हिसाब-किताब गणितीय आर खगालीय तालिकाआ के आधार पर इस दक्षता मे करत थ कि उस युग के यूरोपियना का भी उनक सामन शर्मिदा हाना पडता। माया लोगा ने लिखन की कला सीख ली थी। पत्थर क फलका बतना क टुकडो, लकडी के तख्तो तथा वनस्पति क रशा क कागज मे बनी दा दुलभ पुस्तका म लिखी माया भाषा का एक चाथाइ ही आज तक पढा जा सका ह। पुस्तक 800 हीअराग्लीफिक (Hieroglyphic) चिह्नो म लिखी गइ ह। यह साभाग्य का विषय है कि माया लेखका की कृतिया मे सप्ताह क दिना महीनो देवताआ, सख्याओ व दिशासूचक



माया लोगों की वेधशाला चिचन इत्जा

क गकतक व रगा क नामा आदि का भाषा वैज्ञानिक पढ़न म सफल हा पाए हैं। माया भाषा प्राचीन मिस्री तथा आधुनिक जापानी म मिलती-जुलती है ओर उस आज भी 20 लाख लाग बालत हे। विद्वानगण इस भाषा का मर्म जानने के लिए निरतर अध्ययन कर रह है। यदि माया भाषा की पूरी जानकारी हा जाए ता इस सभ्यता क बार म बहमूल्य जानकारिया हासिल हो सकती हैं।

आश्चय का विषय यह है कि यूराप से भी एक हजार वष पहल व 'शून्य की धारणा स परिचित थ। जब यूनानी और रोमन अका और सख्याआ की अभिव्यक्ति क आदिम कठिनाइ स भर तरीक अपना रह थे तब माया सभ्यता किसी भी सख्या का केवल तीन चिह्ना डाट 'बार अथवा डेश व अडाकार शून्य म व्यक्त करन म सफल हा चकी थी। कृषि प्रधान सभ्यता होने के कारण माया किसाना का मोसम की सही-सही जानकारी हाना आवश्यक थी इसलिए उन्हान कलैण्डर बनाए। उन्हान सूर्य ओर तारा का दीर्घकाल तक अध्ययन करक 20-20 दिन क 18 माहा का वर्ष निधारित किया। 360 दिन की इस अवधि को वे टून (Tun) कहत थ। उनके कलेण्डर मे 20 टून अर्थात् 7 200 दिन एक काटून (Katun) क बराबर होत थे तथा 20 काटून अथात् 144 000 दिन एक बाक्टून (Baktun) के बराबर हाते थे। एक अलूटून (Alutun) का अर्थ हाता था 23 0400 लाख दिन। इतनी लम्बी सख्या को माया गणितज्ञ केवल 9 इकाइया द्वारा व्यक्त कर देते थे जबकि आज की दशमलव प्रणाली इस 11 से कम इकाइया म व्यक्त नही कर सकती। उनके सौर कलैण्डर तथा धार्मिक कलैण्डर अलग-अलग थे।

मुकाबले सभ्य तो नहीं थे लेकिन उनके पास धनुष जैसे अधिक मारक हथियार अवश्य थे।

मैक्सिको के निवासियों के जीवन में हमेशा से पठारों पर से आने वाले बर्बरों के आक्रमणों का बड़ा महत्त्व रहा है। घुमक्कड़ कबीलों के माया सभ्यता पर आक्रमण करने से पहले ही उनके आक्रमण करने की संभावना से ही माया जन-जीवन में दहशत फैल गई और सामाजिक संगठन अस्त व्यस्त हो गया। कोपन (Copan) नामक माया शहर 890 ईस्वी में, पालेंक (Palenque) शहर 835 ईस्वी में, टिकल (Tikal) 889 ईस्वी में तथा उक्समाल (Uxmal) शहर 909 ईस्वी में अपने अंत को प्राप्त हुआ। 987 ईस्वी में मैक्सिको की केन्द्रीय पठार के टाल्टेक (Toltecs) नामक कबीले ने चिचेन इत्जा को जीत लिया परंतु वह पराजित माया लोगों की उन्नत संस्कृति के सामने पराजित हो गया। इसके फलस्वरूप माया और टाल्टेक सभ्यता का एक शानदार मिश्रित रूप सामने आया। यह विकास 1224 ईस्वी तक चलता रहा। माया संस्कृति के अवशेष इसी काल तक मिलते हैं।

16वीं शताब्दी में जब स्पेनी युकातान शहर में पहुँचे तो उन्हें केवल कुछ आदिवासी मिले जिनके भूतकाल में माया स्वर्णकाल छिपा हुआ था। स्पेनिश पादरी डिएगो दि लाण्डा (Diego de Landa) ने एकाउण्ट ऑफ दी एफेयर्स ऑफ युकातान नामक पुस्तक में उन कहानियों को लिपिबद्ध किया है जो उन आदिवासियों ने स्पेनियों को अपने महान पूर्वजों की उपलब्धियों के बारे में सुनाई थी। स्पेनियों की धर्मांधता के कारण माया लोगों की अधिकांश धार्मिक कृतियाँ जला दी गईं। यदि ऐसा न किया जाता तो माया सभ्यता के रहस्यों को समझने में काफी आसानी हो सकती थी।

अमेरिका की सभ्यताओं के अनुसंधान के संदर्भ में वहाँ का पुरातत्व विज्ञान अभी भी यूनान, मिस्र अथवा मध्यपूर्व की अपेक्षा बाल्यावस्था में है। अभी भी अमेरिका रहस्यों से भरा हुआ है तथा पुरातत्वशास्त्री उन प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ हैं जो माया सभ्यता ने उसके सामने उपस्थित किए हैं।

# इका सभ्यता का अतिम शरण-स्थर्ल

*अमेरिका की इका सभ्यता तथा स्पेन के लुटेरे अन्वेषको के सघर्ष का इतिहास खून और तलवार से लिखा गया इतिहास है। पराजित होने के बाद भी इका सम्राट ने 36 वर्ष तक स्पेनियो से प्रतिरोध-युद्ध किया था। अपनी पुरानी राजधानी छोड कर इका सम्राट विलकाबाम्बा नामक घाटी मे बने हुए शहर मे छिप गया तथा वहीं से उसने अपनी आजादी की लडाई का सचालन किया।*

*रहस्य का बिंदु यह है कि इका सभ्यता की यह विलकाबाम्बा नामक राजधानी कहा थी? स्पेनियो ने इस राजधानी को भी अतत जीत लिया था लेकिन उनका इतिहास भी इसका अता पता नहीं बताता। विलकाबाम्बा की खोज करने के चक्कर मे अब तक कई पुरातात्विक खोजे अनजाने मे ही हो चुकी हैं। क्या माच्चू पिच्चू के शिखरो पर मिले नगर के खण्डहर ही विलकाबाम्बा है या इस्पिरितु पाम्पा के खण्डहरो को ही इस रहस्य का उत्तर मान लेना चाहिए?*

---

अमेरिका की महान् इका सभ्यता की राजधानी कान-सी थी, जिस स्पेनी आक्रमणकारियो से बचाने के लिए इका सम्राट ने शरण-स्थल के रूप म प्रयोग किया था? आधुनिक पुरातत्वशास्त्री तथा इतिहास क विद्वान अभी तक इस प्रश्न का सतोषजनक उत्तर नही प्राप्त कर पाए हैं। एण्डीज पर्वतमालाओ के घने जगलो म फले हुए इस रहस्य के पीछ लूटमार और युद्ध की एक भीषण दास्तान छिपी हुई है।

सन् 1527 के करीब दक्षिणी अमरिका का शक्तिशाली इका (Inca) साम्राज्य आपसी झगडो क कारण बहुत कमजोर पड चुका था। बाहर से आने वाले यूरोपियन स्पनी कॉक्विस्टाडार (conquistador) जा एक तरह के यूरापियन अन्वेषक विजता थे, अपने साथ तलवार ओर आग के साथ-साथ विचित्र-विचित्र महामारिया भी लाए थे। ऐसी ही एक महामारी मे इका साम्राज्य के बादशाह हुयाना केपक इका (Huyana Capac Inca) तथा उसके उत्तराधिकारी की मत्यु हा गइ। फलस्वरूप मृत बादशाह के दाना पुत्रो म साम्राज्य पर कब्जा क लिए खीच-तान हान लगी। ऐसे विकट राजनीतिक सकट की परिस्थिति म स्पेन के कॉक्विस्टाडार फ्रांसिस्को पिजारा (Francisco Pizarro) ने 180 सिपाहिया के साथ पेरू के तट पर अपन जहाजो के साथ लगर डाला। इन गोरे रग की दाढ़ी वाले स्पेनियो को इका आदिवासियो ने देवताओ का प्रतिनिधि समझा लेकिन इतिहास बताता है कि य स्पेनी इका साम्राज्य के लिए सचमुच राक्षसा क प्रतिनिधि साबित हुए।



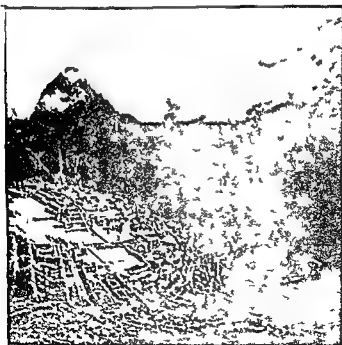
मा च पि च के प्रसिद्ध [illegible] [illegible] इका सभ्यता का अंतिम शरणस्थल यही था?

मन 1532 म पिजारा आर इसक सिपाहिया न इकाआ की आपसी फूट का लाभ उठात हुए मत सम्राट व एक पुत्र अताहुआल्पा (Atahualpa) का अपनी बंदूका तथा घाडा की मदद म गिरफ्तार कर लिया आर इका सना दखती रह गइ। आताहुआल्पा न पिजारा म एक सादा किया कि वह स्पनिया का उस कमर की 8 फुट ऊचाइ क बराबर माना तथा हीर जवाहरात भर कर दगा जिसम उसे कद रखा गया था तथा एक अन्य कमरा 16 फुट तक चादी स भरा दिया जाएगा बशर्ते उस रिहा कर दिया जाए। इका राजकुमार न अपना वायदा पूरा किया लकिन पिजारा न सारा खजाना लकर भी उसकी हत्या कर डाली। पिजारा न चालाकी स काम लत हुए हुआस्कार (Huascar) क भाइ माका (Manco) का साम्राज्य का उत्तराधिकारी घापित कर दिया।

लेकिन आगामी दा वर्षों म ही माका तथा स्पनिया क सबध खराब हा गए। इका लाग भी समझ चुक थ कि सफद चमडी वाल य लाग देवता न हाकर सोने-चादी के लुटेर ही है। स्पेनिया ने माका क प्रतिद्वंद्विया की मदद स शाही खजान व महल का सारा साना व जवाहरात लूट लिए। पिजारा के भाइया जुआन (Juan) तथा गाजाला (Gonzalo) न इका सम्राट का बार-बार अपमान किया तथा नए-नए खजाना का पता बताने क लिए उस पर दबाव डाला। घबरा कर माको ने अपनी राजधानी छाडकर भागन की कोशिश की लेकिन माको को चालाक स्पेनिया ने गिरफ्तार करके कैद कर लिया।

अपनी  असफलता और अपमान से सबक सीखकर माको ने भी शतरज की चाल खेलने का फैसला किया आर अप्रेल, सन् 1536 म पिजारा के तीसरे भाई हेरनाडो (Hernando) से इजाजत मागी कि वह अपने प्राचीन दवताआ की पूजा करने क लिए यूक (Yucay) घाटी जाना चाहता ह और वहा स वह उपहार म स्पेनियो के लिए मृत इका समाट हुयान केपका का आदमकद सोने का बुत भी लाएगा। लालच मे आकर हेरनाडो ने माका का अनुमति दे दी। यद्यपि हरनाडा के साथी तथा माका के इका प्रतिद्वद्वी इसक पक्ष मे नही थे।

स्पेनियो के कब्जे से निकलते ही माको न 100 000 की सेना इकट्ठी करके विदेशियो के खिलाफ युद्ध छड दिया, जा सन् 1536 से 1572 तक 36 वर्ष तक चला। इस लडाई मे इकाआ व स्पेनिया के बीच हार-जीत का क्रम चलता रहा। बार-बार के स्पेनी हमलो से तग आकर माको न एक ऐसी राजधानी की तलाश का बीडा उठाया जो पूर्ण रूप से सुरक्षित समझी जा सकती थी। युवा सेनापति रोड्रिगो आर्गोनेज (Rodrigo Orgonez) के नेतत्व म इका फौज को हराने के बाद भी विट्कोस (Vitcos) शहर को लूटने के लालच मे स्पेनी माको को जीवित न पकड सके। इस बीच मिले समय का लाभ उठाकर माका की अव्यवस्थित सेनाए बिल्काबाम्बा (Vilcabamba) घाटी की शरण म छिप गई। वही से इकाआ ने स्पेनिया के खिलाफ छापामार युद्ध प्रारम्भ कर दिया।



उत्तर पूर्व पेरू में खोजा गया ग्रैन पाजातेन   माको के छिपन का स्थान।

सन 1541 म माका को खबर मिली कि फ्रांसिस्का पिजारो की उसी के साथी स्पेनिया न सोन के बटवारे के ऊपर हुई लड़ाई म हत्या कर दी है। माको ने पिजारो के उन हत्यारो को अपने मित्र के रूप म स्वागत किया। इन स्पेनियो ने इकाओ को घोड़ पर चढ़ना और उस जमाने के आधुनिक हथियार चलाने सिखाए लेकिन जैसे ही इन स्पेनियो को पता चला कि स्पेन से एक नया वायसराय इकाओ पर शासन करने हेतु भेजा गया है, जो पिजारो के हत्यारो म रुचि नहीं है उन्होंने माको की भी घात लगा कर हत्या कर डाली। वे भागने की कोशिश म पकड़ लिए गए और क्रोधित इकाओ ने कुछ गद्दारो को नग्न मार डाला और कुछ को आग जला दिया गया।

माको के बाद इका सामाज्य की बागडोर उसके पुत्र सायरी टूपाक (Sayri Tupac) ने सम्हाली। टूपाक की मृत्यु के बाद माको का दूसरा पुत्र टीटू कूसी (Titu Cusi) सिंहासन पर बैठा। कूसी की बीमारी से मृत्यु हुई, जिसके बाद उसका भाई टूपाक अमारू (Tupac Amaru) गद्दी पर बैठा जिसने अंत तक स्पेनियो के खिलाफ प्रतिरोध संघर्ष चलाया। 24 जून, सन् 1572 म जब विल्काबाम्बा के दरवाजे को तोड़ कर स्पेनियो ने इकाओ के विद्रोही शहर म कदम रखा तो पाया कि इका सम्राट अपनी राजधानी को सूना छोड़ कर फरार हो चुका है लेकिन अमारू का एक भेदिये की सूचना के आधार पर अमेजन के घने जंगलो से गिरफ्तार करके इण्डियनो की भारी भीड़ के सामने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

इस पूरी कहानी का बचा हुआ रहस्य यह है कि यह विल्काबाम्बा नामक जगह जो इकाओ का अंतिम शरण स्थल थी कहां है? स्पेनी उपनिवेशो के पुराने मानचित्रो म इस स्थान का उल्लेख नहीं किया गया है। इस रहस्य की शक्ल उस समय और भी दिलचस्प हो गई है जब यह पता चला कि इका सम्राट ने अपना खजाना यहीं गाड़ा था।

सन् 1909 म युवा अमरिकी विद्वान हिरम बिंघम (Hiram Bingham) ने अपने दल के साथ इकाओ के आखिरी शरण-स्थल की खोज म चक्यूकिवराऊ (Choqquequirau) के खण्डहरो की दुर्गम यात्रा की। इन खण्डहरो को देख कर बिंघम को विश्वास हो गया कि वे विल्काबाम्बा के अवशेष नहीं हो सकते क्योंकि वे खण्डहर 16वीं शताब्दी के लेखको द्वारा अंतिम इका राजधानी के वर्णन से मिलते-जुलते नहीं थे।

सन् 1911 म बिंघम ने एक बार फिर अपनी खोज प्रारम्भ की। इस बार उसने वह रास्ता पकड़ा जो इका सम्राट माको ने पिजारो को धोखा देने के लिए अपनाया था। बिंघम का दल उरूबाम्बा नदकंदर (Urubamba canyon) पर पहुंचा और वहां से मेल्कर आर्टीगा (Melchor Arteaga) नामक स्थानीय गाइड की मदद से उसने माच्चू-पिच्चू से 2000 फुट ऊपर बना हुआ एक ऐसा खण्डहर खोज

निकाला, जो इकाआ के प्रस्तर शिल्प का अद्भुत नमूना था। बिघम ने माच्चू-पिच्चू की खूबसूरती की तारीफ म वहुत कुछ लिखा लेकिन वह यह नही समझ पाया कि क्या माच्चू-पिच्चू ही इकाओ की अंतिम राजधानी थी। बाद मे बिघम ने यह निष्कर्ष निकाला कि माच्चू-पिच्चू का निर्माण 15वी शताब्दी के महानतम इका शासक पाचाकुती इका (Pachacuti Inca) न करवाया था। प्रारम्भ मे इसे फोज की रिहायश के लिए प्रयोग किया गया होगा तथा बाद मे 'सूर्य देवता की कुआरी दासियो' को, जो इका धार्मिक परम्पराओ का प्रमुख अग होती थी, के अभ्यारण्य के रूप मे प्रयुक्त किया गया होगा।

सन् 1915 मे बिघम ने इस इलाके की पुन छानबीन की और इस बार उसे इस्पिरितु पाम्पा (Espiritu Pampa) अर्थात् 'आत्माओ की धरती' के खण्डहर खाजने म सफलता मिली। इस खण्डहर पर भी इकाओ की अतिम राजधानी होने का सदेह किया जाता हे।

सन् 1964 म परु (Peru) के उत्तर मे कुछ किसानो के एक दल ने ग्रैन पजातेन (Gran Pajaten) नामक शहर के खण्डहर खोज निकाले। समुद्र से 9,500 फुट पर मिलने वाले इन खण्डहरो मे महल ओर मदिरो के अवशेष शामिल हैं। इनका स्थापत्य अद्भुत है। हवाई सर्वेक्षण से पता चला हे कि इस तरह के 3 हजार खण्डहर एण्डीज पर्वत मालाओ की सात पहाडिया म बिखरे हुए हैं। ये खण्डहर आपस मे एक ऐसी सडक से जुड हुए ह जो कही-कही चार गज तक चोडी है।

सन् 1964-65 मे ही एक अन्य अमेरिकन गेने सेवॉय (Gene Savyo) ने बिघम द्वारा खोज गए इस्पिरितु पाम्पा का अध्ययन किया और दावा किया कि ये खण्डहर ही विल्काबाम्बा के खण्डहर ह। सेवॉय का ख्याल था कि पाम्पा मे पाए गए फव्वार पाइप तथा नालियो पुराने इका नगर कुज्को (Cuzco) जैसे ही हैं। सेवॉय ने वहा से इस तरह के तमाम अवशेष खोज निकाले, जो इका परम्पराओ और कला-कोशल के द्योतक थे। सवॉय न इस खण्डहर से एक ऐसी घोडे की नाल भी खोजी जो स्पेनियो के घोडो की टापो म लगाई जाती थी।

सेवॉय का दावा उस समय सदिग्ध हा गया जब उसी क गाइडो ने एक वर्ग मील क्षेत्रफल का एक ओर इकाकालीन खण्डहर खोज निकाला। इस खण्डहर की वास्तुकला पर स्पेनी प्रभाव साफ तौर पर दृष्टिगोचर होता हे। इस खण्डहर को वहा क आदिवासी हातुन विल्काबाम्बा (Hatun Vilcabamba) कहत ह।

लेकिन अभी इस नई खाज के प्रभावो को ठीक से सिद्ध भी नही किया गया था कि पेरू का एक सैन्य दल अपूरिमाक (Apurimac) तथा उरूबाम्बा नदियो के बीच रहन वाले आदिवासिया द्वारा आगे बढन से रोक दिया गया क्योकि वे आदिवासी अपने आपको इका साम्राज्य का उत्तराधिकारी मानते थे तथा वहा मोजूद अभी तक अछूते खण्डहरो की रक्षा का प्रण किए हुए थे।

आज भी इकाआ क अतिम शरणस्थल की खोज जारी हे। नए-नए खण्डहरो के अवशेषो से पुरातत्वशास्त्री यह अनमान लगाने की कोशिश कर रहे है कि अंतिम इका सम्राटन अपना खजाना कहा गाडा होगा? ● ●

# क्या पृथ्वी खिसक रही है?

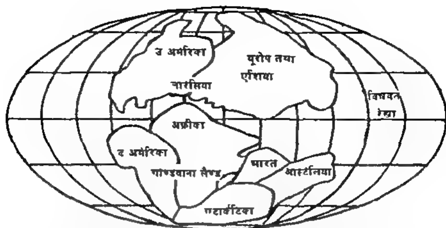
*कांटीनेंटल ड्रिफ्ट थ्योरी से भूगर्भशास्त्री इस निष्कर्ष पर तो अवश्य पहुंच गए कि हमारी पृथ्वी के सभी महाद्वीप करोड़ों वर्ष पहले तक एक साथ जुड़े हुए थे। बाद में पृथ्वी के गर्भ में होने वाली क्रियाओं के कारण ये महाद्वीप एक दूसरे से अलग हुए और वर्तमान रूप में पहुंचे। वे विश्वासपूर्वक आज भी यह कह पाने में असमर्थ हैं कि पृथ्वी का वर्तमान रूप कितने समय तक बना रहेगा क्योंकि उनके अनुसार हमेशा की तरह पृथ्वी आज भी खिसक रही है।*

*पृथ्वी खिसकने की यह प्रक्रिया धीरे-धीरे होगी या अचानक इस प्रश्न का उत्तर भी नहीं दिया जा सका है। इस क्षेत्र में केवल अनुमान लगाए जा सकते हैं लेकिन क्या महाद्वीपों के खिसकने का सिद्धांत एक अनुमान द्वारा ही पैदा नहीं हुआ था। क्या इसी तरह के अनुमानों के सहारे हम अपनी पृथ्वी के भविष्य का पता नहीं लगा सकेंगे?*

---

कभी-कभी समाचार पत्रों में कुछ अजीब से समाचार निकलते हैं कि वैज्ञानिकों के अध्ययन के अनुसार समुद्र के किनारे बसे हुए नगर बेहद मंथर गति से जमीन में धंस रहे हैं या समुद्र की ओर खिसक रहे हैं अथवा हिमालय, एण्डीज या पामीर जैसी पर्वतमालाएं अपनी जगह से हट रही हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह प्रक्रिया इतनी धीमी है कि इसे सम्पूर्ण होने में अभी लाखों करोड़ों वर्ष लग जाएंगे। इस पर मसले का रहस्यमय बिंदु यह है कि क्या पूरी की पूरी पृथ्वी व उसके महाद्वीप अपनी स्थिति से धीरे-धीरे खिसकते तो नहीं रहे हैं?

पृथ्वी के खिसकने और इसी प्रक्रिया के दौरान वर्तमान रूप में आने के सिद्धांत को कांटीनेंटल ड्रिफ्ट सिद्धांत (Theory of continental drift) कहते हैं। अगर हम ध्यान से विश्व के मानचित्र को देखें तो हमें पता चलेगा कि तमाम महाद्वीपों की बाह्य रेखाएं ऐसी हैं कि मानो उन्हें एक सम्पूर्ण गोले से टेढ़ा-मेढ़ा काटकर अलग कर दिया हो। वैज्ञानिकों को इसी तरह की अनुभूति होती थी लेकिन शुरू में भूविज्ञानी इस तर्क से सहमत नहीं हो पा रहे थे कि सभी महाद्वीप एक समय आपस में जुड़े रहे होंगे क्योंकि उनके पास इसका कोई सबूत नहीं था। सन 1915 में पहली बार जर्मन मौसम विज्ञानी अल्फ्रेड वेगनर (Alfred Wegner) ने एक ऐसा अनुमानित चित्र उपस्थित किया जिसमें पूरी पृथ्वी आपस में जुड़ी हुई दिखाई गई थी। वेगनर के प्रयासों की उस समय काफी हंसी उड़ाई गई और साथी वैज्ञानिकों ने उन्हें पागल करार दिया। आज वेगनर को ही कांटीनेंटल ड्रिफ्ट सिद्धांत का पितामह माना जा रहा है तथा उनके सम्मान में चंद्रमा पर एक गड्ढे (Crater) का नाम रखे जाने के सुझाव पर विचार हो रहा है।




20 करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी का सभावित मानचित्र। लारेसिया नामक विशाल खण्ड गोण्डवाना लैण्ड से अलग हो गया था। उन दोनों के बीच प्राचीन भूमध्यसागर था। एक विशाल भूखण्ड विभाजित हो कर सरकते हुए वर्तमान अवस्था में पहुंचा है। इसी को कॉर्टीनेंटल ड्रिफ्ट थ्योरी कहते हैं।

सन 1960 से पहले भूविज्ञानी वेगनर की परिकल्पना को सही साबित करने वाले प्रमाण नहीं खोज पाए थे। आज उनके पास इस तरह के कई तथ्य हैं। आधुनिक टोपोग्राफिक कोर (Topographic core) नमूना की तकनीकों का सहारा लेकर पृथ्वी की मूल आकृति का आज ज्यादा अच्छी तरह पता लगाया जा सकता है तथा पृथ्वी के खिसकने की व्याख्या की जा सकती है।

कुछ वर्ष पूर्व एंटार्कटिका (दक्षिण ध्रुव) के विशाल बर्फीले मैदान पर पाए गए एक विलुप्त जन्तु के अवशेष के साक्ष्य के आधार पर वैज्ञानिकों ने परिणाम निकाला था कि किसी समय आस्ट्रेलिया, दक्षिण एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप एक दूसरे से जुड़े हुए थे। इस रहस्य के उदघाटन से पूरे विश्व में तहलका मच गया। अमेरिका के दो सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. रोबर्ट एस. दिआज और डा. जान सी. हाल्डन ने इसी नतीजे तक पहुंचने के लिए दूसरा मार्ग अपनाया। अपने नतीजे पर पहुंचने के लिए उन्होंने जिन दिशाओं में अध्ययन और प्रयोग किए वे हैं—

महाद्वीपों के तैरने अथवा खिसकने की गति, उनके खिसकने की दिशा, उनकी सीमा रेखाएं, उनकी वर्तमान स्थितियां, समुद्र-गर्भीय पर्वत श्रेणियों का विस्तार, चुम्बकीय जल क्षेत्रों की पुरानी दिशाएं तथा भूगर्भीय संकल्पना में समानताएं।

उपर्युक्त सभी सूत्रों का अध्ययन वर्षों तक करने के बाद दिआज और होल्डन ने निष्कर्ष निकाला कि अब से लगभग 22 करोड़ 50 लाख वर्ष पहले पर्मियन युग में सभी महाद्वीप एक दूसरे से जुड़े हुए थे और पृथ्वी पर केवल एक विशाल महाद्वीप के रूप में थे। जाहिर है कि महासागर भी केवल एक ही था। इस महाद्वीप को पेंजिया कहा जाता था। पेंजिया के समय में दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका से लगभग

नि वन मटा हआ था और अमरिका का पूर्वी समुद्र तट उत्तरी अफ्रीका क भूखण्ड म चिपका हआ था। भारत दक्षिण अफ्रीका और एटार्कटिका क नीच दबा हआ था। आस्ट्रेलिया महाद्वीप एटार्कटिका का एक हिस्सा था। दिआज और हाल्डन क मतानसार यह विशाल महाद्वीप पथ्वी क एक किनार पर 60 अंश पश्चिम दशातर स 120 अश पव दशानर तक स्थित था। उस समय तक पृथ्वी की आयु करीब साढ़ चार अरब वष हा चकी थी। पथ्वी पर कुछ पड-पौधा ने जन्म ल लिया था और कुछ प्रकार क कीट पतग भी उत्पन्न हा चुक थ।

लौरिन पजिया की आयु अधिक न रह पायी। करीब 50 लाख वष बीतन-बीतन वह टुकडा म विभाजित हाना आरम्भ हा गया। सबस पहल वह कवल दा भागा म विभक्त हआ—पहला उत्तर म लारसिया तथा दक्षिण म गाडवाना लण्ड। लारसिया म उत्तरी अमरिका तथा एशिया साम्मलित थ आर गाडवाना लण्ड म दक्षिण अमरिका अफ्रीका भारत आस्ट्रेलिया तथा एटार्कटिका थ।

अब स लगभग 13 करोड 50 लाख वष क आसपास दा विशाल भू-भाग आर छोट भागा म विभक्त हा गए। 6 करोड 50 लाख वष क लगभग य महाद्वीप धीर धीर सरक कर हा एक दसर स पथक हात गए आर अत म वतमान स्थिति म पहच गए।

भूगभशास्त्रिया का विचार ह कि पृथ्वी पर महाद्वीप आर महासागर लगभग 80 किलोमीटर अथवा उसस अधिक मोटी एक ठोस परत पर थ। यह परत लाखा वर्ग किलोमीटर क्षत्र पर फली हुई ह। य विशालाकार परत पथ्वी क गभ क्रोड पर तरती अथवा फिसलती रहती ह। दिआज और हाल्डन क अनुसार महाद्वीपा आर महासागरा क फिसलन का कारण यही परत है।

अमरिका क दो अन्य भूगभ शास्त्रिया डा जॉन एम वुड आर डा जॉन एफ डवी न अपन अध्ययन म यह निष्कष निकाला कि उपर्युक्त कारण स इसी प्रकार फिसलत हुए जब भारत उपमहाद्वीप का भूखण्ड एशिया महाद्वीप क भूखण्ड स टकराया तो एक गहरी खाइ-सी बन गइ। दोनो भूखण्ड दबत रह आर उनक किनार नीच की आर धसत गए। ऊपर की परत गभ क्रोड की आर चली गई। अत म नीच जब य दोनो किनार आपस म टकराए तो य तजी स ऊपर की आर उठ गए आर पथ्वी की सतह पर एक विशाल पवत का रूप ल लिया जिस हिमालय कहा जाता ह। पवतो क निर्माण क कई तरीको म स यह भी एक तरीका ह।

दूसर तरीक स दक्षिण अमरिका क एडीज पवत की उत्पत्ति हुइ है। तब महासागर वाली तह खिसक कर महाद्वीप वाली तह क नीच चली गयी तथा पथ्वी की सतह ऊपर की आर उठ आयी जो बाद म एडीज पवत श्रणी क रूप म जानी जान लगी।

एसा माना जाता है कि पथ्वी क बड-बड पवतो की रचना महाद्वीपो क अलग होन की प्रक्रिया क साथ हुई होगी। अत अतीत की जानकारी बिल्कुल ठीक-ठीक तो प्राप्त नही की जा सकती पर यह कहना असगत न होगा कि जो स्थिति आज महाद्वीपो की है वह प्राचीन काल म नही थी और आग भविष्य म नही होगी।

भूगभशास्त्रियो न अध्ययन कर यह निष्कष निकाल लिया ह कि सभी महाद्वीप कम या अधिक गति म लगातार खिसक रहे हैं।

प्रश्न यह ह कि क्या हमार महाद्वीप आज भी स्थिर नही हैं? क्या महाद्वीपा ओर महासागरा की स्थिति वही ह जा परानी जमी हुइ बफ पर नई जमी हुइ बर्फ की परत की तह की होती ह। जब गर्मी का मासम आता हे ता नई परत पिघल कर परानी परत पर फिमलन लगती ह। क्या यह गर्मी का मोसम वतमान विश्व क लिए एक्दम आएगा या यह प्रक्रिया इतन धीर-धीरे चलेगी कि पृथ्वी क खिसकने का पता ही नही चल मकगा?

● ●

# नाज्का सभ्यता का रहस्यमय संदेश

*आधुनिक अमेरिकी पुरातत्त्वशास्त्र की सबसे बड़ी समस्या है नाज्का सभ्यता द्वारा धरती के एक विशाल क्षेत्र पर रहस्यमय रेखाओं की शक्ल में छोड़ा गया सदेश जिसका रहस्य आज तक पता नहीं चल पाया है।*

*क्या डेढ़ हजार साल पहले नाज्का आदिवासी हवा में उड़ने का रहस्य जान गए थे? नाज्का रेखाओं में बनी आकृतियाँ इतनी विशाल हैं कि उन्हें एक बार में पूरा आसमान द्वारा ही देखा जा सकता है। क्या आसमान में उड़े बिना उन्हें बनाया आकृतियों को बनाया जा सकता था?*

*नाज्काओं की इन ज्यामितीय रेखाओं का रहस्य जानने के लिए एक पुरातत्त्वशास्त्री ने तो अपना पूरा जीवन ही अर्पित कर दिया है, लेकिन क्या हम इन रेखाओं में छिपे गए अर्थों का खुलासा भी जान सके हैं?*

दक्षिणी पेरू के प्रशांत सागरीय तट से लेकर एण्डियन पर्वतमालाओं की तलहटी के बीच फैला नाज्का (Nazca) क्षेत्र के मैदानों में नाज्का लोगों का रहस्यमय संदेश बिखरा पड़ा है। यह संदेश रेगिस्तान में दूर-दूर तक विचित्र रेखाओं के ज्यामितीय आकारों, पक्षियों की दैत्याकार आकृतियों तथा अजीब किस्म के जीवों के रेखाचित्रों के रूप में मौजूद है। ये रेखाएँ हमें क्या बताती हैं, यह अभी तक अज्ञात है। ये आकृतियाँ इतनी विशाल हैं कि अगर इन्हें एक बार में पूरा देखने के लिए 1000 फुट ऊपर तक जाना पड़ता है। ऐसा लगता है कि ये आकृतियाँ हजारों वर्ष पहले पृथ्वी पर किसी दूसरी दुनिया से आए अपार्थिव लोगों ने बनाई होंगी लेकिन इन आकर्षक लगने वाले अनुमानों से नाज्का रेखाओं का रहस्य और गहरा हो जाता है। ये रेखाएँ अपनी विशालता तथा अपनी डिजाइन के अनोखेपन के कारण किसी विज्ञान कथा या उपन्यास का अंग लगती हैं।

इन मैदानों में पिछले 10 000 वर्षों से एक बार भी वर्षा नहीं हुई है। दक्षिण पेरू के ढलानों पर हुए मिट्टी के क्षरण (erosion) को अमेरिका के अंतरिक्ष वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर हो रहे क्षरण के मुकाबले ठहराते हैं। इन मैदानों की असाधारण शुष्कता ने ही नाज्का लोगों द्वारा बनाई गई इन डेढ़ हजार वर्ष पुरानी रेखाओं को सुरक्षित रखा है। ये रेखाएँ कंकड़ों की दो समानांतर कतारों से बनी हैं जिनमें लोहा तथा लोहे का आक्साइड भी शामिल है।

सन 1941 में पहली बार इन रेखाओं के रहस्य की ओर वैज्ञानिकों की निगाह गई। लांग आइलैण्ड विश्वविद्यालय के अमेरिकी प्रोफेसर डा. पाल कासोक (Paul



मारिया रीशे  जर्मन गणितज्ञ व खगोलज्ञ जिन्होंने अपना पूरा जीवन नाज्का रेखाओ के अध्ययन म खपा दिया।

Kosok) ने पहली बार इन रेखाओ का अध्ययन किया। हवाई जहाज म बैठ कर इन रेखाओ को देखने के बाद डा पाल न इन्हे विश्व की 'महानतम खगोलशास्त्र की पुस्तक' करार दिया।

इसके बाद जमन गणितज्ञ व खगोलशास्त्री श्रीमती मारिया रीशे (Maria Reiche) ने इन रेखाओ का अध्ययन किया। 70 वर्ष की हो जाने के बाद भी व विगत 30 वर्षो से पेरु के इन रेगिस्तानों मे खोज का कार्य कर रही हैं। उन्होने इन रेखाओ म सेकडो तिकोन व चतुष्कोणिक आकार, सीधी रेखाओ के जाल, तारो की आकृतिया तथा 100 दैत्याकार पशु-पक्षियो व वनस्पतियो के रेखाचित्र खोज निकाल हैं। ये रेखाए 200 वर्ग मील के विशाल क्षेत्र मे फैली हुई हैं। नाज्काओ न अपनी रहस्यमय कलाकृतियो के लिए सूखी नदियो से घिरे क्षेत्रो तथा विस्तृत समतल इलाको को चुना है। इन रेखाओ के निर्माण मे टनो छोटे-छोटे ककडो का प्रयोग हुआ होगा। पृथ्वी को दैत्याकार कैनवास समझ कर पहल योजना बनाई गइ होगी तथा उसके बाद 6 वर्ग फुट के छोटे-छोटे नमूने के चित्र बनाए गए होग जो आज भी दैत्याकार चित्रो के समीप मिल सकते हैं। मारिया रीशे का अनुमान है कि प्रत्यक बडे चित्र के लिए नाज्काओ ने निर्धारित क्षेत्र को अनुभागो (sections) मे बाटा होगा तथा उसके बाद डोरियो की मदद से उन्हाने सीधी रेखाए बनाई होगी। वे स्तम्भ आज भी इस रेगिस्तान मे मिलते हैं, जिनसे ये डोरिया बाधी गई थी। कार्बन-14 की तकनीक से इन खम्भो की आयु 500 ईस्वी मानी गई है। इन चित्रो म चापे (arcs) भी बनी हुई हैं। मारिया रीशे ने नापन की वह इकाई भी खोज निकाली है, जिसका नाज्का लोगो ने प्रयोग किया होगा।



50 गज लबा मकडी का चित्र जो केवल एक रेखा से बनाया गया है।

नाज्का प्राचीन वतन के एक टुकडे पर बने एक चित्र के आधार पर अतराष्ट्रीय
अन्वेषक संस्था के दो सदस्यो जूलियन नाट (Julion Knott) तथा जिम वुडमेन
(Jim Woodman) का दावा है कि नाज्का लोगो के पास कोई न कोई
वाययानसमा वाहन अवश्य रहा होगा वरना वे बिना ऊपर से देखे इन चित्रो को
नही बना सकते थे। उस वर्णन पर बने चित्र को ये दोनो अन्वेषक एक वायुयान ही
बताते है।

बाद मे इसी आधार पर वनस्पति के रेशो से रस्सिया बनाई गई तथा एक गैस-बैग
(Gas bag) बनी गई। सरकण्डो की एक टोकरी बनाई गई। इस तरह एक
आदिम गुब्बारा बनाया गया। कुछ ही मिनटो मे इस गर्म हवा के गुबार ने
अन्वेषको को 600 फुट की ऊचाई पर पहुचा दिया। थोडी देर मे यह गुब्बारा
अचानक नीचे गिर गया लेकिन जैसे ही अन्वेषक उस टोकरी से उतरे गुब्बारा
फिर उडा और 1200 फुट ऊचाई पर पहुच कर 20 मिनट तक उडता रहा। उसने
3 मील की दूरी तय की। इस प्रयोग से इस अनुमान को बल मिला कि हो न हो
नाज्काओ के पास वायु से हल्का कोई उडन-यत्र अवश्य मौजूद था।

विद्वानो का विचार है कि पडोस के पराकास (Paracas) क्षेत्र मे नेक्रोपोलिस
(Necropolis) नामक स्थान पर गडी 4 सौ नाज्का ममियो के मिलने से नाज्का
लोगो के बारे मे काफी रहस्यो पर से आवरण हट जाने की सभावना है। ये ममिया
नाज्का शासक वर्ग के सदस्यो की हैं जो 2 हजार वर्ष पूर्व अत्यत जटिल कर्मकाण्डो
के साथ दफनाए गए होगे। इन ममियो को बहुत लम्बे अच्छे किस्म के कपडे मे
लपेट कर रखा गया है जिन पर बहुरगी ऊन से कढाई की गई है। कढाई के

डिजाइना म विचित्र मुखाट पहने हुए ऐसे लोगो का उडत हुए या हवा म कलाबाजिया खात दिखाया गया ह, जिनके शरीर से फीते लटक रहे ह। क्या नाज्काआ ने ऐसी पतगो का निमाण कर लिया था जो मनुष्या को अपने साथ उडा सकती थी?

परु क पुरातत्वशास्त्र के कइ विशेषज्ञो मे इस बात पर सहमति ह कि नाज्का रखाआ का उद्देश्य खगालीय कलण्डर का निमाण करना था। इन रखाओ क अलावा इन समतलो की शुष्कता स निवटने के लिए नाज्काआ न एक एमी सिचाइ की व्यवस्था विकसित कर ली थी जिसक कारण वे वप मे तीन फसले उगा लेत थ। इन रखाआ की मदद स उन्हाने मासमो का अध्ययन करना प्रारम्भ किया हागा। कछ रेखाए पहली बार होने वाली वर्षा की सूचक हे। आज भी एण्डीज पवतमालाआ क कइ किसान मितारा का दखकर वषा क समय का पता लगा लत हैं। नाज्का किसान खाद के रूप मे हम्बाल्ट (Humboldt) जल धारा की मार्डीन (Sardines) मछलियो का प्रयोग करते थ। वे समुद्री चिडिया की उडान का अध्ययन करके मासम क आगमन का पता लगा लत थे।

नाज्का रखाओ म चित्रित विचित्र किस्म के जानवरा का सबध तारामडला की पशुआ क रूप म कल्पना कर लन स हा मकता ह—एमा कुछ विद्वानो का विचार ह। कुछ अन्य अध्यताओ का खयाल ह कि य आकतिया आर कुछ नही वरन प्राचीन जादुइ कमकाण्डा की प्रतीक ह। कृषि काय म सलग्न सभ्यताआ का त्याहार बनान की आर अग्रसर हाना स्वाभाविक ही ह। इन रेखाओ म नाज्का त्याहारा व समूह नत्या की झलकिया भी मिलती ह।

रेखाआ मिलन वाले तिकानो ओर चतुष्कोणो की व्याख्या पर भी काफी विवाद हे। क्या य आकतिया खगालीय प्रेक्षण (observation) की प्रतीक ह या सभा-स्थलो की? य आकतिया नाज्का देवताओ क लिए दी जान वाली आहुतिया क स्थान हैं अथवा आत्माआ की पहरेदारी म रहने वाली पवित्र जमीन क प्रतीक हैं?

सन 1960 म खगोलविद् जगल्ड एस हाकिन्स (Jerald S Hawkins) ने 93 तरह के सरेखणा (alignments) तथा 45 तारो की आकृतियो को एक कम्प्यूटर मे भरा। इस मामग्री के माथ एक मुख्य प्रश्न भी शामिल था—क्या ईसा 500 वर्ष पूर्व स अब तक सूर्य, चद्रमा व तारो का सरेखण नाज्का रखाओ से मेल खाता हे? कम्प्यटर ने जो उत्तर दिया वह निराशाजनक था। उसने कवल कुछ सरेखणो म समानता दिखाइ जा किसी व्यवस्थित योजना की पैदावार नही हा सकती थी। पेरु सरकार न इन रेखाओ का देखने आने वाले पर्यटनो का पैरो और वाहनो से रेखाआ का बचाने के लिए कुछ प्रतिबध लगाए हैं। इन रेखाओ का सुरक्षित रहना जरूरी है ताकि मारिया रीशे जेसे समर्पित वैज्ञानिक इन पर शोधकार्य करक मानव के अतीत के अधेरे पृष्ठो पर प्रकाश डाल सके।

••

# पुनर्जन्म का रहस्य

पुरानी दिल्ली में रहने वाली 3 वर्षीया शांतिदेवी अपने पूर्व जन्म से संबंधित अतीत का सारा हाल बता देती थी। उसे अपने पति, मथुरा स्थित अपने घर और अपने पुत्र की स्मृति शेष थी। इतना ही नहीं वह अपने पूर्वजन्म के रिश्तेदारों तक को पहचान लेती थी।

पूर्वजन्म की स्मृतियों संबंधी यह कोई प्रथम घटना नहीं थी। विश्व के हर कोने से इस तरह के उदाहरण सामने आते रहे हैं। इन लोगों ने [illegible] से एकदम सही तथ्य देते हुए अपने पूर्वजन्म के बारे में चर्चा की है।

इतना सब होते हुए भी विज्ञान तो प्रमाण मांगता है। वह कुछ उदाहरणों के आधार पर ही पूर्वजन्म को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। प्रश्न उठता है कि यदि विज्ञान पुनर्जन्म होने को नहीं स्वीकार करता तो उसके न होने को क्यों नहीं सिद्ध कर देता?

---

विश्व के तमाम धर्मों, विशेष रूप से हिन्दू धर्म की दृढ़ मान्यता है कि मृत्यु के बाद शरीर मर जाता है लेकिन आत्मा नहीं मरती। वह किसी दूसरे शरीर के रूप में पुनर्जन्म लेती है। प्रत्येक जन्म में हमें पिछले जन्मों के कर्मों का फल भोगना पड़ता है लेकिन आधुनिक युग तो तर्क तथा विज्ञान का युग है। वह प्रत्येक दावे का प्रमाण मांगता है। बिना तथ्यात्मक प्रमाण के पुनर्जन्म या अन्य किसी ऐसी ही घटना को विज्ञान मान्यता नहीं देता और वह केवल कपोलकल्पना या किस्से कहानियों की बात बन कर रह जाती है। पुनर्जन्म के क्षेत्र में जैसे ही हम तथ्यों की जांच करने के लिए जाते हैं वैसे ही उनका रहस्य खुलने की बजाए और भी गहरा होता जाता है।

इस संबंध में सर्वाधिक उल्लेखनीय उदाहरण है भारत की शांति देवी का जिन्होंने 3 वर्ष की आयु से ही अपने पिछले जन्म का हाल सुनाना प्रारम्भ कर दिया था। सन 1929 में पुरानी दिल्ली में जन्मी शांतिदेवी ने अपने मां-बाप से एक दिन कहा कि उनके पिछले जन्म के पति का नाम केदारनाथ है, जो मथुरा में रहते हैं। उनका घर पीले रंग से पुता हुआ तथा बड़े मेहराबदार दरवाजों व नक्काशीदार खिड़कियों से युक्त है। मकान के विशाल अहाते में गेंदे तथा चमेली के फूल लगे हुए हैं। उनके बच्चे आज भी अपने पिता के साथ उसी मकान में रहते हैं।

जैसे ही समाचारपत्रों में यह कहानी प्रकाशित हुई, इसके तथ्यों की जांच-पड़ताल प्रारम्भ हो गई। शांति देवी का कहना था कि पूर्व जन्म में उसकी मृत्यु बच्चे को जन्म देते समय हुई थी। बच्चा जीवित रह गया था तथा मां की मृत्यु हो गई थी।

अलग-अलग देशा मे अलग-अलग ह। तुर्की म 8 माह, भारत म 56 माह आर श्रीलका मे 21 माह तथा अलास्का में यह अतर 48 माह तक का हे। इमक अलावा दुर्घटनाग्रस्त होकर मरने वाल मामला म पुनजन्म का किस्मा अधिक मुनने का मिलता हे। श्रीलका म 40 प्रतिशत तथा लवनान आर मीरिया क कुछ क्षत्रा म 80 प्रतिशत तक ऐसे मामले मिनत ह"। अक्सर उस जन्म म इस जन्म म लिग परिवर्तन भी हा जाता ह तथा माताआ का गभावस्था क दिना मे किसी आत्मा का सदेश भी सुनाइ पडता ह कि वह उमक वच्चे क रूप म जन्म लन वाली ह।

प्राचीन विद्वानो, वाईविल तथा अन्य प्राचीन ग्रन्था, प्लटा जम यूनानी विचारका ने भी मृत्यु के पश्चात् भी जीवन की निरतरता, आत्मा की अमरता तथा पूव जन्म की स्मृतियो के शेप रह जान का उल्लेख किया ह। तिब्वत की दलाइलामा परम्परा एक ऐसी परम्परा मानी जाती ह जिसमे मत्य की तरफ वढता दलाइलामा उम जगह के वारे म सकत वता जाता ह, जहा नया दलाइलामा पदा हागा। कहा जाता ह कि वर्तमान 13वे दलाइलामा को सन 1936 म इसी तरह खाजा गया था। 14व दलाइलामा ने अपने खोजे जान का विस्तत वणन 'माइ लण्ड एण्ड माइ पीपुल नामक पुस्तक मे किया ह, जा पुनजन्म क अस्तित्व का अभूतपूव दस्तावज लगता ह। हिंदू धम म विष्णुअवतार राम व कृष्ण क आख्यान भी पुनजन्म की धारणा का पुष्ट करते ह।

साधारण व्यक्तियो ने ही नही, दलाइलामा क अतिरिक्त अनक महान व्यक्तिया न पुनजन्म की धारणा की पुष्टि की ह। अमेरिकी जनरल जॉज पटन (George Patton) का विश्वास था कि पूव जन्म म वे एक रामन याद्धा थ। 19वी शताब्दी म महिला नता तथा लन्न की थियामोफिकल मोसाइटी की अध्यक्षा श्रीमती एन्नी बसण्ट (Annie Besant) का दृढ विश्वास था कि उनका पुनजन्म अवश्य हागा।

विगत जीवन आर वतमान जीवन क बीच जा अतराल हाता ह उमक बार म बताने मे अभी तक लाग असफल रहे ह। मान लीजिए एक व्यक्ति का याद आता ह कि पूर्व जन्म मे उसकी मत्यु सीढिया स गिरन क कारण हइ थी। यदि उसक वतमान जन्म और पूव मृत्यु मे दो वप का अतर रहा ह ता वह यह नही बता पाता कि इन दो वर्षो म उसका अस्तित्व कहा आर किम रूप मे रहा हागा। अक्सर पाया गया हे कि 5 वर्ष तक क वच्चे ज्यादा अच्छी तरह अपना भूतकाल याद कर पात ह। 6-7 वप की उम्र होन पर उनकी स्मति धुधली हा जाती ह आर वड हान पर व विल्कुल भूल जात हे। इस तरह की वाता का कोइ ताकिक उत्तर न ता विज्ञान द पाया हे और न ही परामनोविज्ञान।

डा स्टीवमन न आज तक 1 600 एस मामला की जाच की ह जिनम पूव जन्म की यादे हान का दावा किया गया ह। उनका कहना था कि जा लाग पूव जन्म म डूब कर मरत हैं, वे इस जन्म म भी पानी से डरत हें। पनडुब्बी क इजन चलाने नाचन-गाने, सीने की मशीन चला लने, इत्यादि जेसी पूव जन्म की योग्यताए इस

जन्म म भी लागा म दखी गइ ह। हिप्नाटिज्म द्वारा भी कइ लागा का उनकी पूव जन्म की याद दिलान की काशिश की गइ है, जिसम एक सीमा तक सफलता भी मिली ह। स्टीवसन न 200 लागा क शरीर पर एस निशान पाए जा जन्म स ही थ और वही निशान उनक शरीर पर पूव जन्म म भी थ। इनम गोलिया म लकर धारदार हथियारा तक क घावा क निशान शामिल ह।

डा स्टीवसन क ही शब्दा म पुनजन्म क रहस्य की निम्न शब्दा म व्याख्या की जा सकती ह— न हम कभी यह सिद्ध कर सकत हैं कि पुनजन्म नही हाता आर न ही हम उसक हान का प्रमाण ही दे सक्त हें। आज तक मैंने जिन मामला की जाच की है, उनम कमिया थी आर कइ म ता काफी गम्भीर कमिया भी थीं। किसी एक मामल मे या सभी मामला म सयक्त रूप स भी आज तक पुनजन्म का काइ निश्चित प्रमाण नही मिल सका। हा इन सभी मामला म एसी घटनाए आर गवाहिया अवश्य मिलती ह जा पुनजन्म की आर इशारा भर करती ह।'

••

# बरमूदा ट्राइएंगिल का रहस्य

*क्या वास्तव में अटलांटिक महासागर के त्रिकोणात्मक जल क्षेत्र में कोई रहस्य छिपा हुआ है या सिर्फ बरमूदा ट्राइएंगिल मानवीय कल्पना की उड़ान भर है?*

*इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आज तक काफी साहित्य लिखा जा चुका है। अमेरिकी और सोवियत वैज्ञानिक इस रहस्यमय जल क्षेत्र में होने वाली दुर्घटनाओं की जांच पड़ताल कर चुके हैं। अभी भी लोग इस निष्कर्ष पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं हैं कि बरमूदा ट्राइएंगिल में कोई अपार्थिव शक्ति अपना प्रभाव नहीं छोड़ रही है। मिथकों और दंतकथाओं से घिरा हुआ त्रिकोण आज भी विश्व भर के समुद्रों का सबसे बड़ा रहस्य बना हुआ है।*

विश्व भर के समुद्रों का सबसे महान और अनसुलझा रहस्य है बरमूदा त्रिकोण अथवा बरमूदा ट्राइएंगिल (Barmuda Triangle)। पश्चिमी अटलांटिक सागर के इस त्रिकोणात्मक जल-क्षेत्र द्वारा नष्ट किए गए अथवा गायब हुए जहाजों, विमानों तथा मारे गए व्यक्तियों की संख्या सैकड़ों में जा पहुंची है लेकिन अभी तक ऐसा कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिला है कि इस ट्राइएंगिल के रहस्य पर से पर्दा उठ सके।

इस कुख्यात त्रिकोण के एक सिरे पर फ्लोरिडा (Florida), दूसरे पर बरमूदा (Bermuda) तथा तीसरे पर प्यूटो रिको (Puetro Rico) है। प्रारम्भ में इस क्षेत्र में गायब हुए जहाजों को मात्र एक संयोग समझा गया। फिर इन दुर्घटनाओं की संख्या इतनी बढ़ गई कि इस रहस्य की जांच-पड़ताल करनी जरूरी हो गई कि आखिर बरमूदा त्रिकोण के शिकार अपने पीछे ऐसी कोई निशानी क्या नहीं छोड़ जाते, जिससे उनकी दुर्घटना के कारणों पर प्रकाश पड़ सके।

मानव की कल्पना जहां तक उड़ान भर सकती है, वहां तक जा-जा कर इस ट्राइएंगिल के विचित्र व्यवहार के बारे में सिद्धांत गढ़े जा चुके हैं। कुछ का कहना है कि यह क्षेत्र इतने अधिक गुरुत्वाकर्षण तथा चुम्बकीय विस्थापन (deviation) से युक्त है कि यहां पहुंचते ही रेडियो खराब हो जाते हैं तथा दिशासूचक गलत संकेत देने लगता है। कुछ अन्य का कहना है कि अटलांटिक महासागर में डूब चुकी रहस्यमय अटलांटिस सभ्यता की मशीनें आज भी कहीं काम कर रही हैं और उनका ही असर इस तिकोने जल-क्षेत्र पर पड़ता है। तीसरी दिलचस्प व्याख्या यह है कि यह त्रिकोण बाह्य अंतरिक्ष से आने वाले यात्रियों की शिकारगाह बन चुका है।



अमरिकी और रूसी वैज्ञानिकों ने बरमूडा त्रिकोण के पानी की जांच करने पर वहां कुछ भंवर ही पाए लेकिन उन्हें कोई रहस्यमय शक्ति नहीं मिली।

मजेदार और आश्चर्य की बात यह है कि बरमूडा ट्राइएंगल की दुर्घटनाओं की शुरूआत और ज्यादा पुरानी नहीं है। यह प्राचीन किंवदंती न हो कर बरमूडा ट्राइएंगल पहली बार सन 1964 में आरगोसी (Argosy) नामक पत्रिका के लिए विन्सेंट गैडिस (Vincent H Gaddis) द्वारा लिखे लेख में प्रकाश में

आया। बाद में कई अन्य लेख प्रकाशित हुए, जो गॉडिडम के लेख का ही पुनर्लेखन-सा प्रतीत होते थे। रहस्यमय विषयों के प्रख्यात लेखक इवान टी सैण्डरसन (Ivan T Sanderson) ने गॉडिडम के इस तर्क को सही ठहराया कि बरमूदा टाइएंगिल विश्व भर में फैले हुए उन घातक और रहस्यमय क्षेत्रों में से एक है, जहां विध्वंसकारी दुर्घटनाएं घटती रहती हैं। उन्होंने इन क्षेत्रों को 'वाइल वार्टईसिज (Vile vortices) का नाम दिया।

सन् 1973 मे एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ने भी बरमूदा टाइएंगल को अपने संकलित ज्ञान में शामिल कर लिया। इसी वर्ष जॉन वेलस स्पेंसर (John Wallace Spencer) की इसी विषय पर पुस्तक 'लिम्बो ऑफ दॉ लॉस्ट' हाथो-हाथ बिक गई। सन् 1974 मे चार्ल्स बर्लिट्ज (Charles Berlitz) की पुस्तक 'दॉ बरमूदा टाइएंगल' और भी अधिक बिकी। सन् 1975 में लारेंस डी कुस्शे (Lawrence D Kusche) ने बरमूदा टाइएंगिल के रहस्य को हल कर देने का दावा करने वाली पुस्तक लिखी—'दॉ बरमूदा ट्राइएंगल मिस्टी-साल्व्ड'।

कुस्शे ने इस पुस्तक के माध्यम से जो सबसे अधिक मूलभूत प्रश्न उठाया वह यह था कि क्या वास्तव में बरमूदा टाइएंगिल में कोई रहस्य भी है? सन् 1800 से इस जल-क्षेत्र में जहाजों और विमानों के खो जाने की रिपोर्टों का विस्तृत विश्लेषण करके कुस्शे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कई मामलों में वे यान या तो गायब ही नहीं हुए थे या उनका गायब होना व्याख्या तथा तर्कों की सीमा के भीतर ही था। कुस्शे ने अन्य सागर क्षेत्रों में हुई दुर्घटनाओं की संख्या और प्रकृति से तुलना करके भी अपनी बात सिद्ध की।

बरमूदा त्रिकोण की सबसे विख्यात दुर्घटना थी पांच तारपीडो बॉम्बर यानों की दुर्घटनाएं जिन्हें अनुभवी चालक और उनके सहायक चला रहे थे। 5 सितम्बर सन् 1945 को इस त्रिकोण में ये यान बड़े रहस्यमय तरीकों से लापता हो गए। इनकी उड़ान का नेतृत्व करने वाले चालक ने फोर्ट लाडरडेल (Fort Laderdale) के नियंत्रण कक्ष से सम्पर्क करके इतना संदेश दिया था "हम नहीं जानते कि पश्चिम किस दिशा में है। सब कुछ गलत हो गया है विचित्र हम कोई भी दिशा ठीक से ज्ञात नहीं है। यहां तक सागर भी जैसा लगना चाहिए वैसा नहीं लग रहा है।" 4 25 अपराह्न नियंत्रण कक्ष में अंतिम अधूरी आवाज सुनाई दी "हम इस समय अपने अड्डे से 225 मील उत्तरपूर्व में होना चाहिए। ऐसा लगता है कि हम ।" इसके बाद शांति छा गई।

इन 5 बॉम्बरों का पता लगाने के लिए तुरंत 13 व्यक्तियों से युक्त मेरिनर फ्लाइंग बोट भेजी गई। यह बोट भी कुछ देर के बाद उसी तरह गायब हो गई। न तारपीडो बॉम्बरों का पता चला और न ही मेरिनर का। कुस्शे ने इस दुर्घटना का भी विश्लेषण किया। कुस्शे का ख्याल था कि मेरिनर व बॉम्बर गायब अवश्य हुए हैं लेकिन 400 पृष्ठ लम्बी जल सेना की इस दुर्घटना संबंधी रिपोर्ट पढ़ने से साफ हो

जाना ह कि यह कहानी जसी वताइ जाती ह वैसी है नही। वॉम्वरा क पायलर अनभवी नही थ। फ्लाइट लीडर लफ्टीनट चाल्स टलर (Lt Charls Taylor) क अलावा अन्य 4 चालक अभी छात्र ही थ। स्वय चाल्स क लिए वह इलाका नया था। इसक अलावा उपर वताया गया रडिया सम्पक भी वास्तव म स्थापित न हआ था। टलर का सही सदश यह था कि उसक दिशासूचक म कुछ गडवडी ह गइ ह तथा दिशाज्ञान न हा पान क कारण वह भटक गया ह। इस प्रकार 8 नज गांत्रा नक दिशा तलाश करत-करत वॉम्वरा का इधन खत्म हा गया तथा व खराब मासम क कारण रात क अधर म दुघटनाग्रस्त हा गए।

मरिनर फ्लाइग वाट यान 7 27 वज शाम क अधर म उडा। 20 मिनट वाद भार क एक जहाज गनास मिल्स (Gainas Mills) क डक पर खड दर्शका न आकाश म एक विस्फाट हात दखा। मरिनर याना क लिए इस तरह ध्वस्त हा जाना काइ नइ वात नही थी। विमानचालक इन विमाना का 'फ्लाइग गैस टैंक' कहत थ।

वरमदा टाइर्एगल क पानी की जाच करन क लिए अमरिकी आर रूसी वनानिका न मिला जला प्रयास किया। रूसी वज्ञानिका न पाया कि इस तिकान जलक्षत्र म कछ भवर अवश्य वनती ह लकिन काइ रहस्यमय शक्ति काम नही करती।

25° स 40° उत्तरी अक्षाश आर 55° स 80° पश्चिमी दशातर रखाआ क बीच स्थित 3 900 000 वग किमी क्षत्रफल वाल इस रहस्यमय तिकाण क साथ आर भी कइ महत्वपण दुघटनाए जुडी हुइ हैं। कुछ न इन सभी दुघटनाआ क तथाकथित रहस्य का उत्तर दन की कोशिश की ह लकिन अभी भी वरमूदा तिकाण क वार म विचित्र-विचित्र धारणाआ क वनन की प्रक्रिया जारी ह।

अमरिका कास्ट गाड न इस वार म कहा ह कि कभी-कभी प्रकति की कुछ घटनाए तथा मनष्य की कल्पनाशक्ति कइ वार विज्ञान कथानका क लिए अच्छी खासी सामग्री प्रस्तत कर दती ह। क्या वास्तव म वरमूदा ट्राइएंगल का रहस्य कुछ की पस्तक स सलझ गया ह? तव प्रश्न यह उठता है कि आखिर इतनी सारी दुघटनाए एक ही निश्चित क्षत्र म क्या हुइ? जव तक इस प्रश्न का उत्तर नही मिलता तव नक इस रहस्य का पूण निराकरण सभव नही है।

••

# स्टोनहेज के रहस्यमय पत्थर

*ब्रिटेन की धरती पर खड़ा हुआ स्टोनहेज का रहस्यमय स्मारक रहस्यों के घेरे में घिरा हुआ है। विज्ञान के सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ-साथ आध्यात्मवादी, अतींद्रियता के स्वामी तथा सनकी अफवाहबाजों ने इस रहस्यमय स्मारक के भूतकाल के बारे में जानने की भरपूर चेष्टा की है।*

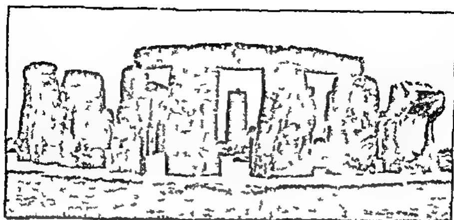
*क्या यह स्मारक सूर्य देव का मंदिर है या इसे एक शाही महल के रूप में बनाया गया था? क्या यूनानियों द्वारा गणित की जानकारी किए जाने से भी पहले के इस स्मारक को एक विशालकाय आदिकालीन कम्प्यूटर के रूप में देखा जाना चाहिए?*

*क्या कभी इन दैत्याकार पत्थरों के नीचे दबा रहस्य खुलेगा या यह स्मारक यूं ही पर्यटकों को आश्चर्यचकित करता रहेगा?*

दक्षिणी इंग्लैंड में सेलिसबरी के मैदानी इलाको में खड़े हुए धूसर बलुआ पत्थरों के एक स्मारक का नाम स्टोनहेज (Stonehenge) है। 13 फुट ऊंचे ये पत्थर थोड़ी दूर से देखन पर उस विशालकाय मैदान के मुकाबले बहुत छोटे और अपने एकांत में डूबे हुए से दिखाई पड़ते हैं। पिछले 4 हजार वर्षों से इन्होंने हवा, धूप, वर्षा, पाले का सामना किया है लेकिन इसके बाद भी उन पर उन औजारों के निशान मौजूद हैं, जिनसे इन्हें गढ़ा गया होगा। स्टोनहेज प्रागैतिहासिक काल का एक मात्र स्मारक है, जो कृत्रिम रूप से तथा एक निश्चित स्थापत्य के अनुसार बनाया गया प्रतीत होता है। इन पत्थरों के शीर्षों को आपस में जोड़ने वाले सरदल (lintels) पत्थर केवल चट्टान के टुकड़े मात्र ही न होकर सावधानी से वक्राकार बनाई गई आकृतियां हैं ताकि वे मिल कर एक गोल की परिधि जैसी लग सके।

स्टोनहेज का स्मारक किसने बनवाया और क्यों बनवाया—यह क्रम पिछली कई सदियों से मानव की बुद्धि को मथता आ रहा है। स्टोनहेज को कैसे बनवाया गया और किसने बनवाया—प्रश्न के इस भाग का उत्तर पुरातत्ववेत्ता कुछ-कुछ देने में सफल हो सके हैं।

आधुनिक पुरातत्व विज्ञान के विकास से पूर्व 17 वीं शताब्दी में यह कल्पना की गई थी, ब्रिटेन और गाल (Gaul) प्रदेश के सफेद कपड़े पहनने वाले ड्रूइड (Druids) पुजारियों ने ही स्टोनहेज बनवाया था। ड्रूइड पुजारियों के बारे में हमें रोमन लेखकों की कृतियों से पता चलता है लेकिन आधुनिक पुरातत्व के अनुसार ड्रूइड पुजारियों से स्टोनहेज के पत्थर एक हजार साल पुराने हैं। 17वीं शताब्दी के



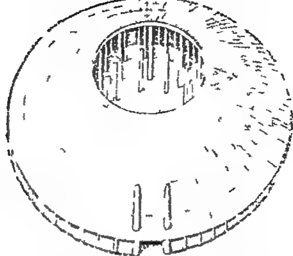
स्टानहेंज के स्मारक का बाहरी दृश्य  क्या ये किसी मंदिर के अवशेष हैं?

वास्तकार (architect) इनिगा जान्स (Inigo Jones) न स्टानहज क निमाण का श्रय रामन वास्तुकला का दिया ह। आज स 50 साल पहल पुरातत्वशास्त्री इलियट स्मिथ (Elliot Smith) का दावा था कि स्टानहज का डिजाइन फानशियना या मिस्रिया न बनाया हागा।

इन तर्का का सर्वाधिक बल तब मिला जब जान-मान अग्रज विद्वान सर रिचड काल्ट हार (Richard Colt Hoare) न स्टानहज क समीप खुदाई करके एक लम्ब-तगड व्यक्ति का अस्थि पजर प्राप्त किया। इसी क साथ कब्र स एक कुल्हाडी  कइ छुरिया  एक गदा तथा सान व हड्डिया की बनी सामग्री भी प्राप्त हुइ।

*सर रिचड और उनक साथिया न निष्कर्ष निकाला कि प्राचीन ब्रिटनवासिया न* अपनी कला  कौशल बाहर स सीखा हागा। कुछ अन्य विद्वाना की राय थी कि ताम्र युग (Bronze Age) क याद्धाआ न इस क्षेत्र पर आक्रमण करक यही बसन का निणय लिया हागा तथा यहा क स्थानीय निवासिया का मजदूरा क रूप म लगा कर यह स्मारक खडा किया गया हागा। ताम्र युग क इन आक्रमणकारिया क बार म विभिन्न अनुमान लगाए जात ह। कुछ का कहना ह कि व यूनान की धरती स आए थ। उस कब्र म मिली कीमती वस्तुए मिस्र की तरफ भी इशारा करती हैं। स्टानहज की वास्तुकला भूमध्यसागर म घूमन वाल महान् ग्रीक पौराणिक योद्धा आडसियस (Odysseus) की आर सकत करती है। अपने शानदार मनहिर (Menhir) पत्थरा क स्मारका क लिए प्रसिद्ध ब्रिटनी (Britteny) क्षेत्र स भी वे याद्धा आ सकत थ।

परातत्व विज्ञान क अनुसार स्टानहज का काल इसा स 2750 वर्ष पूव बताया गया ह। अगर इसका श्रय ब्रिटनी याद्धाआ का दे भी दिया जाए तो भी यह मानना पडेगा कि इसा स 1900 शताब्दी पूव इन याद्धाआ ने इस क्षेत्र म छ  सौ वर्ष तक राज्य



**4000 साल पहले की लकड़ी की इस गोलाकार इमारत का प्रभाव स्टोनहेज की वास्तुकला पर दृष्टिगोचर होता है।**

किया होगा लेकिन और भी कई सभ्यताओं ने इस स्मारक के निर्माण में हाथ बटाया होगा। स्टोनहेज से 2 मील दूर पुरातत्वशास्त्रियों ने लकड़ी की दो गोलाकार इमारतें ढूंढ निकाली हैं। इन्हें देख कर लगता है कि स्टोनहेज के स्थापत्य पर इनका प्रभाव जरूर पड़ा होगा। ये लकड़ी की इमारतें डुरिंगटन (Durrington) दीवारों के स्मारक के पास हैं। इन दीवारों को देखकर लगता है कि यहां हजारों लोगों के जमा होने लायक भवन बनाए गए होंगे। जाहिर है कि एक युग में ये भवन सामाजिक तथा धार्मिक समारोहों के स्थल थे।

स्टोनहेज के निर्माण का इतिहास प्रागैतिहासिक काल के 1000 वर्षों के 3 विभिन्न चरणों में फैला हुआ है। पहला चरण ईसा से 2750 वर्ष पहले शुरू किया गया था। स्टोनहेज में बने हुए अत्यधिक रहस्यमय औब्रे छिद्र (Aubrey Holes) इसी युग में बनाए गए थे। अपने बीच में समान अंतर रखने वाले इन 56 गड्ढानमा छिद्रों से स्टोनहेज की बाहरी परिधि बनती है। इसी चरण में स्टोनहेज का प्रसिद्ध हील स्टोन (Heel Stone) बनाया गया जो दरवाजे के ठीक बाहर स्थित है।

दूसरा चरण ईसा से 2000 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ। बाहरी परिधि के भीतर 83 नील पत्थरों के दोहरा वृत्त बनाने के लिए हैम्पशायर एवन (Hampshire Avon) से 4-4 टन के भारी पत्थर मंगवाए गए। अस्थि-पंजर के साथ पाई गई कुल्हाड़ी व पत्थर की अन्य सामग्री भी नील पत्थर की बनी हुई है। स्वाभाविक ही है कि उस युग में इस पत्थर को पवित्र समझा जाता होगा।

स्टोनहेज के निर्माण का तीसरा चरण 100 वर्ष बाद प्रारम्भ हुआ। 75 विशालकाय कठोर बलुआ पत्थरों को एवबुरी (Avebury) से 20 मील दूर दक्षिण स्थित इलाके से रस्सियों तथा बेलनों की मदद से लाया गया। स्टोनहेज पहुंच कर इन पत्थरों को

शिल्पकारो न मनचाह रूप से काटा-छाटा और इसके बाद उन्हे खडा करन तथा उनक शीर्षो पर सरदल रखन का कठिन आर नाजुक काम प्रारम्भ हुआ, जा हर पत्थर क अपन निजी सतुलन पर आधारित था। ऐसा करन म काफी दिक्कत आई हागी क्योकि स्टानहज का मदान क्षैतिज न हाकर उत्तर-दक्षिण की आर 18 इच का ढलान लिए हुए हे।

स्टानहेज क निमाण की विधि और निर्माताआ क बारे मे ये जानकारिया मिल जाने क बाद भी यह पता नही चलता ह कि उसक निमाण का उद्द्श्य क्या था? स्टानहज क पास प्राचीनयुग क आर काइ अवशष नही मिलत, जिनस प्रगट हा सके कि इस महान स्मारक का क्या बनवाया गया था? किसी किस्म का प्राचीन कचरा इत्यादि न मिलने स इस सभावना पर बल पडता है कि स्टोनहेज का नित्यप्रति नही कभी-कभी ही प्रयोग म लाया जाता हागा। यह स्थान या ता महत्वपूर्ण बैठको का स्थल हागा या फिर मंदिरनुमा पजा-स्थल हागा।

पूरे ब्रिटन क उत्तर म स्टानहज स मिलत-जुलते पत्थरा क छाटे-छोटे स्मारक भरे पड ह। इनक आस-पास उस यग क सरदारो व याद्धाआ को दफनाया गया था। *स्टानहज क आस-पास भी कब्रें खाजी जा चुकी है। इस तथ्य स स्टोनहज का पवित्र स्थल क रूप म स्वीकारन पर ओर भी राशनी पडती ह।*

आधुनिक काल म जिस तथ्य न लागो का सर्वाधिक रामाचित किया हे, वह हे स्टानहज की खगाल वधशाला (observatory) के रूप म कल्पना। पिछल 10 वर्षो म कइ बार यह सिद्ध करन की कोशिश की गइ हे कि यह एक इतनी जटिल खगाल वधशाला है कि इस एक प्रागतिहासिक कम्प्यूटर की सज्ञा भी दी जा सकती ह।

सन 1740 म ब्रिटिश विद्वान तथा 'स्टानहज टेम्पल रस्टार्ड टु द ब्रिटिश ड्रूइड्स' (Stonehange a temple restored to the British Druids) के लेखक विलियम स्टकल (William Stukley) का दावा हे कि यह पूरा स्मारक *ग्रीष्मकालीन सर्योदय (midsummer sunrise) की आर उन्मुख ह।*

सन 1840 मे एडवर्ड ड्यूक (Edward Duke) ने अवधारणा प्रस्तुत की कि पूरे सालिसबरी मदान म फैल हुए सभी स्मारक मिल कर सौर-प्रणाली का प्रतिनिधित्व करत ह आर उनम स्टानहेज शनि की कक्षा बनाता हे।

सन् 1901-1963 म बास्टन विश्वविद्यालय, अमरिका के एक खगोलज्ञ जराल्ड एस हाकिन्स (Jerald S Hawkings) तथा सर नामन लाकयर (Norman Lockyer) न इस एक कम्प्यूटर की मान्यता देने म काई हिचकिचाहट नही दिखाइ। उनका कहना था कि हील स्टान की स्थिति ग्रीष्मकालीन सक्राति (mid summer solstice) का प्रतीक हे जब सूर्य दक्षिण की आर अपनी यात्रा प्रारम्भ करन स पहल सर्वाधिक उत्तरो-मुख प्रतीत हाता हे। यदि इसी का उल्टा कर दिया

जाए तो शरदकालीन सक्राति (mid winter solstice) का अध्ययन किया जा सकता हे। जाहिर हे कि इन दाना प्रेक्षणा (observations) से फसला आर त्याहारो के लिए एक साधारण कलण्डर बनाया जा सकता था।

ऐसा लगता ह कि स्टौनहज के निर्माताओ की दिलचस्पी चद्रमा के प्रेक्षण म भी थी इसलिए उन्हान चद्रमा के उगन और डूबने के क्रम का प्रेक्षण भी इसी वेधशाला म करन की कोशिश की होगी। 56 आब्रे छिद्रा का ग्रहण के 56 वर्षीय चक्र क रूप म देखा जा रहा ह। लकिन विज्ञान बताता ह कि 56 का अक ही ग्रहणा के प्रेक्षण के लिए आवश्यक नही ह। इसके अलावा स्टोनहज पर ऐसा कोइ चिह्न भी नही मिलता, जिससे पता चलता हो कि इन छिद्रा का उपयाग ग्रहण का अध्ययन करन मे किया जाना हागा।

स्टोनहेज के निर्माण क तीना चरणा का अध्ययन करने म पता लगता ह कि पहले दा चरणा मे इसक निमाताआ की काशिश रही हागी कि व इस एक व्यवस्थित खगालशास्त्रीय वेधशाला के रूप मे बनाए ताकि सूय आर चद्रमा के चक्र का *अध्ययन किया जा सक। लकिन तीसरे चरण म स्टानहज का उद्देश्य खगोलीय कम* आर प्रतीकात्मक अधिक रह गया होगा।

बहरहाल, स्टोनहज का उद्देश्य अभी भी रहस्यमय बना हुआ ह। उसक निर्माताओ की उच्चकोटि की वास्तुकला के बार म किसी को सदह नही ह। कुछ लोग तो यहा तक भी कहते ह कि स्टोनहज क निमाताआ न किसी मानक इकाई का भी प्रयोग किया हागा। क्या आधुनिक विज्ञान इस रहस्य को खाल पान म समथ हो पाएगा कि स्टोनहेज बनाने का असली उद्देश्य क्या था?

# ईस्टर द्वीप के दैत्याकार चेहरे

---

*प्रशांत महासागर की विशालता में खोया हुआ ईस्टर द्वीप और उस पर खड़े हुए ये विशालकाय पथरीले चेहरे आज सारे विश्व का ध्यान अपनी ओर बरबस खींच लेने में सफल हैं।*

*आधुनिक शोधकर्त्ताओं ने नई नई तकनीकों का सहारा लेकर तथा अथक प्रयास करके यह तो साबित कर दिया कि द्वीपवासियों ने इन विशाल प्रस्तर मूर्तियों को कैसे बनाया होगा लेकिन वे यही नहीं बता पाए हैं कि इन विशाल मूर्तियों को क्यों बनाया गया था। इनके पीछे क्या उद्देश्य था? इनके निर्माता इन मूर्तियों को छोड़ कर अचानक क्यों भाग गए? क्या कभी इस द्वीप पर किसी समृद्ध समाज की बस्तियां थीं?*

---

य तो इस द्वीप पर उनमें भी पूर्व कई लोग आए और गए पर सही अर्थों में इस द्वीप की खोज का श्रेय एक अंग्रेज महिला केथरीन राउटलेज (Katherine Routledge) को दिया जाता है। इन्होंने सन 1914-15 में प्रशांत महासागर में स्थित ईस्टर द्वीप की यात्रा की और संसार को इसकी विचित्रता से परिचित करवाया। यह द्वीप सन् 1888 से चिली के कब्जे में है। इस पर 3 ज्वालामुखी पर्वत हैं। द्वीप को देख कर लगता है कि किसी युग में इस द्वीप पर अवश्य हरियाली रही होगी तथा लकड़ी देने वाले वृक्ष खड़े रहे होंगे। आजकल इस पर न तो वृक्ष दिखाई देते हैं और न ही बहते हुए पानी के स्रोत। हां बड़े-बड़े गड्ढों में बनी झील अवश्य दिखाई पड़ती हैं। दक्षिणी समशीतोष्ण मंडल के उत्तरी किनारे पर स्थित 45 वर्ग मील लम्बे चौड़े इस द्वीप का तापमान 72° फा. रहता है तथा इस पर 50 इंच औसत वार्षिक वर्षा होती है। ईस्टर द्वीप के प्राचीन निवासी इसे *'पृथ्वी की नाभि (te pito o te henua)'* कहते थे।

ईस्टर द्वीप को आज अपनी इन विशेषताओं के कारण नहीं जाना जाता वरन् इस द्वीप पर खड़े हुए 12 से 15 फुट तक ऊंचे तथा 20-20 टन वजनी ज्वालामुखी पत्थरों को तराशकर बनाए गए विशालकाय चेहरों के कारण जाना जाता है। इन चेहरों को *माआई (Moi)* कहा जाता है। 1000 से ऊपर इस तरह के विशाल चेहरे खोजे जा चुके हैं जो कभी वेदियों पर जिन्हें वहां की भाषा में *आहु (ahu)* कहते हैं अधीष्ठित रहते थे। इनमें सबसे बड़ा 32 फुट लम्बा और 90 टन भारी है। इस द्वीप पर इससे भी दोगुने बड़े पत्थर के अधबने अनेकों चेहरे पाए जा चुके हैं। आखिरकार ये चेहरे किसके प्रतीक हैं? इन्हें किसने बनाया? इनका क्या उद्देश्य



सन् 1960 में 16-16 टन की इन सात प्रतिमाओं को ईस्टर द्वीप के पश्चिमी तट पर पुनः स्थापित किया गया।

था? इनकी विशालता का क्या रहस्य है? इतने बड़े-बड़े पत्थर कैसे खड़े किए गए होंगे? इन्हें खड़ा करने के लिए लकड़ी कहां से आई होगी? इन प्रश्नों का उत्तर आज तक नहीं मिल सका है।

सन् 1722 के ईस्टर रविवार को इस द्वीप पर एक हालैंड वासी अन्वेषक जेकब रॉगीवीन (Jacob Roggeveen) ने अपने कदम रखे और इसीलिए इसका नाम ईस्टर द्वीप पड़ गया। जेकब का ख्याल था कि ये विशाल चेहरे चिकनी मिट्टी से बनाए हुए बुत हैं। उसने देखा कि इस द्वीप के निवासी थोड़ी बहुत खेती करके अपना गुजारा कर लेते हैं। वे झोंपड़ियों में रहते हैं तथा उन्होंने अपने कानों को छेद करके अपने कंधों तक लटका लिया है।

सन् 1770 में स्पेनवासी फलिप गोंजालेज (Felip Gonzalez) ने ईस्टर द्वीप की यात्रा की। 4 साल बाद विख्यात अंग्रेजी अन्वेषक जेम्स कुक भी इस द्वीप पर पहुंचे तथा सन् 1768 में फ्रांसीसी एडमिरल जीन फ्रांकाइस ला पेराउस (Jean Francois La Perouse) के जहाज इसके तट पर आकर रुके। इन अन्वेषकों ने द्वीप पर बहुत कम दिन बिताए और इस विषय में उनका अनुसंधान भी बहुत अपर्याप्त रहा। 18वीं शताब्दी में इन अन्वेषकों को द्वीप पर 3 से 4 हजार के बीच जनसंख्या मिली जिसमें नर-मांस का भक्षण करना सामान्य था। द्वीप के कबीले लगातार एक दूसरे से लड़ते रहते थे। शायद इसी काल में युद्धरत द्वीपवासियों ने बहुत-सी दैत्याकार प्रतिमाएं अपनी वेदियों से गिरा दी होंगी तथा इनके पत्थरों को तोड़-फोड़ डाला होगा। 19वीं शताब्दी का मध्य होते-होते द्वीपवासियों ने लगभग सभी प्रतिमाएं जमीन पर गिरा दी थीं।

19वी शताब्दी म ही यूरोपियना न इस्टर द्वीप पर आ कर यहा क पिछड निवासिया का दास बनाना प्रारम्भ किया। सन 1805 म नसी (Nancy) नामक अमरिकन जहाज म 22 द्वीपवासी दास बना कर ल जाए गए। पर क दास व्यापारी सन् 1859 व 1862 क बीच 1000 द्वीपवासिया का दास बना कर ल गए। इनम कइ द्वीपवासी अपन दशीय कलाकाशल म निपुण हान क कारण द्वीप म गणमान्य थ। उन्ही क साथ उनका ज्ञान भी चला गया। इनम स कुल 100 द्वीपवासी बचाए जा सक, जिनम स 15 जीवितावस्था म द्वीप वापिस पहच गए। व अपन साथ चचक जसी बीमारिया भी लाए थ जिसम द्वीप की जनसख्या आर भी कम हा गइ। सन् 1877 तक द्वीप पर कवल 111 मूल निवासी बच पाए थ। भयानक गरीबी म रह रह इन मूल निवासिया का उद्धार करन क लिए कछ समय बाद ही चिलीवासी तथा इसाइ मिशनरी इस द्वीप पर पहच। तभी स यह द्वीप चिली क प्रभुत्व म माना जाता है।

यही से इस्टर द्वीप की रहस्यमय प्रतिमाआ क बार म शष विश्व की रुचि प्रारम्भ हुई। अमरिका क डब्ल्य ज थामसन (W J Thomson) (1886), इग्लैड की कैथरीन राउटलज (Katherine Routledge) (1914-15) फ्रास क अल्फ्रड मटाक्स (Alfred Metraux) व बल्जियम क हनरी लवशरी (Henri Lavachery) (1934-35) जमन मिशनरी सबाशियन एगलेट (Sebastian Englert) (1935-39) नार्वे क थार हरदाल (Thor Heyrdahl) (1955-56) तथा अमेरिकी मानव विज्ञानी विलियम मुलाय (William Mulloy) न इस्टर द्वीप की विलुप्त सभ्यता के बार म अध्ययन करक काफी जानकारी एकत्रित की ह। इन्ही क प्रयासा स जमीन पर लढक हए तमाम चहरा का अपनी जगह खडा किया गया।

पक्षी मानव के ग्राम म चट्टानों पर नक्काशी।



द्वीप के दक्षिणी भाग पर स्थित राना राराकू (Rano Raraku) नामक ज्वालामुखी क ढलानो पर लगभग 3 मा एसी दत्याकार मूतिया पडी हुइ ह जा या ता चेहरा की आकृति प्राप्त कर चुकी थी या करन वाली थी। इन्ही क पास पत्थर की खादनी (picks) आर गतिया (adzes) पडी हुइ हें जो यह बताती ह कि द्वीप क शिल्पकारो को जल्दबाजी म अपना काम छोडकर वहा म भागना पडा होगा। इसी जवालामुखी क आस-पास 100 दत्याकार मूतिया खडी हुइ ह। इनम मे कुछ क ऊपर शरीर पर किए जान वाल गादने (tatoo) जेस प्रतीक चिह्न हें। जाहिर ह कि ये 100 बुत इम्टर द्वीप की शिल्पकला की अतिम उपलब्धिया ह। इन 100 मूतिया की आखे पूरी तरह नही बनाइ जा सकी ह, इसलिए इन्हे 'अधा मोआइ' कहा जाता हे। द्वीप के रहस्यमय शिल्पकार अपनी कतिया की आखे तब बनाते थे, जब उन्ह वेदिया पर खडा कर दिया जाता था। द्वीप पर 300 स अधिक प्रतिमाए शिल्प की दृष्टि से सम्पूण हा चुकी ह। इन्ह विभिन्न शलिया म बनाया गया ह। द्वीप पर पुजारी का घर, रिहायशी गुफाए तथा लकडी के खुदे हुए आभूषण भी मिलत ह। समझा जाता है कि इस्टर द्वीप क आरजा नामक ग्राम म किसी युग म पक्षी-मानव (Bird Man) चुनने की प्रथा भी चलती थी। माल म एक बार सभी कबीले वाल यहा एकत्रित हाते आर अपने सबस शक्तिशाली युवक की कठार परीक्षाए लेकर उस 'पक्षी-मानव' चुनते थे।

प्रश्न यह ह कि व लाग कान थ, जिन्हान इन तमाम शानदार आर दशनीय चीजा का निर्माण किया। कुछ लोगा का कहना यह हे कि खोइ हुइ सभ्यता का प्रतीक हे। कुछ अन्य का कहना हे कि एक युग म इस द्वीप पर बाह्य अतरिक्ष के प्राणी बसे थ तथा कुछ व्यक्ति इसका सबध मिस्रिया से जाडत ह।

आधुनिक विद्वाना का निष्कर्ष यह हे कि इन देत्याकार मूतिया क निमाता पोलीनेसियन (Polynesians) लोग थे।

द्वीप की ही एक दतकथा क अनुसार लडाई म हार कर भागे हुए होतु मुता (Hotu Muta) नामक पोलीनेसियन कबीले का मुखिया नए राज्य की तलाश मे इस द्वीप पर आया था। होतु मुता अपने साथ कइ तरह की वनस्पतिया वृक्ष तथा जीव-जतु लाया। पोलीनेसिया तथा नई दुनिया क बीच सबध को स्थापित करन के लिए थोर हेरदाल ने पोलीनेसिया क पेरू स्थित टुआमाटो (*Tuamato*) द्वीप समूह से एक साधारण बजरे पर तैरते हुए ईस्टर द्वीप तक यात्रा करके दिखाई। थोर के विचारो और निष्कर्षो से बहुत लोग असहमत हैं। हा, अब इतना अवश्य मान लिया गया है कि 690 ईस्वी मे पश्चिम से समुद्री यात्रा करके आए हुए यात्री ही इस द्वीप के पहले वासी बन थे।

अब इस बात के प्रमाण मिल रहे हैं कि 1110-1205 ईस्वी के बीच तथा 1650 ईस्वी तक द्वीपवासी विशाल दैत्याकार मूर्तिया और उनकी वेदिया बनाते रहे। उस समय द्वीप पर हानाऊ ईपे (*Hanau Epe*) के नेतृत्व वाला गुट राज्य करता था।

जब इस गुट के अत्याचारों से उकता कर हानाउ मोमोको (*Hanau Momoko*) के गुट ने विद्रोह कर दिया तो शासकों का दल पोइके (*Poike*) ज्वालामुखी की ढलानों पर भाग गया और वहां एक खंदक (trench) खोद कर मोर्चा बांध लिया। इस खंदक के अवशेष आज भी मिलते हैं।

द्वीपवासियों ने इन विशालकाय दैत्याकार पत्थरों को कैसे सरकाया होगा—इसका पता इस अनुमान से लगाया जा सकता है कि उस समय द्वीप की जनसंख्या कम से कम 20 000 अवश्य रही होगी। विलियम मलॉय के अनुसार इन दैत्याकार पत्थर की मूर्तियों को लकड़ी का तना काट कर बनाई गई स्लेज पर रख कर इधर-उधर किया गया होगा। इस स्लेज को धीरे-धीरे घास से ढकी हुई सड़क पर रस्सियों की सहायता से खिसकाया गया होगा।

मलॉय ने यह सिद्धांत रचने के अलावा भी ईस्टर द्वीप की मूर्तियों के बारे में वहीं के बचे खुचे निवासियों के साथ कई प्रयोग किए जिनसे उन्हें इन मूर्तियों के पीछे छिपी हुई शिल्पकला की जानकारी हो सके। उन्होंने अनुमान लगाया कि एक भारी मूर्ति को द्वीपवासी लकड़ी की स्लेज की सहायता से प्रतिदिन 1000 फुट सरका पाते होंगे और लकड़ी के खंभों की सहायता से उन्हें वेदियों पर चढ़ाते होंगे।

कुल मिला कर अभी तक इतनी जानकारी मिलने के बाद भी यह पता नहीं चल पाया है कि द्वीपवासियों को इतनी बड़ी-बड़ी मूर्तियों की क्या आवश्यकता थी? ईस्टर द्वीप की सभ्यता कैसे नष्ट हुई? क्या उसके कबीलों में गृह-युद्ध होने के कारण ऐसा हुआ था? क्या जनसंख्या अधिक बढ़ जाने के बाद आर्थिक संकट के कारण इन दैत्याकार मूर्तियों के निर्माता नष्ट हो गए? चूंकि कोई संस्कृति बिना दो सभ्यताओं में सांस्कृतिक आदान-प्रदान के विकसित नहीं हो सकती, इसलिए यह भी प्रश्न उठता है कि प्रशांत महासागर के इस एकांत द्वीप की संस्कृति कैसे विकसित हुई होगी?

ईस्टर द्वीप के रहस्यमय और विशालकाय चेहरे उदास निगाहों से आज भी क्षितिज की ओर देख रहे हैं। उनकी उदासी की वजह है उनका अनखुला रहस्य। पुरातत्वशास्त्रियों का सतत् प्रयास यह आशा जगाता है कि एक न एक दिन इन पत्थर प्रतिमाओं की सही-सही परिभाषा विश्व को जरूर मिलेगी।

● ●

# क्या मिस्र के पिरामिड सिर्फ मकबरे है?

*मिस्र के दैत्याकार पिरामिड दुनिया के प्राचीनतम आश्चर्यों मे से एक है। इनकी वास्तुकला आश्चर्यजनक और चौका देने वाली है। इससे भी कहीं अधिक चौंका देने वाला है यह प्रश्न कि क्या मिस्र के पिरामिड सिर्फ फराओ राजाओ की ममियो को सुरक्षित रखने वाले मकबरे ही थे? क्या उनका यही एकमात्र उद्देश्य था?*

*आज इस विषय मे अलग-अलग सिद्वात निकल कर सामने आ रहे हैं। कुछ का कहना है कि ये पिरामिड अकाल से बचने के लिए अन्न के भण्डार के रूप मे बनाए गए थे। कुछ अन्य लोगो का कहना है कि ये पिरामिड खगोलीय वेधशालाएं हैं, जिनसे ग्रह-नक्षत्रो तथा पृथ्वी के बारे मे मिस्रवासी अध्ययन किया करते थे।*

*क्या ये पिरामिड प्राचीन मिस्रियो के इन विश्वासो के ही प्रतीक हैं, जो मृत्यु के पश्चात् भी जीवन की निरतरता से सबधित था या उन्हे बनवाने के पीछे कोई अन्य मकसद काम कर रहा था?*

---

पिछली 40 शताब्दियो से मिस्र के भीमाकार पिरामिड सारे विश्व के कुतूहल तथा आश्चर्य के केन्द्र बने हुए है। ये पिरामिड इस तथ्य के जीवित प्रमाण हैं कि प्राचीन काल का मानव तकनीकी कुशलता मे कितनी दूर तक जा चुका था तथा उसकी आध्यात्मिक महत्वाकाक्षाएं कितनी महान् थी। अभी तक यह पता नही चल पाया है कि इन पिरामिडो का निर्माण कैसे और क्यो हुआ? अरब विद्वान दावा कर चुके हे कि प्राचीन मिस्र का सारा ज्ञान इन पिरामिडो की दीवारो पर खुदा हुआ है। इस भाषा को हीअरोग्राफी (heirography) कहते है जिसे अभी पूरी तरह से नही पढा जा सका है। गिजा (Giza) के तीन पिरामिडो के बारे मे यह समझा जाता रहा है कि अन्न के विशालकाय भडारो के रूप मे बनवाए गए थे ताकि अकाल के समय खाद्य की आपूर्ति ठीक रह सके। ज्ञातव्य है कि पिरामिड शैली मे बने किसी भी भवन मे चीजे बहुत समय तक खराब नही होती।

19वी शताब्दी मे इन दैत्याकार शाही मकबरो का विधिपूर्वक अध्ययन यूरोपीय विद्वानों ने प्रारम्भ किया। इससे पहले इतना तक पता लग चुका था कि मिस्र के निवासी मृत्यु के बाद भी जीवन मे विश्वास करते थे, इसीलिए उनके लिए अपने राजा के शरीर को सुरक्षित रखना अनिवार्य था। मिस्र के निवासी अपने राजा को मानव और देवता का मिला-जुला रूप मानते थे। लेखको ने इन पिरामिडो के

गिज़ा के दूसरे पिरामिड का निर्माता चफ्रेन। इस मूर्ति में चफ्रेन की रक्षा गरुड के पखो से करने का चित्रण किया गया है।



निमाण के पीछ काम करन वाली मानमिकता की व्याख्या करत हुए कहा ह कि य पिरामिड मिस्रवासिया न जीवन की अमग्ता को सिद्ध करन क लिए बनवाए थ।

पिरामिडा की आकति वताती है कि उनक निमाताआ पर निश्चित रूप स सूर्य-पूजका का प्रभाव था। मिस्रवासी बाज क सिर की आकति वाल रा' (Ra) नामक सूय क प्रतीक एक देवता क पुजारी थे। पिरामिडा की आकृति बिलकुल एसी ही हे कि जेसे सूर्य मे पृथ्वी पर किरण गिर रही हा।

मृत्यु के पश्चात् जीवन की धारणा न ही मिस्रवासिया का ममी बनाने की कला म अवगत कराया। मत शरीर क आतरिक अगा का निकाल कर उसका नमक क विलयन मे भिगो दिया जाता था। मस्तिष्क का नथुना स निकाला जाता था। फिर शरीर पर सोड का कार्बोनेट छिडका जाता था। तल म भीगी पट्टिया को लपेट कर शव को रगे हुए कफन म रख दिया जाता था। अतिम सस्कार क समय होन वाले धर्मगत कर्मकाड किए जाते थे। कफन को मतक द्वारा इस्तमाल की जान वाली तमाम वस्तुओ के साथ पिरामिडो म रखा जाता था ताकि मत्यु क बाद जीवन मे आवश्यकता पडने पर मतक उन वस्तुआ का प्रयाग कर सके। पिरामिडो का निर्माण 2686-2181 इसा पर्व मे प्रारम्भ होकर अपने स्वर्ण युग मे पहुचा। पहला पिरामिड तीसरे वश के राजा (2606-2613) ईसा पूर्व जोसर (Zoser) के युग मे बनवाया गया, जिसे हम 'स्टेप पिरामिड' (step pyramid) के नाम से जानते हैं। इस पिरामिड की रचना का श्रेय राजा के मुख्यमत्री तथा वास्तुकला तथा विभिन्न अन्य कलाओ के आचार्य इम्होटेप (Imhotep) को जाता है। पिरामिड पर इम्होटेप का नाम खुदा हुआ है। इन पिरामिडो मे न केवल जोसर के अवशेष रखे

गए वरन् उसके परिवार क मदस्यो के अवशेष भी रखे गए। इस पिरामिड के अदर कमरे आर गलियार बने हुए है। सुरक्षा के तमाम प्रवध करने क बाद भी पिछली कई शताब्दियो से हुई लूट-मार ने इस पिरामिड की बहुमूल्य वस्तुओ की सख्या नगण्य कर दी हे।

इसके बाद चोथे वश (2613–2494 इसा पूव) के राजा सनेफेरू (Seneferu) ने तीन पिरामिड बनवाए, जिनके निर्माण मे युद्धबदियो तथा कृपको से काम कराया गया था।

मेदुम (Maidum) मे बनाया गया पहला पिरामिड फाल्स पिरामिड (false pyramid) के नाम से जाना जाता ह। अपनी सरचना मे कुछ गडबडी हाने के कारण उसका बाहरी घेरा ढह गया है। आजकल यह पिरामिड अपने ही मलबे के ढेर पर गर्व से सीना ताने खडा हुआ है। दाहशर(Dahshur) मे सेनफेरू ने बेण्ट पिरामिड (bent pyramid) नामक दूसरा पिरामिड बनवाया। यह एक ऐसे आधार पर बना हुआ है, जहा स इसक दीवारे 54° पर उठी हुई हैं और फिर एकदम 42° पर झुक जाती है। 320 फुट ऊचे इस पिरामिड पर चून के पत्थर की परत चढाइ गइ हे। बेण्ट पिरामिड स थाडी ही दूर पर सनफेरू का तीसरा उत्तरी पिरामिड माजूद है जा अन्य दो की अपक्षा पूण रूप से निर्मित पिरामिड लगता है। इसकी आकृति भी अन्य दो की अपेक्षा पिरामिड की आकति के अधिक निकट है। सनफेरू क उत्तराधिकारी चिओप्स (Cheops) (2545-2520 ईसा पूव) ने काहिरा स कुछ मील की दूरी पर 756 वर्ग फुट के आधार पर 13 एकड जमीन म इतना शानदार पिरामिड बनवाया कि उसकी दीवारो की लम्बाइ म कवल 7 9 इच का अतर हे ओर उसका अवनमन कोण 50°52 ह। इसी भीमाकार इमारत का देखकर लगता ह कि यह न कवल राजसी मकबरा ह वरन सूय घडी (Sundial), कलण्डर तथा खगालीय वधशाला भी ह।

इस पिरामिड व उसक निमाता क बारे मे इतन तरह के विचार प्रस्तुत किए जा चुक हे कि उनस ग्रथ के ग्रथ लिख जा सकत हे। स्काटलण्ड क खगालविद चार्ल्स पियाजी स्मिथ (Charles Piazzi Smythe) का कहना था कि यह पिरामिड देवताआ क मागदशन मे बनवाए गए हे आर यह कि इस पिरामिड स पाइ (π) का सही मूल्य पृथ्वी का द्रव्यमान आर परिधि तथा सूर्य से पृथ्वी की दूरी पता लगाइ जा सकती हे। कुछ अन्य लखका न पिरामिड की नाप जाख म साल क 365 दिना का रहस्य खाजा, तो किसी न इतिहास की प्रमख तारीखा की भविष्यवाणी का पिरामिड के स्थापत्य मे दखन की काशिश की।

सन् 1954 म इस पिरामिड म एक एसा बद गड्ढा खोज निकाला गया जिसम 140 फुट लम्बी तथा 16 फुट चाडी नाव निकली। अदाजा लगाया गया कि यह नाव एक 'सौर नाव ' (solar boat) थी जिसम बेठ कर राजा आर उसक अमल न अमरता की ओर यात्रा की हागी।



नेपोलियन ने अपने मिस्री अभियान में कुछ वैज्ञानिकों के साथ स्फिंक्स का निरीक्षण किया।

गिजा (Giza) का दूसरा पिरामिड चिफ्रेन (Chephren) के पिरामिड के नाम से जाना जाता है। यह चिआप्स के पिरामिड से 10 फुट अर्थात 471 फुट ऊंचा है। इसी के पास चिफ्रेन का अंतिम संस्कार का मंदिर तथा उनकी रक्षक स्फिंक्स (Sphinx) की मूर्ति बनी हुई है। इन दोनों स्मारकों के मुकाबले इस पिरामिड की आंतरिक बनावट सादगीपूर्ण है। गिजा का तीसरा पिरामिड मायसीरिनस (Mycerinus) एवं छोटा पिरामिड है। इसी के बाद गिजा में पिरामिडों का निर्माण बंद हो गया।

पिरामिड उस युग में बनाए गए जब फराओ (Pharaohs) की सत्ता को चुनौती देने के लिए कोई तैयार नहीं था। वह शांति व व्यवस्था का युग था। इसी कारण से अपनी दैवी शक्तियों को हमेशा-हमेशा के लिए साधारण मानव के ऊपर थोप देने के लिए इन महाकाय मकबरों का निर्माण किया गया।

प्रश्न यह है कि पहिए का आविष्कार भी उस युग में नहीं हुआ था फिर इतने बड़े-बड़े पिरामिड उस युग में कैसे बन पाए होंगे? उदाहरणार्थ—चिआप के पिरामिड में 2 300 000 पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े लगे हैं, जिनका वजन 6 500 000 टन है। नेपोलियन बोनापार्ट ने जब मिस्र पर हमला किया था तो इन पिरामिडों को देखकर उसने अनुमान लगाया था कि इन पिरामिडों में लगे सामान से पूरे फ्रांस के चारों ओर 10 फुट ऊंची व 1 फुट चौड़ी दीवार बनाई जा सकती है।

समझा जाता है कि मिस्रवासियों ने पहले एक आदिकालीन स्पिरिट लेविल (spirit level) बनाया होगा। एक समतल चट्टान में गड्ढे को इधर-उधर इस तरह गहरा किया गया होगा कि पानी की गहराई हर जगह एक-सी हो गई होगी।

पिरामिड करीब-करीब वर्गाकार बने हैं। जाहिर है कि उस समय के वास्तुकारो को कुछ ज्यामितीय (geometric) ज्ञान अवश्य होगा लेकिन अभी तक यह पता नही चल पाया ह कि पिरामिडो को इतने सही समकोण पर खडा करने मे वे कैसे सफल रहे? $2\frac{1}{2}$ टन से 15 टन तक वजन के पत्थरो को खानो से निकाल पर बाढ के मासम मे बेडो पर रख कर नील नदी मे तैरा दिया जाता था। 30 वर्ष तक लगातार हजारा श्रमिक व कारीगर गिजा म पिरामिडो के निर्माण मे लगे रहे और उन्हाने इतनी कुशलता से काम किया कि उनकी दीवारो क जोड मे एक बाल तक के घुसने की जगह नहीं हे। इसी को लेकर कुछ विद्वानो का सदेह होता है कि वे सभवत किसी अन्य ग्रह से आइ विकसित सभ्यता द्वारा लेसर किरणा से काटे गए।

पुरातत्वशास्त्रिया मे आज भी इस विषय पर जोरो से बहस चल रही हे कि बिना किसी यांत्रिक मदद (पहिया या लीवर) इन भारी-भारी पत्थरा को इतनी ऊचाई पर कैसे चढाया गया हागा इस विषय म दिए गए सिद्धातो के अनुसार इन पत्थरो को ढालो (ramps) क निमाण द्वारा ऊपर चढाया गया होग जो सर्पिलाकार सीढियो की तरह बनाए गए होग। इसी का लेकर कुछ लोग यह अटकल भी भिडाते हैं कि वे लोग किसी प्रकार गुरुत्वाकर्पण (gravity) का निषेध करक पत्थरो को भारहीन कर लते थे।

लकिन यह ममला उस समय आर भी रहस्यमय हो जाता ह जब ईसा से 500 वर्ष पूर्व का यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस (*Herodotus*) अपनी रचनाओ मे ऐसी मशीनो का जिक्र करते हें जिनके सहारे मिस्री लोग भारी चीजा को ऊपर चढाते थे लेकिन मिस्र की कला, स्थापत्य तथा साहित्य मे इन मशीनो का कोई जिक्र नही मिलता।

जूलियस सीजर के युग के यूनानी इतिहासकार सिकुलुस (Siculus) ने इन पिरामिडा के निमाण के लिए उन श्रमिको की प्रशसा की ह, जिन्होने इतने भव्य ओर महान् स्मारका का बनवाया। रामन लेखक प्लिनी (Pliny) (23-79 ईस्वी) ने इन पिरामिडो का राजाओ द्वारा की जाने वाली बरबादी ओर मूर्खता का प्रमाण बताया हे परतु ऐसे लोग ही अधिक हें जो इन पिरामिडा को मानवीय प्रयास का मर्वोच्च शिखर मानते हे। जब तक पिरामिडा की वास्तुकला से सबधित ओर उनक उद्देश्य से सबधित सारे रहस्य खुल नही जाते तब तक इस तरह के परस्पर भिन्न-भिन्न विचार सामने आना स्वाभाविक ही हे।

• •

# साइबेरिया का ब्लैक होल

---

*धरती पर अक्सर तरह तरह के विस्फोट होते रहे हैं। कभी मानव निर्मित कभी प्रकृति द्वारा प्रेरित तो कभी दुर्घटनावश। लेकिन साइबेरिया को हिला देने वाले विस्फोट के समान कोई भी अन्य विस्फोट इतने बड़े रहस्य का आधार नहीं बना है।*

*यह विस्फोट कहां हुआ और कब हुआ—इसका ज्ञान हो चुका है लेकिन यह कैसे हुआ—यह किसी को मालूम नहीं है।*

*क्या साइबेरिया में कोई उल्कापिण्ड फट गया था? या कोई उड़नतश्तरी अपने इंजन में खराबी आ जाने के कारण किसी आणविक विखण्डन की शिकार हो गई थी? अथवा समय और अंतरिक्ष के नियमों का उल्लंघन कर सकने में सक्षम कोई नन्हा सा ब्लैक होल ही साइबेरिया से आ टकराया था?*

---

मध्य साइबेरिया के टुंगस (Tungus) क्षेत्र में 30 जून सन् 1908 को स्थानीय समयानुसार प्रातः 7 बजकर 17 मिनट पर एक प्रलयकारी विस्फोट हुआ जिसमें 20 मील की त्रिज्या (radius) में मौजूद सभी वृक्ष जल गए। सन् 1960 तक के हवाई सर्वेक्षण में इन जले हुए पेड़ों के तनों को देखा जा सकता था। साइबेरिया के निवासियों ने आकाश में एक आग का गोला देखा जो सूर्य से भी ज्यादा चमकदार



20 वर्ष पहले लिया गया साइबेरिया का विस्फोट के बाद का चित्र जिसमें जमीन पर पड़े झुलसे वृक्ष देखे जा सकते हैं।

था। विस्फोट क स्थान से 250 मील दूर किनस्क (Kirensk) मे आग का एक स्तम्भ देखा गया तथा तीन-चार तालियां की आवाज सुनने क बाद किसी चीज क जमीन स टकराने की आवाज सुनी गई। विस्फोट की शक्ति स कस्क (kansk) क दक्षिणी क्षेत्र म घोड 400 मील दूर जा गिरे। 40 मील दूर रहने वाले किसान एस वी समीनाव की कमीज उनक शरीर पर जल गई और विस्फोट न उन्हे सीढिया क नीच फक दिया। जब उनकी बेहोशी दूर हुई तो उन्हे लगातार बिजली कडकने की आवाज सुनाई द रही थी। उनक पडोसी पी पी कोसालापाव क कानो म भयानक पीडायुक्त जलन होन लगी। विस्फोट म डेढ हजार रेडियर (Reindeer) मारे गए। एक मवेशीपालक किसान क कपड जल गए तथा समावार व अन्य चादी क बर्तन पिघल गए।

इस विचित्र और रहस्यमय घटना क अभी तक पाच कारण बताए गए हैं लेकिन इन पाचो म कोई भी अंतिम रूप म सही सिद्ध नही हुआ है। ये पाच कारण निम्नलिखित है —

यह विस्फोट किसी दैत्याकार उल्कापिण्ड के गिरने से हुआ और उसके गिरने से भयानक ऊष्मा निकली। ध्यान रह कि प्रागैतिहासिक काल म मध्य एरिजोना (Central Arizona) मे एक उल्कापिंड से 314 मील चौडा गड्ढा हो गया था लेकिन साइबेरिया म एसा कोई गड्ढा खोजने पर भी नही मिला है। इस तरह यह पहली परिकल्पना संदिग्ध हो जाती ह।

सन 1950 म यह संभावना व्यक्त की गई कि एक अत्याधुनिक तथा बाहरी सभ्यता न वायुमण्डल क मध्य नाभिकीय विस्फोट किया होगा जिसके कारण साइबेरिया म यह तबाही हुई। सन् 1958 व 1959 म इस क्षेत्र क अदर रेडियोसक्रियता (radio activity) काफी मात्रा म पाए जाने की रपट मिली थी लेकिन सन् 1961 म किए गए इस अध्ययन म यह दावा प्रमाणित नही हुआ। पेडो की शाखा क फट जाने तथा उनकी ऊपरी सतह जल जाने का इसका पर्याप्त प्रमाण नही माना गया।

तीसरी व्याख्या यह ह कि कोई धूमकेतु वायुमण्डल म इतनी तेजी स आया कि उसका शीर्ष जो जमी हुई गैसो स बना था, ऊष्मा क कारण फट गया। इसके प्रमाण म तर्क यह दिया गया कि धूमकेतु बिना दिखे हुए भी पृथ्वी पर गिर सकता ह तथा उसकी गैस तथा धूल के कारण ही पूरे यूरोप के ऊपरी वायुमण्डल म साइबेरिया क विस्फोट क बाद कई दिन तक 'श्वेत रात्रि' जैसा दृश्य बना रहा था।

प्रति-पदार्थ (anti matter) का बना हुआ 'एण्टी-रॉक' वायुमण्डल म आया तथा साधारण पदार्थ क परमाणुओ स टकरा कर गामा किरणो के एक आग के गोले म बदल गया। इसके फलस्वरूप भयानक विस्फोट हुआ। यह सिद्धात सन् 1965 म पेश किया गया था। यह कारण साइबेरिया निवासियो का शरीर जलने तथा साधारण रासायनिक और आणविक विस्फोट स उगने वाले बादलो की अनुपस्थिति की व्याख्या करता ह।

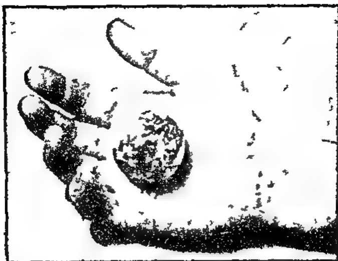
सबस ताजा तर्क यह ह कि एक नन्हा-सा "ब्लेक होल" (black hole) साइबरिया स टकराया था आर पृथ्वी म स होते हुए वह उत्तरी अटलांटिक मे जा निकला था।

यह ब्लक होल क्या ह? वज्ञानिका क अनुसार ब्लेक होल पदार्थ का एसा विशाल खण्ड हाता ह, जा सिकुड कर एक अत्यत सघन रूप म आ जाता है। उसकी सघनता इतनी विकट हाती हे कि वह अदृश्य हा जाता ह। अपने सघन घनत्व के कारण वह इतना शक्तिशाली गुरुत्व बल (gravity) पैदा करता है कि प्रकाश या अन्य काइ भी चीज उससे बच नही सकती। वह अपन पास से गुजरती किसी भी प्रकाश किरण का आकर्षित कर लेता ह। यदि पथ्वी का दबा कर एक टेबिल टेनिस की गेद के आकार का कर दिया जाए उसका गुरुत्व इतना सकेन्द्रित हो जाएगा कि प्रकाश भी उसका प्रतिरोध नही कर सकगा। इसी का ब्लेक होल कहगे।

कहा जाता हे कि ब्लेक होल म गिरन वाला काइ भी व्यक्ति पहल खिच कर स्पघट्टी क समान डारा मे बदल कर विघटित हा जाएगा। उस व्यक्ति के शरीर क परमाणु कण अपना अस्तित्व खा दग लेकिन उस व्यक्ति की छवि भूत की तरह ब्लैक होल की बाहरी सीमा पर अकित हा जाएगी,जिसस बाहर स देखने वाला व्यक्ति उस दख सक।

जस-जस अतरिक्ष समय आर पदाथ की अधिकाधिक जानकारी वेज्ञानिका का हाती जा रही ह, वेस-वस प्रति-पदाथ की धारणा विकसित हो रही है। सन् 1920 म आइस्टीन के समकक्ष मान गए अग्रज वेज्ञानिक पी ए एम डिराक (P A M Dirac) न इलक्टॉन जस लकिन धनात्मक आवेश वाल कण (positively charged particles) का सिद्धात पश किया। 4 बप बाद इस कण का प्रयागशाला म खाज लिया गया। इसस यह पता चला कि हर कण का एक प्रतिकण हाता ह। यदि य प्रतिकण परमाणु बना कर पत्थर मनुष्य और विश्व का निर्माण कर डाल ता प्रति पदाथ की रचना हो जाएगी। अत्याधिक उच्च ऊर्जा के वायमण्डलीय परमाणआ के दाब म हमार पर्यावरण म प्रति-पदार्थ के कणा की रचना हाती ह। एक सकण्ड क 10 लाखव हिस्से तक दिखाई दे सकने वाल इन प्रति कणो को प्रयागशाला क सवेदनशील यत्रो द्वारा दखा जा सकता है। जब य साधारण पदाथ के कणा म टकरा कर नप्ट हो जात हे तो अपने पीछ प्रकाश की नन्ही परतु तीव्र चमक छाड जाते हे जा जबर्दस्त ऊर्जा युक्त विकिरण (radiation) की तरगदध्य (wavelength) वाली गामा किरण हाती है।

रेडियो सक्रिय कार्बन डेटिंग पर नाबल पुरस्कार जीतने वाले अमेरिकी रसायनशास्त्री विलार्ड एफ लिब्वी (Villard F Libby) ने अध्ययन करके निष्कप निकाला है कि यदि कोइ उल्कापिण्ड हमारे वायुमण्डल मे गिरता है तो पदाथ व प्रति-पदार्थ, दोना के ही ऊजा मे बदल जान की सभावना रहगी। यह ऊजा परमाणु बम से भी ज्यादा विस्फोटक होगी। प्रति-पदार्थ की थोडी-सी मात्रा ही 3 करोड टी एन टी के बराबर विस्फाट करने के लिए पर्याप्त है। साइबेरिया के



अगर पथ्वी एक टेबिल टेनिस की गेंद के आकार में सम्पीडित कर दी जाए तो वह एक ब्लैक होल में बदल जाएगी।

विम्फाट की शक्ति का भी इतना ही आका गया हे। ऐस विस्फोट से वायु मे कावन-14 की मामान्य मे अधिक उपस्थिति की सभावना रहती है। अरिजोना तथा लॉस एजल्म क निकट क 300 वप पुरान वृक्षा की जब जाच की गई तो सन् 1909 म वहा कावन-14 का उच्चतम म्तर प्राप्त हआ। यह उच्चतम स्तर भी एक विम्फाट क कारण प्राप्त किए गए म्तर का सातवा भाग ही था। इसलिए लिब्बी तथा उनक साथी वज्ञानिका ने प्रति पदाथ क द्वारा विस्फोट होन वाले विम्फाट क सिद्धात का नकार दिया।

मितम्बर 1973 मे ए ए जक्सन (A A Jackson) तथा माइकल पी रायन (Michael P Ryan) ने 'मिनी ब्लेक होल' का सिद्धात दिया ओर कहा कि हमारे ब्रह्माण्ड क जन्म के समय ही इन मिनी ब्लैक हाला का निमाण हा गया था। एक मिनी ब्लक हाल के पथ्वी म से गुजरने से साइबेरिया जैसी घटना घटित हा मकती है लकिन इम सिद्धात का वज्ञानिक मान्यता नही मिली क्याकि यदि साइबरिया स पृथ्वी क अदर अपनी यात्रा शरू करने वाला ब्लैक हाल जब पृथ्वी क दूसरे सिर पर जा कर निकलता ता वहा भी माइबरिया जैसा ही प्रलयकारी विस्फोट होना चाहिए था।

धमकतुआ अथवा उल्कापिण्डो क फटने के कारण हुए परमाण विस्फोट क सिद्धात को यदि मही मान लिया जाए ता इस बात की पूरी सभावना ह कि किसी दश के वायुमण्डल म प्राकतिक शक्तिया द्वारा हाने वाला एमा विस्फोट किसी परमाणु युद्ध की सभावनाए न पैदा कर दे। सन् 1844 म पहली बार तत्कालीन कोनिस्बग (Konigsberg Prussia) की वधशाला म खगोलशास्त्री एफ डब्ल्यू बसल (F W Bessel) न आकाश क सबसे चमकदार सितारे साइरिअस (

माग का अतिनियमित पाया, जिससे लगता था कि साइरिअस का एक 'अदृश्य साथी' भी ह जो उसे सीधी रखा क मार्ग मे विचलित कर रहा हे। 19 वर्ष बाद अमरिकी टलीस्कोप निमाता एल्वन क्लाक ने इस 'अदृश्य साथी' का दख लिया आर पाया कि इसका रग सफेद है अर्थात् यह एक गम तारा ह। इसका आकार बहुत छाटा ह इसलिए यह माना गया ह कि इसका भार सूर्य क बराबर ही हागा क्याकि यह अत्यधिक सघन तारा था। इस तार को 'व्हाइट ड्वाफ' (White drawf) का नाम दिया गया। बाद में इस तरह के अन्य पिण्ड भी दिखाइ पडे।

अग्रज वज्ञानिक आर एच फाउलर (R H Fowler) तथा भारतीय वैज्ञानिक सब्रह्मण्यम चद्रशखर ने सन् 1930 मे अपनी ऊर्जा जला रह तारो क अपन ही भार मे सिकुड कर सघन पदाथ म बदल जाने सबधी गणनाए की। चूँकि पदाथ परमाणुआ स बनता हे आर परमाणु खाखले होते हे इसलिए उनका अपन आप म ध्वस्त हा जाना अवश्यभावी हे। इसे सिकुडना भी कहा जा सकता है। वज्ञानिक चद्रशखर का ख्याल था कि सूय से 50 गुना बडे बहुत म तार इतनी तेजी स जल रहे है कि एक या दा करोड साल म पूरी तरह जल जाएगे—तब उनका क्या होगा या जा तार अभी तक जल चुक ह उनका क्या हुआ होगा? क्या यही तारे ही तो ब्लेक होल नही बन गए हे?

सन 1885 म एक तारा 25 दिन तक 1 करोड सूर्यो क बराबर प्रकाश दता रहा था आर फिर उसका प्रकाश इतना धीमा हा गया कि उसे शक्तिशाली दूरदर्शी स भी दखना असम्भव हागया। इसस पहल सन् 1517 म एसी ही एक घटना प्रकाश म आई थी। ये घटनाए चद्रशखर क अनुमाना का सत्य सिद्ध करती हैं।

परमाणु बम बनाने मे प्रमुख भूमिका अदा करने वाले जे राबर्ट ओपेनहाइमर (Robert J Oppenheimer) ने अपने अध्ययनो स तारा स सिकुडत चले जाने अत्यधिक सघन हात चल जाने तथा शक्तिशाली गुरुत्व पदा करने के सिद्धात का समथन किया। आईस्टीन का सापेक्षता का सिद्धात इसस पहले तारों और ऊर्जा के रहस्य को समझने म मदद दे चुका था।

विज्ञान के विकास क साथ हम रेडियो तरग छाडने वाल 'पल्सर' (Pulsers) तारा का पता चल चुका हे। इन तारा की मदद स 'व्हाइट ड्वार्फ्स' तथा 'न्यूट्रॉन सितारा' को परिभाषित करने की काशिश की गई ह लकिन सभी खगोलज्ञ अभी भी 'ब्लेक हाल' के सिद्धात से सहमत नही ह। उनके अनुसार 'या तो आकाश मे छेद है या सापेक्षता क सिद्धात म ही छेद हे।'

इस रहस्य का अनसुलझा प्रश्न यही रह जाता ह कि यदि ब्लेक हाल नही तो फिर कान-सी वज्ञानिक परिघटना से साइबेरिया क विस्फाट का परिभाषित किया जाए? अगर ऐसा नही था तो क्या वास्तव मे अतरिक्ष म आन वाली कोई उडन-तश्तरी म यात्रिक खराबी आ जाने से यह विस्फाट हुआ था? आस्ट्रेलियन पत्रकार जॉन बॉक्स्टर (John Baxter) तथा अमरिकी विद्वान थामस एटकिन्स (Thomas Atkins) न इस तरह के कई तथ्य पेश करन की कोशिश की है लकिन इससे साइबरिया का यह विस्फोट और भी रहस्यमय हो जाता है। ● ●

# रक्त-पिपासु सीथियन घुडसवार

---

*मानव इतिहास मे आज तक जितने भी लडाकू कबीले हुए है, उनमे सीथियन घुडसवारो का नाम सर्वोच्च है। बर्बरता, क्रूरता तथा मानव रक्त के प्रति सीथियनो का प्रेम बेमिसाल है।*

*मध्य रूस के घास के मैदानो मे इन्हीं सीथियनो ने महान् राजा डेरियस की फौजो को गुरिल्लायुद्ध करके पराजित कर दिया था। सीथियन अपने पीछे न केवल रक्त और खून-खराबे की दास्तान वरन् वे अपनी युद्ध तकनीक तथा सोने जैसी कीमती धातु के अद्भुत शिल्प भी छोड गए है।*

*बर्बरता और कलात्मकता का यह अनूठा समन्वय लम्बे अर्से से मानव विज्ञानियो को उलझाए हुए है। यह आज भी रहस्य है कि सीथियनो का वास्तविक जीवन क्या है? वे कौन-सी भाषा बोलते थे? उन्होने अत्यत सुदर स्वर्ण शिल्पो का निर्माण कैसे किया? वे किन परिस्थितियो मे इतने बर्बर बने?*

---

मध्य रूस (Central Russia) के घास के मैदानो पर आज से ढाई हजार वर्ष पहले रक्तपिपासु बर्बर घुडसवार सीथियनो (Scythians) का प्रभुत्व था। ये अनपढ, घुमक्कड तथा शराब मे रक्त मिला कर पीने वाले घुडसवार उस युग के आतक थे। इन्हे आज भी अपनी बहादुरी की सीमा हीनता तथा अपने शत्रुओ का कत्लेआम करने की क्रूरता के सदर्भ मे याद किया जाता है। सीथियनो ने भाषा को बर्बरता और क्रूरता के विषय मे एक उपमा ही प्रदान कर दी है। इस तरह सीथियन घुडसवार एक ऐसा मिथक बन कर रह गए है जिसके बारे मे बहुत कम मालूम है। इन घुडसवारो का क्या स्रोत था? वे किस तरह का जीवन बिताते थे? इन [illegible] योद्धाओ ने अत्यत सुदर स्वर्ण शिल्प की कला कैसे सीखी? उनकी भाषा [illegible] थी?

ईसा से 5 शताब्दी पूर्व के यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने अपनी पुस्तक 'पार्शियन वार्स' (Persian Wars) मे सीथियनो के बारे मे [illegible] दी है। इस जानकारी को प्राप्त करने के लिए हेरोडोटस ने डोन (Don) नदी व डान्यूब (Danube) के बीच मे विस्तृत पोंटिक (Pontic) [illegible]

हेरोडोटस ने लिखा है कि सीथियन अपने [illegible]
उतार लिया करते थे जिनसे वे कोट, [illegible]
साफ करके प्याले का आकार दे दिया [illegible]
का मिश्रण पिया जाता व इसी से [illegible]



घुडसवार सीथियन स्वर्णकला का एक नया नमूना

सीथियन युद्ध म अपन पहल शत्रु का मार कर उसका रक्त पीते थे। हर वर्ष जब उनका समारोह होता तो एस सीथियन का सम्मान नही मिलता था जिसन पिछल समारोह स नए समारोह तक किसी की भी हत्या न की हो। सीथियन अपन शत्रुओ की खोपडियो को हाथ साफ करन क नेपकिन क रूप म भी प्रयोग करत थे। जिस सीथियन क पास जितने नेपकिन होत वह उतना ही गणमान्य माना जाता था। व सभी युद्धबंदियो को नही मारत थ वरन् कुछ को अपने देवताओ के समक्ष बलि दन क लिए छोड दत थ। प्रत्यक सौ बंदियो म स एक की बलि दी जाती थी। बलि देन का तरीका बहुत भयानक था। सबस पहले बंदी के दाए हाथ और भुजा को काट कर हवा म उछाल दिया जाता था।

हेरोडोटस क वर्णन क अनुसार सीथियन शायद ही कभी नहाते हो तथा उनकी औरते स्नान करन क लिए एक किस्म की जडी की लुगदी प्रयोग करती थी। सीथियन कई-कई विवाह करते गाढी शराब पीत तथा हशीश का नशा करते थे। घोड और कुछ छोटी-छोटी गाडिया ही उनका घर थी।

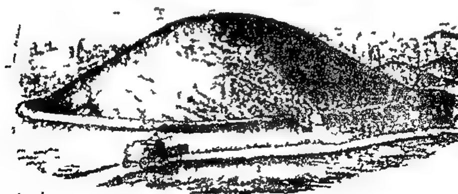
सीथियनो की सैन्य विशेषताओ के बारे मे बतात हुए हेरोडोटस ने फारस के सम्राट डेरियस महान् की 700 000 सेनाओ तथा सीथियन घुडसवारो के युद्ध का बडा जबर्दस्त वर्णन किया है। जमीन से 8 फुट ऊचे घोडो पर सवार सीथियन बार-बार

तीन धारा से युक्त तीरा की वर्षा करने मे कुशल थे। वे डारयम की मनाआ पर हमला करते ओर फिर जादू की तरह मेदानो मे गायब हा जात। कइ माह तक पडोसी कबीला की मदद से सीथियनो न डेरियस को छकाया। अतत खाद्य की कमी तथा थकान से चूर हाकर डरियस की सेनाए पराजित होकर लाट गइ।

सीथियन खती न करक अपन मवशिया क आधार पर जीवित रहत थे। एक अन्य यूनानी लेखक ओषधियो के प्रवर्तक हिप्पोक्रेट्स (Hippocrates) न बताया हे कि सीथियनों की चार पहियो वाली गाडिया साडा (Oxen) द्वारा खीची जाती थी तथा उन्ह तम्बू की शक्ल मे बनाया जाता था।

वहरहाल, हेराडोटस क वणन स मीथियना का स्रोत पता नही चलता कि उनके पूर्वज कोन थे? इस बारे मे यूनानी इतिहासकारा न कुछ अविश्वसनीय कहानिया पश की हैं। एक कहानी के अनुसार व एशिया से आए थे, दूसरी के अनुसार बारिस्थेनस (Borysthenes) नदी की पुत्री व जियस क पुत्र टारगिटोस (Targitaus) की सतान थे। तीसरी कहानी क अनुसार ये घुडसवार हेराक्लिस (Heracles) तथा ओरत व साप क आधे-आधे शरीर वाल किसी जीव की मिली-जुली सतान थ।

सन् 1715 म साइबेरिया क एक खान मालिक द्वारा रूस क जार पीटर दॉ ग्रेट (Peter the Great) को दिए गए एक उपहार से सीथियनो के मूल तथा अन्य छिपी हुई विशेषताओ के बारे मे जानकारी का रास्ता खुला। सीथियनो की कब्रो की खुदाई मे सोने की बनी हुई मूर्तिया तथा शिल्प प्राप्त हुए। बाद मे इनकी लूट-मार रोकने के लिए पीटर ने आज्ञा निकाली कि सीथियनो का दफनाया हुआ खजाना सीध-मीधे राजकीय कोषागार म जमा किया जाए। सन् 1725 म पीटर की मृत्यु के पश्चात् सीथियनो की कब्रो को खोदन की कार्यवाही पुन प्रारम्भ हो



सीथियन कबीले के एक मुखिया का मकबरा।

गइ। इन ऩत्रो म मिली सामग्री स पता चलता ह कि सीथियनो क अंतिम सस्कार की क्रियाओ का हेरोडोटस न सही वणन किया था।

सीथियनो म किसी राजा की मत्यु होन पर उसका शव चीर कर अदर स साफ कर क सशोधित पदार्थो का उसम भर दिया जाता था। शव पर मोम की परत चढ़ा कर उस प्रत्यक कबील म घमाया जाता था। गरही (Gerrhi) कबील म पहुच कर एक चाकार गडढ म एक चटाइ पर शव रख दिया जाता था। लकडी क तख्तो स बनाइ गइ एक छत भालो की सहायता स गडढ क ऊपर बिछा दी जाती थी। राजा की एक रखैल उसका रसोइया साईस सवक व प्रबधक भी गला घोट कर मार दिए जात थ तथा इन्ह भी राजा क साथ दफनाया जाता था। राजा क घोड व सोन क प्याल (सीथियन चादी या ताब का प्रयोग ही नहीं करत थ) भी मकबर म गाड दिए जात थ। जब यह कायक्रम परा हो जाता तो सभी कबील वाल उत्साह स मकबर का टीला बनाना शुरू करत तथा उस ऊच स ऊचा बनान की कोशिश की जाती थी।

हेरोडोटस क इस वणन की अब रूसी पुरातत्त्वशास्त्रियो न पुष्टि कर दी ह। उन्होन काल सागर क उत्तर पूव म क्रासनोडोर (Krasnodor) जिल म 49 फुट ऊची मिट्टी की एक कब्र खोज निकाली जिसक पास 360 घोड दफन किए गए थ। सीथियन अपन राजा की मत्यु क बाद सुरक्षा करन क लिए उसकी मृत्यु की पहली वषगाठ को एक बडा भयकर कमकाण्ड करत थ। व पूव राजा क 50 सवको का गला घोट कर मार डालत व 50 सुदर घोडो क प्राण लकर उनक ऊपर इन सवको को बैठाकर मकबर क चारो ओर गोला बना कर खडा कर दत। इस काम क लिए घोडो क शरीरो व उनक सवारो क शरीरो म खूट ठोक दिए जात थ।

सीथियन शामन (Shaman) नामक दवता को मानत थ जो औषधि जादू, पशु तथा भविष्यवक्ता क रूप म दखा जाता था। इसस पता चलता ह कि सीथियनो क जीवन में इन चीजो का कितना महत्व था। सोन पर की गइ कलाकारी म भी अधिकाशत पशुओ को ही दशाया गया ह।

सोना सीथियनो के जीवन म बडी पवित्र भूमिका का निवाह करता था। इसलिए उनक कबीले म स्वणकार को शामन दवता क समान सम्मान मिलता था। व सोन को पवित्र मानत थ और उसके समक्ष बलिया दत रहत थ।

सीथियन कबील चार भागो म बट हुए थे—श्रमिक किसान घुमक्कड तथा शाही कबीले। यद्यपि शाही कबीला भी घुमक्कड होता था लेकिन वह बाकी तीन कबीलो पर सख्ती से शासन करता था।

विशषज्ञो का कहना ह कि जब तक और अधिक सीथियन कब्रो (जिन्हे कुरगन (Kurgan) कहा जाता हे) की खुदाइ नही होती तब तक इस प्रश्न का उत्तर नही मिल पाएगा कि सीथियनो की भयानक बबरता तथा सोन पर की गइ नक्काशी ओर शिल्पकारी का परस्पर विरोधी मल कस हआ? अनुमान लगाए जा रह ह कि सीथियन एक एस इलाके म रहते थ, जो बाहरी आक्रमणकारियो क लिए खुला

हुआ था, इसलिए उन्हे आत्मरक्षा क लिए बबर और लडाकू बनना पडा। चूकि व मकाना मे या एक जगह टिक कर नही रहते थे इसलिए उनके लिए दीवारा इत्यादि पर अपनी कला को उतारना सभव भी नही था। इसीलिए सोने के लाने-ले जाने योग्य (portable) आकार क शिल्पो की रचना करत थे। सीथियना के इतिहास स कम स कम एक तथ्य तो पता चलता ह कि मनुष्य बबर स्थिति मे भी रचनात्मक भूमिका का निर्वाह करता रहा ह। सीथियना को इसा स 350 वप पूव उनस भी ज्यादा क्रूर सारामाटा (Saura Matae) कबीलो द्वारा दोन नदी पार करने के बाद घास के मदाना स मार कर भगा दिया गया। अपनी लूट-माग से अमीर हो चुक सीथियना के कबील इस पराजय स बिखर गए आर इसा स 106 वप पूव उन्ह मिथ्राडट्स दॉ ग्रेट (Mithradates the great) नामक पोटस (Pontus) क राजा ने नष्ट कर दिया।

लेकिन उनक साथ सीथियनो का रहस्य नष्ट नही हुआ। इतिहासकारो मानव-विज्ञानियो व पुरातत्वशास्त्रियो का आज भी वे अनुत्तरित प्रश्न बेचेन कर रहे हैं, जिनका उत्तर मिल जान से मानव विकास क इतिहास का एक बडा अध्याय खुल जान की पूरी सभावना ह।

••

# क्या सहारा रेगिस्तान कभी हरा-भरा भी था?

---

*अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान का नाम आते ही आंखों के सामने रेत के तपते हुए टीलेदार मैदानों और प्यास से तड़पते यात्रियों की तस्वीर आ जाती है। 2 हजार साल से सहारा ऐसा ही है—मानवों के लिए अनुपयोगी और प्रकृति द्वारा दिया गया एक अविमोचनीय शाप।*

*लेकिन सहारा हमेशा से ऐसा ही नहीं था। किसी युग में यह हरा-भरा और उपजाऊ था और यहां एक ऐसी नीग्रो जाति बसती थी जिसकी रचनात्मक विरासत हम आज भी गुफाओं में तथा चट्टानों पर की गई रंगीन चित्रकारी के रूप में मिलती है।*

*यदि सहारा कभी हरा भरा था तो यह इस शुष्क रेगिस्तान में कैसे बदला? सहारा पर होने वाली ये प्राणदायी मानसून वर्षाएं क्यों बंद हो गईं? क्या सहारा के निवासियों ने स्वयं अपने विनाश की भूमिका तैयार की थी?*

---

ईसा से 430 वर्ष पूर्व यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) ने सहारा (Sahara) का जिक्र एक ऐसे रेगिस्तान के रूप में किया है जिसमें रेत के ऊंचे-ऊंचे टीले तथा दूर-दूर तक फैले जलरहित रेत के मैदान हैं। हेरोडोटस ने उन लोगों का जिक्र भी किया है जो इस रेगिस्तान में रहते थे तथा जिनकी परम्पराएं और रीति-रिवाज विचित्र से थे।

आज 2 हजार से अधिक वर्ष बीत चुके हैं। सहारा रेगिस्तान की तस्वीर वैसी की वैसी ही है। 33 लाख वर्ग मील में फैला हुआ दुनिया का यह सबसे बड़ा रेगिस्तान लगातार बढ़ता जा रहा है क्योंकि उसमें रहने वाले 20 लाख लोगों ने कुछ एक हरे-भरे इलाकों की सीमा में अधिक प्रयोग किया है तथा लगातार गहरे और गहरे कुएं खोदने के कारण पानी का स्तर और नीचे चला गया है। आधुनिक तकनीकी योजनाएं भी इस रेगिस्तान को मानवोपयोगी बनाने में असफल हैं। सहारा की एक चौथाई सतह रेत से ढकी हुई है बाकी हिस्से में पहाड़ियां, ज्वालामुखी व मरुद्यान (oasis) इत्यादि हैं।

ऐसा नहीं कि सहारा हमेशा से ही बंजर और अमानवीय रहा हो। भूविज्ञानियों तथा पुरातत्वशास्त्रियों को इस बात के निश्चित प्रमाण मिले हैं कि यह प्रदेश कभी हरा-भरा, उपजाऊ, खेती व शिकार करने वाले नीग्रोइड (Negroide) नस्ल के लोगों से भरा हुआ था, जो हाथी, हिप्पोपोटामस, मछलियां, मोलस्क, भैंसे तथा जंगली सांड इत्यादि पालते थे। सहारा में तास्सिली एन अज्जेर (Tassili



सहारा की अनपजाऊ जमीन में उगा हुआ जैतून का यह वृक्ष बता रहा है कि कभी यह प्रदेश हरा भरा रहा होगा।

N Ajjer) नामक जगह पर मिली गुफाओ की दीवारो तथा चट्टानो पर शानदार चित्रकारी मिली है।

वैज्ञानिक इस प्रश्न का उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे है कि सहारा हरे-भरे इलाके से आखिर एक रेगिस्तान में कैसे बदल गया? सहारा की हरियाली की एक मात्र वजह थी मानसून वर्षाओ का उत्तर की ओर बढना। ईसा से 10 000 वर्ष पूर्व उत्तरी ओर मध्य अफ्रीका से नमी लाने वाली इन वर्षाओ से सहारा की जलवायु काफी आद्र हो गई थी। 7000 से 2000 ईसा पूर्व तक सहारा की झीले अपने सर्वोच्च बिंदु पर पहुच गई थी। किन्ही अज्ञात कारणो से मानसून वर्षाओ में कमी आने लगी ओर वाष्पीकरण की दर बढ गई। सूर्य ज्यादा तेजी से नमी सोखने लगा। ईसा से 750 वर्ष पूर्व तथा बाद में 500 ईस्वी में कुछ नमी की अवस्था रही लेकिन झील सूखने लगी तथा धीरे-धीरे सहारा रेगिस्तान मे बदलने लगा। सहारावासियो के पशुओ के चरने भूमध्यसागर वनस्पतिया की जगह उष्णकटिबधीय वनस्पतियो को उगाने, पहाडी जगलो के कटने की कई सो वर्ष तक चली प्रक्रिया ने सहारा को वर्तमान हालत में पहुचा दिया। आज हमारे सामने सहारा की हरियाली के सबूत के रूप मे केवल भित्ति चित्र (Wall paintings) तथा उस जमाने के कुछ औजार ही बचे रह है। सहारा की नदिया किसी समुद्र में न गिर कर वही के प्राकृतिक जलाशयो में गिरती थी। जब नदियो में पानी कम हुआ तो उनकी कमजोर धाराए अपने ही रास्तो में रुक कर दलदल बन गई। सूर्य ने दलदलो का पानी सोख लिया। इसका सबूत अभी भी सहारा की एमाडोर (Amadror), तेगाजा (Teghaza) तथा ताओयुदेन्नी (Taoudenni) जैसी जगहो पर पाए जाने वाले सोडियम क्लोराइड (नमक) से मिल सकता हे। रेत के टीले ओर विस्तृत क्षेत्रो के निर्माण की प्रक्रिया को भी इसी से समझा जा सकता हे।



'मवेशी युग का एक चित्र जो तास्सिली एन एज्जर म मिला था।

सन 1822 म डिक्सन डनहाम (Dixon Denham) हग क्लपटन (Hugh Clapperton) तथा वाल्टर आडन (Walter Oudney) नामक अग्रज अन्वषका न चाड (Chad) झील खाजी। यह सहारा क अनुसधान की शुरुआत थी। मजर अलग्जडर गाडन लग (Major Alenander Gorden Laing) न टिम्बकटू (Timbuktu) जसा पोराणिक शहर खाज निकाला। सन् 1828 म रन काइला (Rena Caillie) नामक फ्रासीसी न एक अरब का वश बना कर टिम्बकटू स तमाम कठिनाइया का झलत हुए मारक्को तक की पदल यात्रा की। रन का रास्त मे कइ जगह रगिस्तानी मगतष्णा (mirage) का भी शिकार हाना पडा।

सन् 1830 म अल्जीयर्स (Algiers) पर कब्जा करन क बाद फ्रासीसिया न *ट्रासमहारा रेलव के लिए सर्वेक्षण शुरू किया। इस गतिविधि के दौरान सन्* 1855 म जमन अन्वषक-वैज्ञानिक हाइनरिख बाथ (Hainrich Barth) न पूरे सहारा की यात्रा की आर उसका पहला अधिकारिक मानचित्र तैयार किया, जिसस उन पहाडिया का पता लगा, जहा आज भी यहा-वहा जतून (olive) आर सरु के वक्ष मिलत ह। बाथ क इस कारनाम स ही सहारा की पुरातात्विक शोध की शुरूआत हुई।

बाथ क अध्ययन ने सहारा के इतिहास का ऊट-युग तथा पूर्व-ऊट-युग म बाट दिया क्योकि फजान (Fezzan) तथा एयर (Air) क्षत्र म मिलन वाली चित्रकारी म ऊट का चित्र मोजूद नही हे। 19वी शताब्दी की समाप्ति क समय फ्रासीसी भू-विज्ञानी जी बी एम फ्लेमेण्ड (G B M Flamand) ने अल्जीरिया म दक्षिणी औरान (Oran) की गुफाआ की नक्काशी का अध्ययन करके सहारा के इतिहास की और बारीकी से खोज की। उन्होने नक्काशिया मे बन मवशियो क चित्रा से अनुमान लगाया कि मवेशिया के युग व ऊट क युग के बीच मे सहारावासी अरब अश्वपालन युग से भी गुजरे थ। बाद के अध्ययना से यह स्पष्ट हुआ कि

अफ्रीका मे 2000 वर्ष पूर्व ही ऊट का प्रयोग हाना प्रारम्भ हुआ ओर ईसाइ युग के बाद इमका प्रयाग लाकप्रिय हुआ।

*मध्य सहारा मे बिखरे हुए पत्थर के औजारो की रपट भी फ्रासीसी भू-विज्ञानियो* द्वारा मिली आर सन् 1933-34 आते-आते उनक प्रमाण भी मिल गए। पूरा पापाण युग तथा नव पापाण युग के अवशेष मिलन से अब यह स्पष्ट हो गया ह कि हाथी आर बारहसिघ जैसे जानवर भी कभी सहारा म अपना जीवनयापन करते थ तथा मनुष्य भी जल-जीवो को पालता व उनका शिकार करता था।

तास्सिली एन'अज्जेर (Tassili N'Ajjer) नामक पठार की खूबसूरत चट्टाना के बीच एसी-ऐसी चित्रकारी पाइ गई हैं, जिनके चित्र 26-26 फुट ऊच है। शताब्दिया पुरानी यह अद्भुत कला कई पीढियो के योगदान से ही अस्तित्व मे आई हागी। इनमे शामिल महिलाआ के चित्रा से जाहिर होता हे कि चित्रो को सबसे पहले नीग्रो नस्ल के लागो ने बनाया हागा। भित्ति चित्रो और नक्काशिया से मिली जानकारी क अलावा होमोइरेक्टस (homoerectus) तथा हामो वश क सबस प्राचीन जीवाश्मा के मिलने स यह सिद्ध हो गया हे कि सहारा तथा अफ्रीका ही मानव जाति का प्रथम निवास स्थान था। चट्टाना के चित्र बताते ह कि पुराने युग मे सहारावासी बहुपत्नी प्रथा मे विश्वास करत थ। इन चित्रो की वेज्ञानिक जाच से इनमे आयरन ऑक्साइड मिला हे। स्वाभाविक ही हे कि आयरन ऑक्साइड की विभिन्न रग छायाओ से ही ये चित्र बनाए गए होगे। पहले किसी नुकीली डण्डी से रखाए खीची गइ होगी तथा बाद मे ब्रुशो के प्रयोग से चित्रा म रग भर गए हागे। सहारा की मिट्टी तथा वनस्पतियो के जीवाश्मो की वेज्ञानिक जाच-पडताल से इस भ्रम का खण्डन हो गया है कि सहारावासी कृषि-कार्य मे सलग्न रहे होग।

सहारा के इतिहास की परते खुलने के बाद यह पता चला कि क्या पश्चिमी अफ्रीका के काले आदिवासी एक समय गुलामा क बाजार की सबस कीमती वस्तु थे। भयानक अकालो ने सहारावासियो म परस्पर सघर्ष के बीज बाए आर उसका लाभ उठाया अरबो ने। वे उनकी कमजोरी का लाभ उठा कर उन्हे पकड-पकड कर गुलामो के रूप मे बेचने लगे। आज भी सहारा के विभिन्न क्षेत्र इन अकाला व अन्य प्राकृतिक आपदाओ के निमम हमले स पीडित हैं। सन् 1913 म प्लेग तथा काल का मिला-जुला हमला हुआ जिसमे 10 लाख लोग मोत का शिकार हो गए। सन् 1972-74 मे इन्फ्लुएजा महामारी व अकाल की सयुक्त विपत्ति न सहारा मे मनुष्य को मनुष्य का दुश्मन बना दिया। यद्यपि अतराष्टीय सहायता न सन् 1913 के अकाल के बराबर का हादसा नही हाने दिया, फिर भी अभी तक अकाल क शिकारो की सख्या का ठीक-ठीक पता नही चल पाया ह।

आधुनिक युग की खाजो ने सहारा के भविष्य को थोडा-बहुत सभावनामय बनाने की कोशिश की हे। सहारा के गर्भ मे तेल, गेम, लोह-अयस्क तथा अन्य कीमती धातुओ के भण्डार मिले हैं लेकिन अभी भी इस प्राकृतिक सम्पदा का सदुपयोग

सहारा के निवासियो के हित म नही हो पा रहा है। वहा के घुमक्कड मवेशीपालक आज भी बच-खुचे हरे-भरे क्षेत्रो पर अपने मवेशी चरा रहे हैं, जो आत्महत्या क समान है क्योंकि इससे रेगिस्तान का विकास होता है और उपजाऊ जमीन कम हाती है।

सन् 1965 मे हुई जनगणना स पता चला है कि सहारा की जनसख्या म थोडी वद्धि हुइ है। साथ ही साथ क्या इससे यह आशका उत्पन्न नही हो गई कि भावी अकालो मे ओर ज्यादा मोत हागी?

सहारा आज भी पुरातत्वशास्त्रियो भूविज्ञानियो तथा मौसम विज्ञानिया क लिए रहस्य बना हुआ है। वह कौन-सा कारण था कि मानसून वर्षाओ ने सहारा जमीन का हरा-भरा बनाना बद कर दिया? क्या उस कारण का जानकर आज क सहारावासिया के जीवन को पुन हरा-भरा नही बनाया जा सकता?

● ●

# नयी दुनिया की खोज किसने की थी?

---

*500 वर्ष पहले कोलम्बस ने अमेरिका की खोज की थी। उससे पहले नोर्स क्वीसे अमेरिका की धरती पर पैर रख चुके थे] लेकिन अब यह कहा जाने लगा है कि नई दुनिया के खोजकर्ता कोई और ही थे अर्थात् कोलम्बस से पहले भी अमेरिका को खोजा जा चुका था।*

*क्या फोनेशियनो, चीनियो या वाईकिंगो ने कोलम्बस की प्रसिद्ध यात्रा से पहले ही नई दुनिया तक पहुचने मे सफलता प्राप्त कर ली थी? अमेरिका के पुराने खण्डहरो मे आज भी चीनी, फोनेशियायी तथा नीग्रो मुखाकृतियो की प्रतिमाए मिलती हैं। क्या ये इस बात का सबूत नहीं हैं कि कोलम्बस के पहले भी नई दुनिया कोई अनजानी जगह नहीं थी।*

*इस विषय मे शोधकार्य चल रहा है। अभी तक हुए शोधकार्य से जो परिणाम निकले हैं, वे निश्चय ही चौका देने वाले हैं।*

---

मन 1450 ओर सन् 1550 के बीच के सौ वर्षो को खाजा का युग कहा जाता हे क्याकि इसी अवधि मे नइ दुनिया की खोज हुइ थी। कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खाज इतनी महत्वपूर्ण साबित हुइ कि उसने अन्य खाजा क महत्व को बहुत कम कर दिया। यदि इस तथ्य को एक अतिम सच्चाई मान लिया जाए कि 40 000 वर्ष पहले एक जमीनी पुल से (land bridge) अमरिकी आदिवासी रैड इण्डियन एशिया से अमेरिका पहुचे थे तो इस सवाल का जवाब देना मुश्किल हा जाएगा कि पूर उत्तरी अमेरिका मे इन आदिवासियो का जीवन आर समाज आदिकालीन अवस्था म क्यो बना रहा जबकि दक्षिण अमेरिका म मक्सिका युकाटान (Yucatan) व पेरु (Peru) म इस बीच उच्च काटि क तकनीकी ज्ञान मे युक्त जटिल समाजो की रचना हो चुकी थी। इका (Incas) आर अज्टक (Azetecs) सभ्यताआ क जन्म से पहले ही दक्षिण अमेरिका का यह विकास हो गया था। उत्तरी अमरिका के अविकसित बने रहने का रहस्य खोजन म ही इस प्रश्न का उत्तर निहित ह कि क्या कोलम्बम स पहले भी नइ दुनिया अथात् अमरिका की खाज हा चुकी थी?

प्रसिद्ध यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने लिखा ह कि इसा स 6 मा वप पहले मिस्र क फराआ नका (Necho) ने फोनशियन (Phoenicians) नाविको का अफ्रीका क चक्कर लगाने का आदेश दिया क्योंकि वे ही उस जमाने क सबस कुशल नाविक थे। बाइबिल मे इन फोनेशियनो का कननाइट (cananites) कहा गया ह। प्र

फानशियन अफ्रीका म माना आर चादी माइप्रम म ताबा भारत स सगमरमर तथा स्पन म टिन मीस व लाह का व्यापार करत थ।

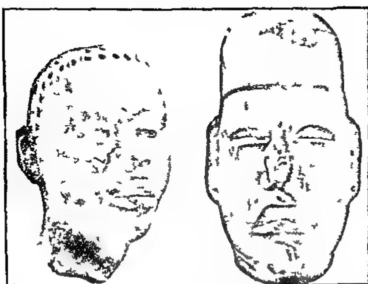
फानाशयना न लाल सागर म अपन जल-पात उतार दिए आर कइ वप बाद लाट कर फराआ का बताया कि अफ्रीका का चक्कर लगात समय उन्हान सूय का दक्षिण दिशा म दखा। हगडाटम न इस दाव का स्वीकार नहीं किया ह लकिन बाद क विद्वाना न इसकी सत्यता मानी ह। अब यह पता चल गया ह कि इन नाविका न कप्रिकान (Capricorn) क उष्णकटिबध म आग तक की यात्रा की थी क्याकि यही सय आकाश म उत्तर म पश्चिम की आर यात्रा करता ह।

कार्थेज (अफ्रीका का प्राचीन नगर) क फानशियना न अपन तीन डका वाल जहाजा म बठकर एक अनमान क अनसार एजारस (Azores) तक पहचन म सफलता प्राप्त की थी। यह भी दावा किया गया ह कि मिस्र क फराआ द्वारा करवाया गया यह अभियान परानी दनिया क नइ दनिया म प्रथम स्थलावतरण (land fall) पर जा कर समाप्त हा गया।

मन 1872 म ब्राजील क एक बागान में मिला एक शिलालख इस तथ्य का सबूत माना जाता ह। रिया डि जनरिया (Rio de Janerio) ब्राजील क सग्रहालय क निदशक लादिस्लाउ नटा (Ladislau Netto) न इस शिलालख का फानशियन बताया आर इस पर लिखी भाषा का अनुवाद भी कर डाला। इस शिलालख म बताया गया ह कि किस तरह दवी-दवताआ का प्रसन्न करने क लिए एक युवक की बलि दकर लाल सागर म 10 जहाज यात्रा करन निकले ओर दा साल तक अफ्रीका का चक्कर काटत रह। तूफान न जहाजा का एक दूसर स अलग कर दिया। इसी कारण 12 परुष व स्त्रिया न एक 'नए तट पर डरा डाल दिया।



यह वह पत्थर है जिस पर खुदी लिपि का एक अर्थ यह भी निकाला जाता है कि यह फानेशियनो द्वारा की गई समद्री यात्रा क बार में है।



चीनी तथा नीग्रो लोग कोलम्बस से पहले अमरिका पहुंच चुके थे।

एक 'नए तट' का लोहे का द्वीप (an island of iron) भी समझा जाता है क्योंकि ब्राजील के मिनास गेराइस (Minas Gerais) के इलाके में जहां यह शिलालेख मिला था लोह अयस्क (Iron ore) भारी मात्रा में मिलता है।

इस शिलालेख की ऐतिहासिक प्रामाणिकता भी निर्विवाद नहीं है। अमरिका की खोज का इतिहास लिखने वाले सैमुअल इलियट मॉरिसन (Samuel Eliot Morison) ने इस पूरी कहानी को कल्पना की उपज बताया है तथा एक अन्य विशेषज्ञ फ्रैंक एम. क्रास (Frank M. Cross) ने इसे भाषा के स्तर पर फोनेशियायी मानने से इंकार कर दिया है।

सन् 1658 में केप कोड (Cape code) मसाचुसेट्स के बोर्न (Bourne) नामक स्थान पर पाए गए एक शिलालेख से भी कुछ लोग यह मतलब निकालते हैं कि नई दुनिया की खोज पहली बार फोनेशियनों ने ही की होगी लेकिन येल (Yale) इतिहासकार रॉबर्ट लोपेज (Robert Lopez) ने इस पत्थर की प्रामाणिकता को भी मानने से इंकार कर दिया है।

फोनेशियनों को अमरिका का सच्चा अन्वेषक प्रमाणित करने वाला एक मानचित्र सन 1513 में एक टर्किश नौसेनाध्यक्ष ने तैयार कराया था। इस नक्शे में दक्षिण अमरिका का पूर्वी तट ठीक-ठीक प्रदर्शित किया गया था। यह नक्शा अलेक्जेंडिया के विशाल पुस्तकालय के चार्टों पर आधारित था। यह पुस्तकालय ईसा से 47 वर्ष पूर्व आग में जल कर नष्ट हो गया था। अगर ऐसा था तो निश्चित रूप से यह जानकारी मिस्री नक्शानवीसों को फोनेशियन नाविकों से ही मिली होगी। यूनानी लेखक डियोडोरस सिकुलस ने भी ईसा से एक शताब्दी पूर्व अमरिका की खोज का श्रेय फोनेशियनों को दिया है।

फार्नीशियनो क अलावा अमरिका की खाज का श्रेय चीनियो को भी दिया जाता है। बताया गया ह कि 459 इस्वी म हुइ शन (Hui Shen) चार अन्य बाद्ध भिक्षुओ क साथ नाकाआ म सवार हाकर उत्तरी प्रशात महासागर को पार करता हुआ लम्ब गालाकार माग स उत्तरी अमरिका पहुचा, जहा से मेक्सिको (दक्षिण अमेरिका) पहचना आसान था। चीनियो स युद्ध स बचन वाली तथा किला व दीवारो का प्रयाग न करन वाली तथा लिखने की कला म कुशल एक सभ्यता को देखा। उन्हाने फू-साग (Fu sang) नामक वक्ष क खाने याग्य बम्बू शूट जेसे अकुर देख। व नाशपती जस लाल फल दन वाल पेड थ जिनकी छाल से कपडो के लिए डारा तथा कागज बनता था व लकडी का मकान बनान म उपयाग किया जाता था।

हुइ शन न अपन वणन म घाडा ऊटो तथा हिरनो का भी जिक्र किया हे,जा गाडिया खीचत थे लकिन इतिहास बताता है कि स्पनियो क हमले से पहले अमरिकी इण्डियनो न पहिया दखा तक नही था। इसस चीनियो का वर्णन अतिशयाक्तिपूर्ण लगन लगता ह।

अमरिका क पुरान खण्डहरा म आज भी चीनी, फानेशियायी तथा नीग्रो मुखाकृति की प्रतिमाए मिलती ह। माया सभ्यता के खण्डहरा म हाथ और पगडीधारी महावत स मिलती-जुलती आकृति का पत्थर मिल चुका हे। जाहिर है कि एशियायी सभ्यता का स्पश मिल बिना यह शिल्प विकसित नही हो सकता था।

चीनियो क बाद तीसरा नम्बर आता हे—वाइकिग याद्धाओ का जा अपन जहाजा म बठकर वार्षिक लूट-मार करन क लिए अमरिका क तट की आर आ निकले हाग। कालम्बस म बहुत पहल 982 ईस्वी, 986 इस्वी व 1001 इस्वी म कइ वाइकिग याद्धाआ क परिवारा ने सेंकडा हजारा मील की यात्रा करते हुए नए-नए भू खण्डो की खाज क दारान न जान कितने नगर बसाए हाग और नइ दुनिया के कितन हिस्सा का प्रकाश म लान की सफलता प्राप्त की हागी।

इस बात क प्रमाण मिलत हें कि अमरिका की खाज क समय वाइकिगा न जिन भू-खण्डो पर कदम रख उनक नाम उनकी प्राकृतिक विशषताआ के आधार पर ही रख दिए। किसी जगह का उन्हान 'चपटी चट्टानो का देश' (Hellu land) कहा ता अगूर पदा करन म सक्षम इलाक का उन्हान वाइनलैण्ड (Vineland) की उपमा दी।

*1004 इस्वी म थारवाल्ड (Thorvald) नामक वाइकिग ने कीलनेस अतरीप* (Cape Keelness) नामक समुद्री भाग की खाज की। वाइकिगा की यात्राआ स जिस भूगोल का हम परिचय मिलता हे, वह बहुत अस्पष्ट किस्म का हे लेकिन उसकी माजूदगी स भी इकार नही किया जा सकता। हा, उनकी अस्पष्टता उनकी सच्चाइ पर सदेह का पर्दा जरूर डाल देती है।

आधुनिक विद्वाना ने अब यह मान लिया है कि उस समय का 'जगलो का दश' आज का बफिन (*Baffin*) द्वीप है, उस समय का 'चपटी चट्टानो का देश' आज का 30

मील लम्बा लेब्राडोर (Labrador) का तट है तथा वाइन लण्ड, सन् 1961 से 1968 तक की गई खुदाई म निकला लॉसे ऑक्स मीडोस (L'Ause aux Meadows) है। वाईकिगो को ही ग्रीनलेण्ड की खोज का श्रेय जाता ह।

पुर्तगालियो ने भी दावा किया है कि कोलम्बस से पहले उनके नाविको न अमेरिका का खोज निकाला था परतु अभी तक पुतगाली अपने दावे को पूणरूप स प्रमाणित नही कर पाए है।

पुतगाली इतिहासकार डा एण्टोनिओ बाइआओ (Antonio Baiao) का तक ह कि पुर्तगाल मे हमेशा नइ दुनिया के होने का सदेह किया जाता था और इन्ही सदहा की रोशनी म कोलम्बस ने सितम्बर-अक्तूबर सन् 1492 मे नइ दनिया की खाज कर डाली।

दिलचस्पी का विषय यह है कि अमेरिका का नाम उस व्यक्ति क नाम पर पडा, जिसन अमेरिका की कालम्बस से पहले खोज कर डालने का झठा दावा किया था। फ्लोरटाइन अमेरिगो वेसप्पूशे (Florentine Amerigo Vespucci) के इस आत्मप्रशसा से भर दावे से प्रभावित हाकर सन 1507 मे नइ दनिया क नक्शे पर 'अमरिका' का नाम नक्शानवीस मार्टिन वाल्डसीम्मलर (Martin Waldseemuller) न लिख दिया।

अमरिगो का दावा आज झूठा साबित हो गया ह। अमरिका नाम आज भी जब-तब हमे उस झूठ की याद दिलाता रहता ह परतु क्या फोर्नाशयना चीनिया वाईकिगा व पुर्तगालियो के दावे भी असत्य ह? क्या कालम्बस स पहल वास्तव म नई दुनिया की खाज नही हा सकी थी? इस रहस्यमय प्रश्न का उत्तर कान दगा?

● ●

# दुनिया का सबसे पहला शहर कौन-सा था?

*5 000 वर्ष पूर्व के शानदार सुमेरियन शहरों को लम्बे समय तक विश्व की पहली शहरी सभ्यता का प्रतीक माना जाता रहा। नई खोजों से यह तथ्य प्रकाश में आया है कि सुमेरियन शहरों से बहुत पहले ही विश्व में शहरी सभ्यता की शुरूआत हो चुकी थी।*

*जेरिको, कैटल हुयुक तथा सेंपित्वी थीर के खण्डहरों से मिलने वाले प्रमाण पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि पहली शहरी सभ्यता हाल की नहीं वरन् प्राचीन पाषाण युग की देन भी हो सकती है। इन तीनों नगरों में सबसे पुराना नगर प्रतीत होता है—जेरिको जिसका बाइबिल में भी जिक्र आया है।*

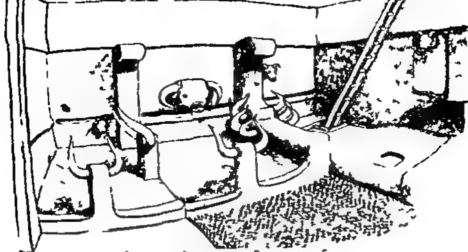
*अब सारे विश्व को इन तीन नगरों के वासियों तथा वहां की सभ्यता के बारे में सभी जानकारियां मिलने का इंतजार है। प्रश्न यह है कि क्या जेरिको से भी अधिक पुराने नगरों के खण्डहर हमारी धरती के नीचे दबे पड़े हैं?*

---

पिछले कुछ वर्षों तक यह माना जाता था कि दुनिया का पहला शहर 5 000 वर्ष पूर्व सुमेरियन (Sumerian) सभ्यता के दौर में निर्मित हुआ था अर्थात् टिग्रिस (Tigris) तथा इयुफ्रेट्स (Euphrates) नदियों के बीच स्थित मध्य-पूर्व के क्षेत्र में जिसे बेबीलोनिया (Babylonia) के नाम से जाना जाता है। यह कहा जाता था कि उर (Ur) उरुक (Uruk) इरिडु (Eridu), लागाश (Lagash) निप्पुर (Nippur) तथा अन्य सुमेरी शहरों से ही सभ्यता की शुरुआत हुई थी क्योंकि इससे पहले का इतिहास लिखित अवस्था में मौजूद नहीं मिलता।

हाल ही में हुई कुछ नई खोजों से इस धारणा पर प्रश्न-चिह्न लग गया है। पुरातात्विक खोजों ने यह साबित करना प्रारम्भ कर दिया है कि सुमेरियन सभ्यता द्वारा बसाए गए शहर ही विश्व के प्रथम शहर नहीं थे वरन् उससे भी पहले प्रागैतिहासिक युग में इस तरह के शहर मौजूद थे, जो आधुनिक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई शहर की परिभाषा तथा शर्तों पर खरे उतरते हैं। ये शर्तें हैं एक ही जगह रहना, निवासियों द्वारा विशिष्ट कला-कौशल तथा आपसी रीति-रिवाज विकसित करना, आस-पास के क्षेत्रों पर खाद्य के लिए निर्भर रहना सामुदायिक या सार्वजनिक भवनों की रचना अर्थात् उपयुक्त मात्रा में संसाधन तथा श्रमशक्ति व एक निश्चित आकार की बस्ती।

प्रागैतिहासिक काल से संबंधित शोध द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत प्रारम्भ हुए। नाभिकीय शोधों ने कार्बन-14 द्वारा प्राचीन वस्तुओं की आयु पता लगाने की

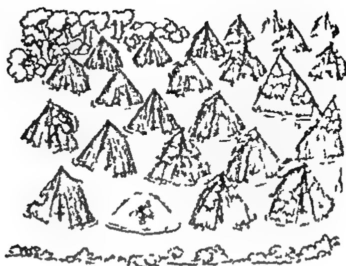


केटल हयक में प्राप्त एक मंदिर का रेखा चित्र।

तकनीक का पता लगाया और यह साबित हो गया कि मानव अपनी वर्तमान शक्ल-सूरत मे 30,000 वर्ष से बिना कोई परिवर्तन किए धरती पर मौजूद है। इस खोज से यह भी स्पष्ट हो गया कि मानव सभ्यता का इतिहास 5,000 वर्ष की सीमा पर नही रुक सकता। वह ओर भी पुराना है। इसी कारण से सुमेरियन शहरो से भी ज्यादा पुराने शहरो को खोजने की कोशिशे प्रारम्भ हुई। इस प्रक्रिया मे जो तीन प्रमुख शहरो के चिह्न मिले, वे हैं जेरिको (Jericho) केटल हुयुक (Catal Huyuk) तथा लपिस्की वीर (Lepenski Vir) लेकिन इन प्राचीन शहरो के खण्डहरो के प्राप्त हो जाने से एक नया रहस्यमय प्रश्न खडा हो गया है कि क्या इससे भी ज्यादा पुराने शहर धरती के गर्भ मे मौजूद हैं?

बाइबिल की 'बुक ऑफ जोशुआ' (Book of Joshua) मे जेरिको शहर का मिथकीय चित्रण किया गया है। जोर्डन (Jordan) पार करने से पहले ही हजरत मूसा का देहात हो चुका है। मूसा के अनुयायी जोशुआ ने इजरायल के लोगो का रेगिस्तान पार करने म नेतृत्व किया। इस धर्म पुस्तक मे बताया गया है कि पश्चिम की तरफ जाने वाले उनके रास्ते मे ही जेरिको शहर पडता था जिसकी दीवारो को जोशुआ के अनुयायियो ने ध्वस्त कर डाला तथा पूरे शहर की जनसख्या को तलवार के घाट उतार दिया।

पूरी एक शताब्दी तक जोशुआ के क्रोध का शिकार हुए इस शहर को जमीन खोद कर निकालने की कोशिश चलती रही लेकिन कुछ नही मिला लेकिन सन् 1952 से 1958 के बीच अग्रेज पुरातत्वशास्त्री डा कैथलीन कीनियन (Kathleen Kenyon) द्वारा टेल एस सुल्तान (Tell es Sultan) नामक जगह पर कुछ ऐसी दीवारे पाइ गइ है, जिनकी आयु ईसा से 7000 वर्ष पूर्व मानी गई है। इतिहास के अनुसार इजराईलियो ने अपना प्रसिद्ध सग्राम 1400 से 1250 ईसा पूर्व लडा था। स्पष्ट है कि जोशुआ ने जिस नगर को धूल-धूसरित किया था वह पहले से ही 5 000 वर्ष पुराना था।



लेपिस्की वीर नगर पुरा पाषाण युग में ऐसा रहा होगा।

जेरिको की खोज के बाद सन् 1961 में एक अन्य ब्रिटिश पुरातत्वशास्त्री ने तुर्की में अनातोलियन (Anatolian) पठार के दक्षिणी सिरे पर ईसा से 6250 वर्ष पूर्व की एक बस्ती खोज निकाली, जिसका नाम कैटल हुयुक है और जिसे एक प्रमुख पुरातात्विक खोज माना जा रहा है।

सन् 1965 में युगोस्लाविया में दानूबे (Danube) नदी के दक्षिणी किनारे पर की गई खुदाई में लेपिस्की वीर नामक शहर खोज लिया गया, जिसकी आयु 5000 ईसा पूर्व आंकी गई है।

पुरातत्वशास्त्री अभी तक इन नई खोजों को (New Stone Age) नव पाषाण युग की संस्कृति के विकास की पूर्वनिर्धारित श्रेणियों में नहीं फिट कर पाए हैं लेकिन अब उनके लिए और भी नई-नई खोजों की संभावनाओं के द्वार खुल गए हैं। विशेष रूप से कैटल हुयुक काफी गम्भीर पुरातात्विक खोजों का केन्द्र बना हुआ है जबकि अभी तक इस शहर का केवल एक छोटा-सा ही हिस्सा बाहर निकाला जा सका है। कैटल हुयुक का एक शहर के रूप में विकास 6250 ईसा पूर्व से 5400 ईसा पूर्व तक हुआ माना गया है। जेरिको के खण्डहरों में केवल कुछ दीवारें तथा कुछ हड्डियां ही मिली थीं लेकिन हुयुक की खुदाई में एक सच्चे शहरी समुदाय तथा सुविकसित अर्थव्यवस्था व गहन धार्मिक व कलात्मक जीवन के प्रमाण मिले हैं।

इसके विपरीत युगोस्लाविया में मिला लेपिस्की वीर नामक शहर नव पाषाण युग का नहीं वरन् पुरा पाषाण युग का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसा लगता है कि इस शहर को बसाने वाले पुरा पाषाण युग के शिकारी तथा मछेरे रहे होंगे। प्रारम्भ में

तम्बु लगा कर रहने तथा बाद मे भवन निर्माण करने की शैली के बीच की सक्रमणकालीन शैली का प्रतीक लगने वाला लेपिस्की वीर यह बताता है कि शहरी संस्कृति न केवल नव पाषाण युग मे मौजूद थी वरन् उससे भी पहले पुरा पाषाण युग म भी उसका अस्तित्व था।

जेरिको, केटल हुयुक तथा लेपिस्की वीर मे से जेरिको सबसे पुराना प्रतीत होता है। अब देखना यह है कि य तीनो शहर अपने चरम उत्कर्षकाल मे कैसे लगते होंगे? इन तीनो शहरो के अलग-अलग विकास के बीच कोइ सम्पर्क सूत्र कायम करना कठिन है। मृत सागर (Dead Sea) के उत्तरी सिरे पर स्थित एक घाटी के एक मरूद्यान (oasis) मे जेरिको शहर की स्थापना हुइ थी। जबकि कैटल हुयुक 3 हजार फुट की उंचाइ पर कारसाम्बा के (Carsamba cay) नदी के किनारे एक गहू के उपजाऊ मैदान के केन्द्र मे स्थित था। लेपिस्की वीर की भौगोलिक स्थिति बाल्कन (Balkan) तथा कार्पेथियन (Carpathian) पहाडियो के बीच दानुबे नदी के करीब घोडे की नाल के आकार की छोटी-सी घाटी मे पाइ गइ है। तीनो शहरो मे एकमात्र जो समान बात पाइ गइ है— वह है पानी की मौजूदगी।

य तीना शहर आकार मे बहुत बडे नही थे। लेपिस्की वीर तो केवल 185 गज लम्बा तथा 55 गज चौडा था। उसमे ज्यादा से ज्यादा 2 सौ से 3 सौ तक लाग रहत थ। जेरिको जिस 'टैल एस सुल्तान' पहाडी पर स्थित था, वह केवल 284 गज लम्बी तथा 175 गज चौडी है। समझा जाता है कि इसा से 7000 वर्ष पूर्व यह शहर 10 एकड मे फैला होगा और इसमे 2 हजार से 3 हजार के बीच लोग रहते होगे।

कैटल हुयुक क आकार के बारे मे अभी कुछ कहना उचित नही हागा क्योंकि अभी तक क्वल 492 गज लम्बा टीला खोद कर इस शहर का एक हिस्सा ही निकाला जा सका ह। सभावना यह है कि इसमे 6000 स 10,000 लोगो की बसावट थी। 5 000 वर्ष पहले के सुमेरियन शहरो की जनसख्या तथा आकार को देखत हुए ये शहर बहुत छोटे प्रतीत होते हैं लेकिन इनके स्थापत्य की विविधता आश्चर्यचकित कर देती हे।

जेरिको के खण्डहरो से पता चलता है कि उस युग क लाग आयताकार घरा को मिट्टी की मुलाई ईंटा द्वारा तथा चूने के प्लास्टर का फर्श व दीवारा पर लगा कर बनात थ। उनके पूर्वज इधर-उधर घूमन वाल घुमक्कड कबील थ। जब ये कबील भटकत-भटकत थक गए होगे, तब उन्होने एक जगह बसने की ठानी होगी और उसी के फलस्वरूप जेरिको की बस्ती का अस्तित्व म आना प्रारम्भ हुआ हागा।

कैटल हुयुक के घरो में दरवाजे नही होते थे परतु घर एक दूसरे से जुडे रहते थे और छत क रास्त से ही उनमे घुसा या उसमे स निकला जा सकता था। आत्मरक्षा का यह तरीका बहुत प्रभावशाली था क्योंकि अपने 2000 वर्ष के इतिहास मे इस नगर को आक्रमणकारी कभी ध्वस्त नही कर पाए। इस शहर मे

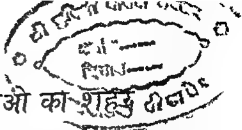
सडक नही थी। लाग छता पर ही चलते-फिरते थे। छता को लकडी की सीढिया स आपम म जोड दिया गया था। आक्रमणकारी के आने पर सीढिया हटायी जा सकती थी। घरा म अधिकाशत दो कमर बनाए जात थे। 20×13 का पहला मुख्य कमरा तथा दूसरा छोटा कमरा भण्डारण के लिए। इन घरा पर हर साल प्लास्टर की नई परत चढाइ जाती थी।

लपिस्की वीर क घर आधुनिक तरीक स अलग-अलग बनाए जान वाल घरा के पवज लगत ह। उनका आकार तम्बुआ जसा था। लकडी की दीवारा पर पशुआ की खाल की छतरी तान कर य घर बनाए गए थ। झापडिया म थाड बहतर लगन वाल इन घरा म चना-पत्थरो तथा बलुआ-पत्थरा का भी प्रयाग किया गया था।

जरिका आर कटल हयक म हम कइ सावजनिक भवन मिलत ह लकिन लपिस्की वीर म कवल एम चार मकान मिलत ह जिन्ह मदिर का नाम भी दिया जा सकता ह। हयक म मिलन वाल शिल्पा स जाहिर ह कि वहा क समाज म महिलाआ का खास स्थान था आर कृषि की प्रधानता थी। मात दवी इस शहर की सर्वोच्च पजनीय दवी थी। इस नगर क लागा का मलरिया निमानिया तथा सधिशाथ जेसी बीमारिया भी हाती थी। लपिस्की वीर क निवासी एक अधिक कठार व आदिम व्यवस्था क अधीन रहत थ। वहा व्यक्ति पूणरूप स समह क अधीन था। कटल हयक म मिलन वाल हथियार आर जवाहरात इस बात का प्रमाण ह कि वहा क निवासिया न एक स्तर की तकनीकी कशलता भी हासिल कर ली थी।

इन तमाम खाजा आर जानकारिया क हासिल हा जान क बाद भी एक रहस्य अभी भी खलना शष ह कि इन प्राचीनतम शहरा आर समरी सभ्यता क महान शहरा क बीच की अवधि म शहरी सभ्यता का विकास कस हुआ था?

• •



# तियुतीहुआकान देवताओं का शहर

*प्राचीन मैक्सिको की धार्मिक राजधानी तियुतीहुआकान की खोज हो जाने के बाद भी कुछ ऐसे प्रश्न अनुत्तरित रह गए हैं, जिनका जवाब प्राप्त किए बिना अमेरिकी इतिहास के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं हो सकती।*

*आखिरकार व्यवस्थित तरीके से डेढ़ लाख लोगों की बसावट वाले इस शहर को कौन-सी सभ्यता ने स्थापित किया था? वह सभ्यता अचानक ही क्यों नष्ट हो गई? तियुतीहुआकान में कौन-सी भाषा बोली जाती थी?*

*तियुतीहुआकान से पहले ओल्मेक सभ्यता विकसित हो चुकी थी। हम ओल्मेकों, माया लोगों तथा इंका सभ्यता के बारे में जितना जानते हैं, उसका शतांश भी तियुतीहुआकान के बारे में नहीं जानते। क्या तियुतीहुआकान की सभ्यता बाहरी आक्रमण से नष्ट हुई थी या प्राकृतिक प्रकोप और अकाल ने देवताओं के इस शहर की बलि ले ली थी?*

1 400 साल पहले जब पश्चिमी योरूप में बर्बर कबीलों का राज्य था, तब अटलांटिक महासागर की दूसरी दिशा में एक ऐसी सभ्यता विद्यमान थी, जिसने 150 000 लोगों को व्यवस्थित रूप से बसा सकने वाले शानदार महानगर *तियुतीहुआकान (Teotihuacan) की स्थापना कर ली थी।*

तियुतीहुआकान मैक्सिको की धार्मिक राजधानी थी। 5वीं ईस्वी में 8 वर्ग मील में फैले हुए इस नगर का अमेरिकी विद्वान थेल्मा सुलीवान (Thelma Sullivan) ने 'देवताओं के शहर' का नाम दिया। तियुतीहुआकान शहर उस समय खण्डहरों में बदल कर जमीन के नीचे दब चुका था, जब अज्टेक (Aztecs) लोगों ने दक्षिण अमेरिका पर अपना कब्जा किया। आज अज्टेकों के बारे में हम काफी कुछ जानते हैं लेकिन एक शताब्दी तक की गई आधुनिक खोजों के बाद भी यह पता नहीं चल पाया कि किन लोगों ने इस शहर की स्थापना की थी और कौन-सी सभ्यता ने इस शहर में रहकर अपना उत्कर्षकाल देखा था? वह सभ्यता अचानक ही नष्ट क्यों हो गई? वहां कौन-सी भाषा बोली जाती थी?

तियुतीहुआकान शहर का 9/10 भाग अभी भी धरती के नीचे दबा हुआ है। जिस 7,500 फुट ऊंचे पठार पर इस शहर का निर्माण किया गया था, वह मैक्सिको की घाटी व प्यूब्ला (Puebla) की घाटी को जोड़ने वाले प्राकृतिक रास्ते पर स्थित है। तियुतीहुआकान के चारों तरफ उपजाऊ घाटी थी, जिसे सोतों और सरिताओं से पानी मिलता रहता था। ज्वालामुखीय वायुमण्डल के कारण ओब्सीडियन



मतकों का रास्ता चद्रमा का पिरामिड और सूर्य का पिरामिड।

(Obsidian) नामक काच काफी मात्रा मे उपलब्ध था जिसके उपकरण बतन तथा हथियार बनाए जा सकते थे। इस पठार मे 100 से 300 की जनसख्या वाले इण्डियनो के ग्राम थे जिन्हाने निश्चित रूप म नगर के निमाण म भाग लिया होगा।

पता चला है कि तियुतीहुआकान स भी पहल अमरिका म ओल्मक (Olmecs) लागो की सभ्यता का अस्तित्व था जो भवन निर्माण कला म दक्षता प्राप्त कर चुके थे। विश्वास किया जाता है कि शहर बसन से पहले वहा बसे हुए आदिवासी ही बाद म विकसित होकर तियुतीहुआकान के निवासी बने लेकिन इस विश्वास स भी तियुतीहुआकान क निवासियो का जातीय स्रोत पता नही चलता है।

जब पहली बार सन 1880 म डिजायर चार्ने (Desire Charnay) नामक फ्रासीसी न इस शहर का एक हिस्सा खोद निकाला तो बहुतो की तरह उसन भी इस एक टोल्टेक (Toltec) शहर माना। बाद के अध्ययनो स साबित हुआ कि टोल्टेक दसवी शताब्दी क दूसर भाग म मोजूद थे। तब तक तियुतीहुआकान पहले ही खण्डहरो म बदल चुका था। इन अध्ययनो की पर्याप्तता पर उस समय प्रश्न चिह्न लग जाता ह जब अज्टेक लाग अपने ग्रथो म यह स्वीकार करत हैं कि शायद तियुतीहुआकान टाल्टेक लागो की राजधानी ही थी क्योंकि टोल्टेक अपनी महान् वास्तुकला क लिए उस युग म सर्वश्रेष्ठ माने जाते थे। अज्टेक भाषा म टाल्टेक शब्द का अथ होता है—महान् शिल्पी।

फ्रेंच मूल क एक मक्सिकन पुरातत्वशास्त्री लौरेट सेजोर्न (Laurette Sejourne) न अज्टक मिथकशास्त्र (Mythology) की नई व्याख्या हाल ही म



पखधारी सर्प देवता मे मंदिर का आधार

प्रस्तुत की हे। उनका कहना हे कि देवताओ के शहर के सस्थापको ने एक नए युग का सूत्रपात भी किया, जिसे आध्यात्मिक शब्दावली मे 'गति क युग'(era of motion) की सज्ञा दी जानी चाहिए। सूर्य का पिरामिड एक एसा ही महान् स्मारक हे, जो तियुतीहुआकान की मुख्य विशेषता है।

कुछ विद्वानो का विचार ह कि तियुतीहुआकान पर पुजारियो की हुकूमत रही हागी, जो मध्य पूर्व खाडी क इलाके से आए होगे लेकिन अभी तक इन तथाकथित शासको क स्रोत क बारे मे विश्वासपूर्वक कुछ नही कहा जा सकता। एक विस्तृत ज्यामितीय पैटन पर निर्मित सम्पूर्ण नगर दो चौडे मार्गो क आस-पास खडा किया गया हे। ये दाना एक एक दूसर को समकोण पर काटत हैं। इन मार्गो को मृतको का रास्ता कहा जाता है क्योकि अज्टेक लोगा ने इन मार्गो के आस-पास के पिरामिड की आकृति के प्लेटफार्मो का मकबरे समझ लिया था लेकिन बाद मे ये प्लेटफार्म मंदिरो का आधार निकले।

सूर्य का पिरामिड एक हजार श्रमिका ने लगातार 50 वर्ष तक परिश्रम करके बनाया होगा। यह पहली शताब्दी ईस्वी मे बन कर तेयार हुआ था। इसम प्रयोग किया गया माल-सामान 10 लाख घन गज स्थान घेरेगा। इससे इस पिरामिड की विशाल भव्यता का अनुमान लगाया जा सकता ह। मृतका के रास्ते के निकट चंद्रमा का पिरामिड था जो छोटा अवश्य हे लेकिन आकृति मे सूर्य के पिरामिड

जसा ही था। रास्ते के अन्य सिर पर क्वट्ज़ट्काट्ल (Quetzatcoatl) अर्थात् परदार सर्प देवता का मंदिर था। दरअसल, यही देवता सर्प और पक्षी का आध्यात्मिक मिश्रण पेश करता है अर्थात् पृथ्वी और स्वर्ग के बीच में सर्प देवता द्वारा सम्पर्क स्थापित करने की भावना पर नगर के स्थापत्य में व्यक्त होती है। सर्प-देवता इस सृष्टि की रचना का तथा आत्मा और पदार्थ का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अलावा नगरवासी इस देवता द्वारा मानव मन की दुहरी प्रकृतियां को भी दर्शाना चाहते थे।

धार्मिक आचार-व्यवहार के अलावा इस बात के भी पूरे सबूत मौजूद हैं कि तियुतीहुआकान उद्योगों से भरा-पूरा नगर था। भवन निर्माण कला में कुशल होने के साथ-साथ तियुतीहआकान के वासी बर्तन बनाने तथा शिल्पकार भी थे। यद्यपि उनके पास पत्थरों के ही औजार थे लेकिन उन्होंने अपने शवों के साथ गाड़ने के लिए जो मुखौटे बनाए थे वे शिल्पकारिता की महान् कृतियां हैं। ये बृहदाकार, प्रभावशाली, अंडाकार आंखों और चौड़े चेहरों वाले मुखौटे बासाल्ट, जेल या ओब्सीडियन इत्यादि पर उकेरे गए हैं। इन चेहरों का शिल्प समय को भी लांघ जाने वाला है क्योंकि मिस्र जैसी विकसित सभ्यता भी इससे अधिक प्रभावशाली मुखौटे बनाने में असफल रही है।

तियुतीहुआकान की सभ्यता कैसे नष्ट हुई होगी इसका अनुमान लगाने के लिए अलग-अलग तर्क दिए जाते रहे हैं। कुछ का कहना है कि भयानक आग लगने से यह नगर खण्डहरों में बदल गया होगा। कुछ का कहना है कि उत्तर दिशा से आए हुए घुमक्कड़ (Nomadic) कबीलों के योद्धाओं के आक्रमणों से यह शहर उजड़ा होगा क्योंकि अपनी प्रकृति और रहन-सहन से तियुतीहुआकान के वासी युद्धप्रिय नहीं थे और उन्होंने बाहरी आक्रमणों से निबटने के लिए कोई तैयारी नहीं की थी।

तियुतीहुआकान में मानव बलि दान की प्रथा भी थी। तियुतीहुआकान के पतन से ही सबक लेकर बाद की मध्य अमरीकी सभ्यताओं में लड़ाकू प्रवृत्तियां उत्पन्न हुई होंगी।

कुछ विद्वानों का कहना है कि इस नगर पर सातवीं शताब्दी में तथा कुछ का कहना है कि इस पर छठवीं शताब्दी में हमला हुआ होगा। यही समय नगर के चरमोत्कर्ष का काल था। स्विट्ज़रलैण्ड के लेखक हेनरी स्टीरलिन (Henri Stierlin) को विश्वास है कि बाहरी हमले के कारण नगरवासी सात सौ मील दक्षिण पूर्व में स्थित 'कामिनालीजूयू कालोनी' (Kaminaljuyu colony) की ओर भाग गए होंगे लेकिन कुल मिलाकर विद्वानों का बहुमत इस बात पर एकमत है कि इस नगर का पतन सातवीं शताब्दी के दौरान ही हुआ। अगर बाहरी हमले से नहीं तो संभवतः वर्ग संघर्ष इस पतन का कारण रहा होगा। एक नए सामंती वर्ग ने पुजारियों के शासक वर्ग की व्यवस्था को नष्ट कर दिया होगा। उन्होंने एक ऐसे शासन की स्थापना कर डाली होगी जो दमन और शोषण पर आधारित होगी।

जाहिर है कि इस तरह की शासन व्यवस्थाए अपने साथ असतोष और विद्रोह लेकर आती हैं। ऐसी स्थिति मे खराब फसले होने के कारण तियुतीहुआकान की जनता को खाद्य की आपूर्ति भी ठीक से नही हुई होगी। एक ओर शासकीय अव्यवस्था तथा दूसरी ओर प्राकृतिक प्रकोप। ये स्थितिया नगर को उजाड देने के लिए पर्याप्त थी।

इन तमाम धारणाआ की अनिश्चितता से स्पष्ट है कि अभी आधुनिक पुरातत्वशास्त्र को कोलम्बस से पहले की अमेरिकी सभ्यताओ के बारे मे कितनी कम जानकारी है। आठवी शताब्दी आते-आते यह शहर आंशिक रूप से ध्वस्त हो चुका था। इसका पुजारी वर्ग समाप्त प्राय तथा निवासियो के धार्मिक विश्वास हिल चुके थे। अधिकाश निवासी शहर छोड कर जा चुके थे।

आज तियुतीहुआकान प्राचीन सभ्यता की खोई हुई स्मृति के रूप मे खडा हुआ है। इस नगर के खण्डहर पुरातत्वशास्त्रियो के लिए चुनौती बने हुए हैं। सूर्य और चद्रमा के पिरामिडो तथा मृतको के रास्ते के बारे मे हम जितना जानते हैं, उससे कही अधिक जानना अभी शेष है। सर्प-देवता के अस्तित्व की कई व्याख्याए की जा चुकी हैं लेकिन अभी अंतिम ठोस परिभाषा आनी शेष है।

आज जो भी देवताओ के शहर के इन भग्नावशेषा को देखता है, उसका मुह आश्चर्य से खुला रह जाता है। आधुनिक सभ्यता तथा शिल्प इत्यादि पर गर्व करने वाले लोग कोलम्बस से भी पहले की इस सभ्यता की खूबियो को देख कर सोचने लगते हैं कि कोन थे वे लोग जिन्होने इस नगर की रचना की? तियुतीहुआकान का रहस्य अभी भी इसी प्रश्न के चारो ओर केन्द्रित है।

• •

# दो रहस्यमय चिकित्सा विधिया

*जादू से भरा हुआ चिकित्सकीय स्पर्श तथा बायोफीडबैक प्रशिक्षण प्रणाली—इन दो रहस्यमय चिकित्सा विधियो ने मेडीकल साइंस के विशेषज्ञों का दिमाग घुमा दिया है।*

*चिकित्सकीय स्पर्श की विधि मे मानसिक ऊर्जा का प्रयोग किया जाता है तथा बायोफीडबैक मे रोगी को अपने शरीर को नियत्रण में लाना सिखाया जाता है। इन दोनो विधियो की प्रेरणा अमेरिकी चिकित्सको को प्राचीन भारतीय ज्ञान से प्राप्त हुई है।*

*वैज्ञानिको द्वारा कई तरह के सदेह व्यक्त किए जाने के बाद भी इन विधियों द्वारा असाध्य रोगो को ठीक किया जा चुका है लेकिन अभी तक इन चिकित्साओं की सम्पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या नहीं हो सकी है।*

अन्य क्षेत्रो की ही भांति चिकित्सा विज्ञान भी एक ऐसा क्षेत्र हे, जिसे आम रहस्या से अछूता नही कहा जा सकता। इस समय मुख्य रूप से दो रहस्यमय चिकित्सा प्रणालिया प्रचलित हैं—मनुष्य के हाथो के स्पर्श और कभी-कभी तो बिना स्पर्श किए रोग दूर करने की क्षमता तथा बायोफीडबैक सिस्टम (biofeedback system)। इन दोनो तरीको से अब तक अनगिनत मरीज ठीक किए जा चुके हैं लकिन ये तरीक आधुनिक रूप से प्रचलित रोग दूर करने की विधियों से दूर-दूर तक कही भी मेल नही खाते। इसीलिए वैज्ञानिक अभी भी चकराए हुए हैं कि इन दो विधियो का कैस परिभाषित किया जाए? पुराने जमाने की झाड-फूक तथा चीनी आक्यूपक्चर (acupuncture) से भी अधिक रहस्यमय इन विधिया का भेद जान लेने का अर्थ होगा आयुर्विज्ञान (Medical Science) के क्षेत्र मे अभूतपूर्व क्राति। और कुछ लोगा के अनुसार यह क्राति अब दरवाजे पर खडी दस्तक दे रही है।

सन् 1971 म न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय मे नर्सिंग की महिला प्रोफेसर डा डोलोरस क्रीगर (Dolores Krieger) ने पूर्वी देशा के धर्मो का अध्ययन करते हुए पाया कि हिंदू धर्म म जिस पदार्थ का 'प्राण' कह कर व्याख्या की गई है वह मनुष्य के रक्त की अत्यत आवश्यक लाल कोशिकाओ हीमोग्लोबिन (haemoglobin) से काफी समानता रखता है। प्राचीन हिंदू साहित्य के अनुसार 'प्राण' ही जीवन का स्तर है। प्राण का अस्तित्व उसी तरह अतर्भूत है, जिस तरह आक्सीजन के एक अणु का। डा क्रीगर ने एजाइम ट्रिप्सिन (enzyme trypsin) पर इलाज के पडने वाले प्रभाव सबधी सिस्टर जुस्ता स्मिथ (Sister Justa Smith) के प्रयोगो से

बायोफीडबैक की चिकित्सा प्रणाली चित्र में डा ग्रीनस्पान स्वयं इस विधि को प्रदर्शित कर रहे हैं।



इस धारणा को सैद्धांतिक रूप से जोड कर देखा और निश्चय किया कि वे भी हीमोग्लोबिन के साथ ऐसे ही प्रयोग करगी। सिस्टर जुस्ता स्मिथ एक अमेरिकी बायोकेमिस्ट थी और एजाइम पर स्पर्श से पडने वाले प्रभावो का अध्ययन कर रही थी।

ऑस्कर एस्टेबेनी (Oskar Estebany) नामक साथी की मदद से क्रीगर ने मेसाचुसेट्स के एक फार्म मे 10 बीमार व 9 स्वस्थ लोगो को जमा किया। 6 दिन तक प्रत्येक बीमार व्यक्ति का एस्टेबेनी द्वारा दिन मे एक या दो बार इलाज किया गया। इसी बीच सभी औषधिया देनी बद कर दी गई तथा स्वस्थ व अस्वस्थ व्यक्तियो को एक ही प्रकार के भोजन व दिनचर्या पर रखा गया। प्रयोगो की शुरूआत व अत मे सभी 19 लोगो का हीमोग्लोबिन स्तर भी लिया गया। परिणामस्वरूप जो लोग बीमार थे, उनके हीमोग्लोबिन स्तर मे उल्लेखनीय परिवर्तन पाया गया।

डा क्रीगर के अनुसार हाथो के स्पर्श से की गई इस चिकित्सा से प्रभावी प्रमाण मिले कि इस प्रक्रिया मे हीमोग्लोबिन प्रभावित होता है और इसका और भी गहरा अध्ययन होना चाहिए।

साइकिक हीलिंग (Psychic Healing) के अन्य प्रयोगो से यह ज्ञात हुआ है कि जब चिकित्सक अपनी मानसिक ऊर्जा को अस्वस्थ व्यक्ति की ओर भेजता है तो 'हीलिंग' प्रारम्भ हो जाती है लेकिन यह ऊर्जा है क्या बला, यह अभी तक प्रमाणित नही हो सका है।



डा ग्रीन कीलों पर समाधि लगाए एक योगी की जांच करते हुए।

आजकल अमेरिका मे नर्सों द्वारा 'थेरेपेटिक टच' (चिकित्सकीय स्पर्श) का चलन काफी बढ़ गया है। 'अमेरिकन जनरल ऑफ नर्सिंग' मे लिखते हुए डा क्रीगर ने कहा है 'मुझे विश्वास हो चुका है कि हाथो के स्पर्श से रोग ठीक करने की प्राकृतिक शक्ति मनुष्य मे है लेकिन इस प्रक्रिया के लिए आवश्यक शर्ते है—चिकित्सक मे रोगी की सहायता करने की इच्छा होना तथा स्वय उसके शरीर का पूर्ण स्वस्थ होना।' क्रीगर ने चिकित्सकीय स्पर्श का पहला प्रयोग स्वय पर किया तथा फिर 32 अन्य नर्सों पर वही प्रयोग किया। यह तय किया गया कि 32 मे से 16 नर्सें अपने मरीजो की देखभाल करते समय उन पर ये प्रयोग करेगी तथा 16 नर्सें नही करगी। परिणाम वही निकला। जिन मरीजो पर प्रयोग किया जा रहा था, उनके हीमोग्लोबिन के स्तर मे परिवर्तन आ गया और जिन पर नही किया जा रहा था उनका हीमोग्लोबिन-स्तर अपरिवर्तित रहा।

सन् 1972 मे कीगर ने सयुक्त राज्य अमेरिका व कनाडा के नर्सिंग स्कूलो मे अपनी इस तकनीक को सिखाना प्रारम्भ किया। कुछ ही दिनो बाद इस तरह की चिकित्सा करने वाली नर्सों का जाल-सा बिछ गया। यद्यपि डाक्टर लोग आज भी इस जादुई स्पर्श के जैवरासायनिक प्रभावो से सहमत नही है तथापि क्रीगर के तरीको से जो लाभ हुए, उनमे से एक यह भी था कि इस चिकित्सा विधि को अपनाने वाली नर्सें अपने मरीजो को सामान्य नर्सों से कही अधिक अच्छी तरह देखभाल करने लगी।

दूसरी प्रणाली 'बायोफीडबैक प्रणाली' मरीजो को अपन शरीर की क्रियाओ का नियत्रण करना सिखाती है। इस प्रणाली के रहस्यमय विश्वास के अनुसार लोग यदि चाहे तो अपने शरीर के तापमान, रक्तचाप, पेशीय सकुचन तथा दिल की धडकनो पर काबू पाकर अपना रोग दूर कर सकते हैं।

डा क्रीगर स्पर्श चिकित्सा की प्रमुख सिद्धातवेत्ता



इस चिकित्सा मे रोगी को अत्यत सवेदनशील मॉनीटरो (monitors) से जोडकर उसके रोग से सबंधित शारीरिक प्रक्रिया के बारे मे कमेण्ट्री सुनाई जाती। रोगी को आदेश दिया जाता कि वह अपने शरीर से जो करवाना चाहता है, उसका मन ही मन चित्र खीचे, अपना रक्तचाप कम करे तथा अपने शरीर को वही काम करने का आदेश दे और फिर अपने आप को ढीला छोड दे। इसके बाद मॉनीटर रोगी को सूचनाए देना प्रारम्भ करते हैं कि उसका रक्तचाप काफी नीचे गिर गया है तथा उसके दिल की धडकन धीमी हो गई है। इस परिवर्तन से रोगियो मे और भी आत्मविश्वास जागता है और वे अपने शरीर के नियत्रण के लिए और भी प्रयास करने लगते हैं।

केसास (Kansas) म स्थित मेनिंगर फाउण्डेशन से बायोफीडबैक तथा मनोभौतिकी की सस्थापिका एलिस ग्रीन (Alice Green) तथा उनके पति डा एल्मर ग्रीन (Dr Elmer Green) इस क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं। उनका कहना है कि यह चिकित्सा व्यक्ति की शक्ति को बढ़ा देती है।

इस चिकित्सा पद्धति की वैज्ञानिकता की अभी भी अमेरिका मे जाच चल रही है। एमरोय (Emroy) विश्वविद्यालय मे इस पद्धति को क्षतिग्रस्त पेशियो को पुन जीवित करने के लिए प्रयोग किया जा चुका है। बर्मिंघम, मिशिगन के व्यवहार विषयक मनोरोग व मनोविज्ञान केन्द्र तथा मैनिंगर क्लिनिक में इसे माइग्रेन के सिरदर्द को दूर करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के सेन फ्रासिस्को मेडीकल सैण्टर के मनोवैज्ञानिक बर्नार्ड एंजिल (Bernard Engle) ने तो कुछ रोगियो को अपने दिल की धडकनों तक पर काबू पाना सिखा दिया है।

एक मनोवैज्ञानिक होने के साथ-साथ कोलिम्बया प्रयागशाला व तनावसबधी रोगो के केन्द्र के निदशक कोलम्बिया के डा कैनेथ ग्रीनस्पान (Dr Kenneth Greenspan) ने बायोफीडबैक से 22 पोस्ट-सर्जीकल कार्डीवास्कुलर (Post surgical cardivascular) मरीजो की तीन माह तक चिकित्सा करके ठीक कर दिया है। इन लगभग अपग मरीजो को यह प्रशिक्षण दिया कि वे कैसे अपने अगो के तापमान को बढ़ाए ताकि उनके अग बीमारी स प्रभावित हिस्सा मे अधिक रक्त भेज सके। इससे उनकी रक्तवाहिनिया काम करने लगी तथा रक्त क थक्को की बाधा दूर हा गई। इसके अलावा उन रागिया म पीडा तथा हृदय गति रुक जाने के डर स जा तनाव था, वह भी दूर हो गया। इस चिकित्सा म ध्यान लगाना (meditation) तथा श्वास का व्यायाम भी शामिल था। सभी रागियों को इससे राहत मिली तथा कुछ ने तो धीर-धीरे दौडना भी प्रारम्भ कर दिया। डा ग्रीनस्पान के अनुसार इस चिकित्सा का उद्द्श्य है—रोगिया को स्वय अपना स्वामी बनाना तथा अपने अदर बैठे हुए डाक्टर की मदद करना। बायोफीडबैक म जिस तरह क आत्मनियत्रण की चर्चा की गइ ह ह भारत के यागियो म पाया जाता रहा है। अमेरिकी बायोफीडबैक का प्रशिक्षण खत्म हाते ही रोगियो म आत्मनियत्रण की क्षमता कम हा जाती है लेकिन भारतीय योगी जब चाहे इस सामथ्य का प्रयोग कर सकते है। आधुनिक यत्रो से बायाफीडबैक को विकसित करन के प्रयास अभी जारी हैं।

चिकित्सकीय स्पर्श हो या बायोफीडबैक प्रणाली—दोना ही परम्परागत विज्ञान द्वारा पूर्ण रूप से विश्लेपित तथा सश्लेपित नही हो पाई हैं। उनके बहुत से परिणाम 'क्या, क्या और कैसे' के पर्दे स ढके हुए हैं। यदि इनका रहस्य खुल सका तो निश्चित रूप से भविष्य मे आयुर्विज्ञान अद्‌भुत ऊचाइयों पर पहच जाएगा।

• •